प्रकाशक
जे. एन. गुप्ता
राजस्थान प्रकाशन
त्रिपोलिया बाजार
जयपुर-२

शिक्षा विभाग, राजस्थान के लिए
शिक्षक दिवस (५ सितम्बर १९७३)
के अवसर पर प्रकाशित

आवरण
करुणा निधान

मुद्रक :
मॉडर्न प्रिन्टर्स
गोधों का रास्ता,
जयपुर-3

वर्ष : १९७३

मूल्य : छह रुपये

प्राक्कथन

अनुक्रम

प्रहसन

गाँव से दूर

वीणा गुप्ता

* * *

पात्र :

बनवारी लाल	: किसी गाँव का एक किसान ।
हीरा	: बनवारी लाल का लड़का ।
सोमू	: हीरा का बचपन का साथी ।
रामी	: हीरा की छोटी बहन ।
पण्डित जी	: गाँव का ढोंगी पण्डित ।

(बनवारी लाल बड़ा खुश है और घर की दहलीज में चारपाई पर बैठा हुक्का गुड़गुड़ा रहा है ।)

बनवारी : रामी....... ओ बेटी रामी ।'

रामी : (अन्दर से ही) हाँ बापू.......

बनवारी : अरी अन्दर से ही हाँ हाँ करती रहेगी या बाहर आकर मेरी बात भी सुनेगी !

रामी : आती हूँ ....

बनवारी : क्या आती हूँ । इतनी देर तो लगा दी । अभी तक नहीं आई । अरी सुन तो.... जाने क्या कर रही है ? इस छोकरी को भी पता नहीं आज क्या हो गया ? कुछ सुनती ही नहीं ।

रामी : (हाथ पोंछते हुए आती है) बोल क्या है ?

बनवारी : क्या बोलूँ, कुछ समझ में नहीं आता ?

रामी : तो मुझे बुलाया क्यों था ? (जाने लगती है)

बनवारी : ओ हो.... मेरी बात तो सुन ले ।

रामी : बोल ना फिर। कहता तो कुछ है नहीं। बस घड़ी-घड़ी आवाज देता रहता है।

बनवारी : अरी कुछ ध्यान भी है तुझे कि आज तेरा भाई अपनी पढ़ाई पूरी करके शहर से आने वाला है।

रामी : हाँ हाँ बापू पूरा ध्यान है। इसी वास्ते तो आज तड़के ही उठी थी। सारे घर में बुहारी-झाड़ी देकर साफ-सुथरा किया है। हीरा के वास्ते दलिया भी बना कर रख दिया है।

बनवारी : पर तूने आने में इतनी देरी क्यों कर दी ?

रामी : तुझे तो बिना बात की जल्दी पड़ी रहती है बापू ! पिछवाड़े की सफाई कर रही थी, और फिर तेरे आवाज देते ही तो आ गई। अब यहाँ आई तो तू कुछ कहता ही नहीं।

बनवारी : अरी हाँ.... मैंने तुझे इस वास्ते बुलाया था कि हीरा के वास्ते मक्खन भी निकाला या नहीं। तुझे मालूम है ना, उसे मक्खन बड़ा अच्छा लगता है।

रामी : हाँ हाँ पता है। इसी वास्ते आज सवेरे ही दही बिलोकर मक्खन निकाल दिया था।
(रामी जाती है)

बनवारी : अरी रामी.... ... सुन तो।

रामी : (आते हुए) बोल अब क्या हुआ ?

बनवारी : मैं कह रहा था.....................

रामी : (बीच में ही टोकते हुए) कुछ कहता तो है नहीं.... बस मैं कह रहा था करता रहेगा।

बनवारी : तू कुछ कहने दे तो कहूँ ना। बीच में तो खुद बोल पड़ती है।

रामी : अच्छा अब बीच में नहीं बोलूँगी। पर जो कहना है एक ही बार में कह दे। फिर घड़ी-घड़ी आवाज मत देना।

बनवारी : ओ हो.... तेरी चिड़चिड़ में तो मैं भूल ही गया किस वास्ते आवाज दी थी।

रामी : अच्छा तो मैं जाती हूँ तू याद करता रह। जब याद आ जाए तो बुला लेना।

बनवारी : अरे ठहर तो.......हाँ याद आया वो हीरा के वास्ते छा तो रख दी है ना ?

रामी : ले तो तूने छा के वास्ते ही इतना गदर मचा रखा था। लोटा पहड़ निकला चुड़िया। अरे बापू मैं कोई आज तो इस घर में आई नहीं जो यह भी न पता हो कि हीरा क्या खाता है, क्या पीता है, क्या उसे पसन्द है और क्या नापसन्द है। तू किसी बात का फिक्र मत कर। मैंने मक्खन निकालते ही एक लोटा गाढ़ी छा का उसके लिए पहले ही भर कर रख दिया है।

बनवारी : ठीक है, पर इतना लम्बा-चौड़ा लेक्चर देने की कौनसी जरूरत पड़ गई थी ?

रामी : लो अब बात भी बताओ तो तुझे लेक्चर लगता है। अच्छा अब मैं जाऊँ ?

बनवारी : हाँ जा।····पर देख थोड़ा तम्बाखू देती जा।

रामी : देना बापू·······अब जो कुछ भी माँगना है, माँग ले फिर पड़ी-पड़ी आवाज देगा तो नहीं आऊँगी।

बनवारी : और कुछ नहीं माँगना। हाँ एक लोटा पानी जरूर रख जा। नहीं तो कहेगी फिर आवाज देना है (हँसने लगता है।)

रामी : धो ····बापू·······

बनवारी : (हँसते हुए) इस छोकरी को भी आज कितनी खुशी है ? पागल हुई जा रही है। क्यों न हो ? आखिर इसका भाई जो पढ़ाई पूरी

वाली है। मैं तो स्टेशन पर ही जा रहा था। सोचा तुझे बताता जाऊँ।

बनवारी : हाँ हाँ वो तो पता ही होना चाहिये। अरे तुझे नहीं पता होगा तो किसे पता होगा ? बचपन के दोस्त जो हो तुम। याद है, दोनों मेरे कन्धों पर बैठकर स्कूल जाया करते थे तुम ?

सोमू : हाँ काका सब याद है। तेरे कन्धों पर बैठकर भैंसें चराने भी जाया करते थे। यह तो किस्मत की बात है कि चार साल से मैं और हीरा साथ नहीं रहे वरना कोई दिन गुजरता था बिना मिले ? चलो खैर अब तो साथ ही रहेगा।

बनवारी : हाँ हाँ अब तो तुम फिर से साथ ही रहोगे बेटा। फिर वही दिन होंगे। फिर भैंसे चराने जाना और खूब मन लगाकर खेती करना और अब तो हीरा खेती की पढ़ाई भी करके आ रहा है। पटवारी जी कहते थे–खेती की पढ़ाई करने से फसल दुगुनी होगी।

सोमू : हाँ काका जरूर होगी। अच्छा अब मैं स्टेशन पर जाऊँ ?

बनवारी : जा बेटा जा। जल्दी से उसे लेकर आ और हाँ आते वक्त उस कालिये के तांगे में ही आना। सरपट दौड़ा आयेगा।

सोमू : अच्छा अच्छा, उसी के तांगे में आयेंगे। (सोमू जाता है और बनवारीलाल हुक्का गुड़गुड़ाने लगता है।)

बनवारी : यह सोमू भी एक ही लड़का है सारे गांव में। हर किसी का दोस्त है। दुश्मनी तो इसने सीखी ही नहीं।

पण्डित : (प्रवेश करके) हरे राम हरे राम····किसकी दुश्मनी, कैसी दुश्मनी, कौनसी दुश्मनी, यह क्या दुश्मनी की बात कर रहा है बनवारी ? तेरा बेटा शहर से आने वाला है। आज तो तुझे खुश होना चाहिये।

बनवारी : आओ पण्डित जी आओ····बैठो। कहो कैसे आना हुआ आज गरीब के घर ?

पण्डित : हरे राम····हरे राम····तू और गरीब। मैं कहता हूँ बनवारी अगर तू भी गरीब है तो दुनियाँ में साहूकार है ही नहीं कोई।

बनवारी : क्यों मजाक करते हो पण्डित जी। मैं भला कहाँ का साहूकार आ गया। ले दे के एक जमीन का टुकड़ा पड़ा है। बस किसी तरह

गुजर हो जाती है आपके प्रताप से। नहीं तो कौन किसको पूछता है आजकल ! मेरे जैसे तो कीड़े मकौड़ों की गिनती में आते हैं।

पण्डित : हरे राम ......हरे राम .... कैसी बात करता है बनवारी। अरे तू अपनी जमीन को एक जमीन का टुकड़ा कह रहा है। मैं कहता हूँ बनवारी तेरी जमीन तो चाँदी उगलती है चाँदी। और अब तो तेरा बेटा खेती की पढ़ाई भी करके आ रहा है। जब पढ़ाई किया हुआ बेटा खेती करेगा तो तेरी जमीन चाँदी की जगह सोना उगला करेगी सोना !

बनवारी : हाँ पण्डित जी। इसी आस पर तो जी रहा था कि एक दिन हीरा पढ़-लिखकर आयेगा और यहाँ मेरे खेतों को सम्भाल लेगा। फिर वो जाने और उसका काम। मैं तो बस फिर राम का नाम लूँगा।

पण्डित : हाँ बनवारी अब तो तू आराम ही करना। बहुत कर दिया बेटे के वास्ते तो तूने गाँव भर में धूम मची हुई है तेरे नाम की। जितना तूने अपने हीरा को पढ़ाया है उतना तो अपने बेटे को सारे गाँव में किसी ने नहीं पढ़ाया है।

(तभी सोमू एक बिस्तर सिर पर उठाये आता है।)

सोमू : ले काका। अब मुँह मीठा करवा दे तेरे बेटे को ले आया हूँ।

बनवारी : (खुशी से) क्या ... क्या कहा हीरा आ गया ? मेरा बेटा आ गया। कहाँ है ? कहाँ है रे वो ?

हीरा : (ट्रंक हाथ में उठाये प्रवेश करता है) हां बापू मैं आ गया हूं। (पण्डित जी से) पण्डित जी राम राम।

पण्डित : जीते रहो बेटा। कहो पढ़ाई-लिखाई हो गई पूरी या अब भी कुछ

वास्ते लस्सी ला। और हाँ वो ढेर सारा मक्खन भी डालकर लाना उसमें।

रामी : (आते हुए खुशी से) क्या भैया......भैया आ गया तू। कितने दिन लगा दिये तूने !

हीरा : (रामी के सिर पर हाथ फेरते हुए) अरे पगली, मैं कोई सैर करने तो गया नहीं था। पढ़ाई कर रहा था। पता है खेती की पढ़ाई कितनी मुश्किल है ?

बनवारी : अरी तू यहाँ खड़ी गप्पें ही मारती रहेगी या इसको कुछ खाने-पीने को भी लाकर देगी।

रामी : (चिढ़कर) ला तो रही हूँ बापू ! तू तो बेकार में शोर मचाता रहता है।

बनवारी : हाँ-हाँ मेरा तो दिमाग खराब हो गया है जो शोर मचाता रहता हूँ।

हीरा : अरे-अरे तुम लोग क्यों झगड़ा करते हो ? बापू मैं सब कुछ खा-पी लूँगा। तू बिलकुल भी फिक्र मत कर।

(रामी अन्दर चली जाती है।)

बनवारी : अब मुझे काहे की फिक्र करना है। अब तो आ गया है ना। बस सम्भाल अपने खेत-खलिहान। फिर तू जाने और तेरा काम।

हीरा : क्या कहा ? खेत-खलिहान ?

बनवारी : क्यों ? उचक कर क्यों बोल रहा है ? मैंने कोई बुरी बात कह दी क्या ? अब तू खेत नहीं सम्भालेगा तो क्या मैं बूढ़ा ही सारी उम्र वहाँ पड़ा रहूँगा ?

हीरा : नहीं बापू यह बात नहीं है।

बनवारी : फिर क्या बात है ?

हीरा : बापू मैंने इतनी पढ़ाई की है तो यहाँ खेतों में क्या करूँगा ? आखिर पढ़ने का फायदा ही क्या होगा, यहाँ मैं शहर में कोई अच्छी सी नौकरी कर लूँगा।

बनवारी : क्या कहा......यहाँ क्या करेगा ? यहाँ क्या फायदा ? अरे मैं पूछता हूँ, तुझे यहाँ फायदा ही नजर नहीं आता क्या ? मैंने तो सुना है खेती के बारे में पढ़-लिखकर लोग खेतों में काम करें तो फसल अच्छी होती है। इसीलिए तो तुझे शहर पढ़ने भेजा था।

हीरा : वो बात तो ठीक है बापू । पर यहाँ मेरा दिल नहीं लगेगा ।

सोमू : (प्रवेश करके) अरे कौन कहता है यहाँ तेरा दिल नहीं लगेगा ? भूल गया पहले कभी शहर जाना पड़ता था तो घण्टों रोता था । अब कहता है यहाँ तेरा दिल नहीं लगेगा ।

हीरा : तब की बात और थी सोमू अबकी बात और है ।

सोमू : अरे हाँ जानता हूँ तब क्या बात थी और अब क्या बात है । यह क्यों नहीं कहता अब गाँव में रहकर काम-धाम नहीं होता । मेहनत से डर लगने लगा है ।

बनवारी : हम यहाँ तेरे ऊपर क्या-क्या आस लगाये बैठे थे बेटा । पर तूने तो सब पर पानी फेर दिया ।

हीरा : तुम लोग मेरी बात समझने की कोशिश तो करो । आखिर यहाँ रहकर मैं करूँगा भी क्या ?

सोमू : देख हीरा तेरे जितना पढ़ा-लिखा तो नहीं हूँ । पर इतनी बात जरूर जानता हूँ कि तेरे जाने से काका और रामी के दिल जरूर टूट जायेंगे । भले हो तुझे खुशी होती हो । अगर तू अपनी खुशी की खातिर अपने बापू और छोटी बहन के दिल तोड़ सकता है तो अभी चला जा । चल मैं खुद तेरा सामान गाड़ी पर लेकर चलता हूँ ।

बनवारी : नहीं बेटा नहीं । ऐसा गजब मत करना । मैं बूढ़ा तो बिन मौत ही मर जाऊँगा । इसी सहारे तो अब तक जिन्दा रहा कि आकर अपना काम देखेगा और कुछ दिन आराम कर सकूँगा ।

हीरा : पर बापू मेरा अब रहना मुश्किल है । मैं यहाँ गाँव में नहीं रह सकता ।

सोमू : वाह रे जमाना । और पढ़ाओ काका इसको । तू तो बेटे को खेती की पढ़ाई करवा कर फसल अच्छी करना चाहता था ना । देख कैसी अच्छी फसल हो गई ।

बनवारी : हाँ बेटा ! अब अपनी किस्मत ही खोटी हो तो किससे कहूँ ?

सोमू : अच्छा हीरा जा तू शहर में ही जाकर रह । पर जाने से पहले मुझे एक बात का जवाब देता जाना कि गांव का हर लड़का तेरी तरह पढ़-लिखकर अपने खेतों को छोड़कर शहर में जा बसे

तो क्या होगा। कौन खेतों में हल चलायेगा, कौन पानी देगा और कौन अनाज पैदा करेगा ? फिर इस दुनिया का क्या होगा ?

हीरा : सोमू ......

सोमू : पहले मेरी बात पूरी होने दे फिर बोलना जो भी बोलना चाहे। हाँ जब अनाज ही नहीं होगा तो दुनिया वाले खायेंगे क्या ? बस इतनी बात का जवाब दे दे और फिर जो करना चाहे बड़ी खुशी से कर।

हीरा : (आश्चर्य से) अरे सोमू ! तू इतना समझदार हो गया। मैं तो पढ़-लिख कर भी आज तक इतनी बड़ी बात नहीं कर पाया।

सोमू : तेरे जैसे जाने कितने ही गाँव वाले इसी तरह भटक जाते हैं, हीरा। अब भी कुछ नही बिगड़ा। तूने इतनी पढ़ाई की तो उसका फायदा क्यों नही उठाता। तू अपने खेतों में अपनी पढ़ाई को लगा दे। जो कुछ सीखा है उसको काम में ला और फिर देखना तेरी फसल कितनी अच्छी होती है।

हीरा : सच सोमू आज तो मैं भटक गया था। तूने मेरी आँखें खोल दीं। मुझे माफ करदे बापू। शहर की चमक-दमक को देखकर मैं तो भूल ही गया था कि मैं एक किसान का बेटा हूँ और मेरा काम तो धरती माँ की सेवा करके उससे अनाज लेना है।

बनवारी : (खुशी से) सच....सच बेटा अब तू हमारे पास ही रहेगा ?

हीरा : हाँ बापू सच। मै यहीं रहूँगा और अपने खेतों की रखवाली करूँगा।

बनवारी : अरी रामी कहाँ....चली गई। ला....जल्दी से कुछ खाने को ला।

सोमू : चलो वक्त रहते तेरा दिमाग तो ठिकाने आ गया। अब जो कुछ तूने-सीखा है, वह मुझे भी सिखा देना।

हीरा : अरे मेरा सीखा सिखाया तो सब बेकार है। आज से तो तू मेरा गुरु है।

रामी : (आकर) फिर गुरु-दक्षिणा भी देनी पड़ेगी भैया।

(सभी हँसते हैं)

और तूफान थम गया

नरेन्द्र चतुर्वेदी

* * *

पात्र परिचय

श्री शुक्ला	:		प्रौढ़ दम्पत्ति
श्रीमती शुक्ला	:		
संजय	:	आयु लगभग 16 वर्ष	श्री शुक्ला के पुत्र एवं पुत्री
आशा	:	आयु लगभग 15 वर्ष	
सोहन	:	आयु लगभग 14 वर्ष	घर का काम करने वाला नौकर

(राजू, राकेश, गौरव : संजय के मित्र)

स्थान :

श्री शुक्ला की बैठक—बीच में सोफा रखा हुआ है। सामने दीवार पर महात्मा गांधी की तस्वीर लटक रही है। उधर ही दरवाजा है, जो अन्दर खुलता है, उस पर परदा टंगा हुआ है। दायीं ओर दायीं तरफ भी दरवाजे हैं, इन पर भी परदे टंगे हुए हैं। कोने में गोल मेज रखी है, जिस पर टेलीफोन रखा हुआ है, सोफे के साथ में छोटी टेबिल है, उस पर चाय के गन्दे प्याले रखे हुए हैं। ....टेलीफोन की घन्टी बजती है।

(पर्दा खुलता है)

(अन्दर का पर्दा हटाते हुए संजय का प्रवेश)

राजू : नहीं भाई (कन्धे पर हाथ रखता है) तुम भी क्या सोच बैठे,.... भाई, हमने सोचा आज तुम्हारा कहीं खास प्रोग्राम हो,........कहीं जाना हो। हमारा क्या हम तो मनमौजी हैं, इसलिए तो आये हैं, बताओ चल रहे हो न ठीक ग्यारह बजे मुदित के यहाँ आ जाना, साइकिलों पर चलेंगे।

मुदित : याद रहेगा न, ठीक ग्यारह बजे,....मेरे यहाँ, ...सब वहीं पर ही इकट्ठे हो रहे हैं। . अच्छा चलें, औरों से भी कहना है.... अच्छा, बॉय।

(सब जाते हैं)

संजय : (स्वगत) हूँ, अच्छी बात है।....दोस्त भी आते हैं, मुझसे दूर रह कर बात करना पसन्द करते हैं,....क्यों नहीं वे मुझ पर अधिकार रखकर कुछ कहते हैं, ...ऐसा क्यों है सब मुझसे दूर ही दूर रहते हैं ......क्यों नहीं कोई आकर कन्धे पर धौल लगाकर गले मिलता है,........चिकोटी काटता है, . ओह, .. सजय से सब दूर क्यों रहते हैं ? (सिर पकड़ता है)

(आशा का प्रवेश बस्ता लिये)

आशा : अरे, सजय भइया,....यह क्या हो रहा है (बस्ता रखती है)... आप इतने परेशान हैं, क्या ममी ने कुछ कह दिया है, . या पापा ने........

संजय : (बीच में टोकते हुए)....आज तुम जल्दी आ गई ?

आशा : आज डिबेट थी, जल्दी ही खतम हो गई, ...हाँ, तुम्हारी तबियत तो ठीक है ?

संजय : तबियत तो ठीक है,... न किसी ने कुछ किया है, और न कहा ही है, पर बहुत कुछ हो गया है...वर्मा अकल का फोन आया था,.... पूछ रहे थे, पापा हैं, आज शायद फिर पार्टी हो ?

आशा : (चौंकते हुए) क्या पार्टी, . हर पार्टी में हमारी आफत आ जाती हैं .. मम्मी आयीं या नहीं ?

संजय : अभी तो नहीं आयीं, आने ही वाली होंगी ? अभी राजू, मुदित, गौरव आये थे। आज राजू के फार्म पर पिकनिक है मुझे बुलाने आये थे।

आशा : तो आप जा रहे हैं ?

संजय : (चौंककर) क्या कहा आप ? आशा, क्या तुम्हारी निगाह में भी पराया हूँ ?

आशा : सॉरी, तो तुम जा रहे हो ?

संजय : अभी सोचा नहीं, जाने की इच्छा है, पापा-मम्मी आ जावें तो उनसे पूछ कर जाऊँगा। अभी तो कोई यहाँ है नहीं, तुम स्कूल गये तभी....मम्मी कालेज चली गयीं थीं और पापा भी कार लेकर निकल गये हैं।....(कुछ सोचता है)

आशा : फिर कुछ सोच रहे हो भइया, तुम्हारी यह आदत कब जाएगी ?... क्या बात है ?

संजय : बात क्या होगी, क्या तुम्हें लगता है हम सचमुच घर में रह रहे हैं ?

आशा : घर नहीं है तो क्या है यह भइया।

संजय : (तेज स्वर मे) घर,...चिड़ियाघर,....जहाँ हम पिंजड़े के पन्छी.... हैं, इससे बढ़कर हमारा अस्तित्व नहीं है.. न हमें कोई चाहता है...न हम किसी को चाहते हैं,....पापा-ममी सब अपनी-अपनी दुनियां में खोये हुए हैं, हमसे किसी को कोई मतलब नहीं है.... ममी को यही चिन्ता है संजय पढ़ा है या नहीं,...है आशा स्कूल ...गयी या नहीं, ...और इससे भी अधिक है वह हमें मिला या नहीं....किसी को कोई चिन्ता नहीं है ?

आशा : (विस्मय से) क्या नहीं मिला हमें, सब तो हमारे पास है, बंगला है, फ्रिज है, कूलर है, कार है, भैया हमें देखकर लोग जलते हैं, मेरी सहेलियाँ कुढ़ती हैं मेरे कुरतों को देखकर, उनकी कढ़ाई देख कर, क्या नहीं है हमारे पास ?

संजय : यही तो मैं कह रहा हूँ, बाहर सब हमें देखकर कुढ़ते हैं। भीतर हम कुढ़ते हैं। न हम प्यार कर पाते हैं, न हमें कोई अपनापन दे पाता है, क्या आशा यह सच नहीं है, हमें कोई भी अपना नहीं समझता है।

आशा : भैया, क्या तुम यह ठीक कह रहे हो ? पापा हैं, ममी हैं, क्या ये अपने नहीं हैं ममी जिसके लिए इतनी सुबह नौकरी करने जाती हैं, पापा किस लिये रात-दिन मारे-मारे फिरते हैं ?........

संजय : (बीच में टोकते हुए) अपने लिए आशा, अपने लिए, कोई किसी के लिए नहीं जीता, कभी वे दो घड़ी हमारे पास नहीं बैठते हैं ? उन्हें फुरसत नहीं है। ममी की तनखा कितनी है, उनकी साड़ियाँ, मेकअप, पार्टियाँ ....कितना उनका है....और कितना हमारे लिये है....सारे दिन कितना वो अपने लिए जीती हैं, कितना हमारे लिये..........

आशा : भैया चुप करो,.......प्लीज भैया, आज तुम्हें क्या हो गया है ? पापा सुन लेंगे तो,......... ...

संजय : तो क्या, जितनी पापा की कमाई है वह तो पैट्रोल के खर्चे और सिगरेट, शराब, पार्टियों में ही निकल जाती है। तुम्हें यह सब अच्छा लगता है ?

आशा : भैया, बस चुप करो,........

संजय : (बीच में टोकते हुए) नहीं आशा, मुझे बोल लेने दो। मेरे दोस्त मुझसे ईर्ष्या नहीं रखते, वरन् नफरत करते हैं। बाहर जाता हूँ, लोग अजीब से इशारे करते हैं। मेरी नस-नस में आग लग जाती है। मैं बर्दाश्त नहीं कर पाता हूँ। आशा, सच हम चिड़ियाघर में नहीं रह रहे हैं। हमारा यह जिस्म, यह खून,.... ये कपड़े, ये हमारी किताबें, आशा पापा-ममी की कमाई की नहीं हैं, लोग कहते हैं, हमारे पापा कफन तक नहीं छोड़ सकते.... इन इशारों में इन गन्दी गालियों में कब तक हम आजाद घूम सकते हैं, अपने-आपको भीतर से खतम कर दें तब जरूर,.... पर संजय के लिये यह मुश्किल है।

आशा : उफ ! (सर पकड़ कर बैठ जाती है)........ भैया चुप करो, (उसके ओठों पर अपना हाथ रख देती है)। यह क्या हो गया है तुमको ? आखिर तुम चाहते क्या हो ? क्या हम कंगालों की तरह सड़कों पर भीख माँगते फिरें, क्या तुम खुश नहीं हो इन सबसे.... आखिर यह सब हमारे लिये ही तो हो रहा है। .... पापा जब सुनेंगे तब उन्हें क्या अच्छा लगेगा ?

संजय : (तेजी से) क्या कभी उन्होंने सोचा है कि हमें क्या अच्छा लगता है ? मुझे इन सबसे चिढ़ हो गई है। मैं अब नहीं रह सकता इस

घर में । .... ये दीवारें .. लगता है एक दिन मुझे जला कर राख कर देंगी ? .... मैं अब मुक्त होना चाहता हूँ, पंख फैला कर हवा में उड़ना चाहता हूँ.... ।

ट्रिन ...ट्रिन ...ट्रिन....ट्रिन (टेलीफोन की घन्टी बजती है)

संजय . कौन मम्मी, क्या आप देर से आयेंगी, पार्टी है, मम्मी आज राजू के फार्म पर पिकनिक है, सब जा रहे हैं, मैं भी जाना चाहता हूँ, नहीं क्यों ....वे लोग अच्छे नहीं हैं ? . आपको उनके साथ मेरा रहना पसन्द नहीं है ....मम्मी प्लीज .... हूँ, फोन रख दिया ....।

(फोन रख देता है)

आशा : क्या हुआ मम्मी ने मना कर दिया ?

संजय : हूँ, अब संजय जरूर जायगा, मैं अब तैयार होता हूँ ।

(अन्दर वाले दरवाजे की तरफ जाता है)

आशा : भइया, खाना ।

संजय : (जाते हुए) तुम खा लेना ।

आशा : मम्मी नाराज होंगी ।

संजय : (तेज स्वर में) होने दो ।

(अन्दर जाता है)

(दायीं तरफ वाले दरवाजे से श्री शुक्ला का आगमन)

शुक्ला : संजय, संजय, कहां गया ? .... (सिगरेट सुलगाता है, सोफे पर बैठता है)

(आशा का अन्दर से आना)

शुक्ला : अरे संजय कहां है ?

आशा : अन्दर है, तैयार हो रहे हैं, आज राजू के फार्म पर पिकनिक है, वहाँ जा रहे हैं ।

शुक्ला : उन गधों के साथ, कितनी बार कहा है, गवारों की सोहबत अच्छी नहीं होती । .... अब इसको हॉस्टल मे भेजना ही होगा । बुलाना उसको, ... हूँ, वर्मा का फोन तो नहीं आया था ?

आशा : संजय ने रिसीव किया था। ....आपसे मिलने के लिये कहा है।

(शुक्ला उठता है, टेलाफोन क पास तक आता है)

शुक्ला : हलो, सेवन-थ्री-टू, वर्मा क्या हाल है,....हाँ तुम्हारा फोन आया था, क्या सौदा पट गया है, ... मुबारक हो .... कितना रहा.... दस परसेन्ट .... यह कम है यार .... थोड़ा और बढ़वाओ वरना सिंह कौनसा बुरा है जो बारह तो वह भी दे रहा है....। हूँ, तो फिर आ रहे हो, शाम को .... हाँ, स्कॉच है, इम्पोर्टेड है, ... फिर आ रहे हो, शाम को.... जरूर इन्तजार रहेगा।

(फोन रखता है)

शुक्ला : तुम्हारी ममी नहीं आईं।

आशा : ममी का फोन आया था, वहाँ रुक गई हैं, आज वहाँ कोई पार्टी है, देर से आएँगी।

(संजय का प्रवेश)

शुक्ला : (उसे देखता है) (संजय सफेद पाजामा व कुरता पाँव में चप्पल डाले खड़ा है) यह क्या फकीरों का बाना बना रखा है, एं ! तुम कहाँ जा रहे हो ? ड्राइवर से कह दो वह तुम्हें वर्मा के यहाँ छोड़ आवेगा। सुनो सुनील, मीनाक्षी से मिल आओ। आशा को भी ले जाओ। वो लोग कब से बुला रहे हैं।

आशा : नहीं पापा नहीं, मैं नहीं जाऊँगी।

शुक्ला : क्यों ?

(आशा चुप रह जाती है)

शुक्ला : तुम जानते हो, ... यह सब मुझे पसन्द नहीं है, ... जैसा कह दिया है, वैसा करो। सोहन,.... सोहन।

(सोहन का प्रवेश)

शुक्ला : ड्राइवर से कहो वो कहीं जाए नहीं, संजय, आशा को वर्मा साहब के यहाँ जाना है।

संजय : पर पापा मुझे राजू के फार्म पर जाना है, मैंने उससे कह दिया है,

शुक्ला : और जो मैंने कहा है ?

संजय : उनके यहां फिर हो आयेंगे।

शुक्ला : अभी क्यों नहीं ? तुम गंवारों के साथ रहना पसन्द करते हो, जो हमें पसन्द नहीं है।

संजय : लेकिन पापा।.......

शुक्ला : (बीच में टोकते हुए) चुप रहो, ...बदतमीज,....गेट आउट....,
(संजय दायी तरफ वाले दरवाजे की ओर बढ़ता है)

शुक्ला : कहां जा रहे हो ?
(संजय फिर आगे बढ़ता है)

शुक्ला : उन गंवारों के साथ घूमने जा रहे हो...चलो अन्दर बैठकर पढ़ो।
(संजय फिर भी आगे बढ़ता है)

शुक्ला : मैं,....मैं कह रहा हूँ, संजय, मत जाओ, (क्रोध में कांपता है) अच्छा नहीं होगा।
(आशा आगे बढ़कर उसका हाथ पकड़ती है)
(संजय हाथ छिटका कर बाहर जाना चाहता है)

शुक्ला : संजय (तेजी से बढ़ता है, दायें हाथ का थप्पड़ संजय के लगता है)

संजय : मार लीजिए........और मार लीजिए, मैं फिर भी जाऊँगा। (रोता है)
(बायीं तरफ वाले दरवाजे से श्रीमती शुक्ला का प्रवेश)

श्रीमती शुक्ला : अरे, यह क्या हो रहा है, (शुक्ला की तरफ देखते हुए) क्योंजी क्या फिर बदतमीजी की है ?

शुक्ला : मना करते हुए भी जा रहा है उन कमीनों के साथ, कहता है जाऊँगा, इसकी यह हिम्मत. टांग तोड़ दूँगा, समझता क्या है, चल अन्दर ?

श्रीमती शुक्ला : (चौंकते हुए) जब मैंने मना कर दिया था, तुम फिर चल दिये संजय,.... ...यह तो ठीक नहीं है,....... पापा से भी बदतमीजी दे रहे हो ....।

संजय : (रोते हुए तेज स्वर में) जाऊँगा,....जाऊँगा....सौ बार जाऊँगा... देखता हूँ कौन रोकता है ? (वह तेजी से चलता है)

आशा : भैया, मान जाओ।

शुक्ला : छोड़ दे इसको, जाने दे, देखें कहाँ जाता है, आज इसकी टाँग तोड़ दूँगा ।

श्रीमती शुक्ला : संजय बेटा, मान जाओ, जिद नहीं करते ?....यू आर ए गुड बॉय..।

संजय : कौन कहता है मैं अच्छा हूँ, अच्छे हैं....आप, ...मैं तो बुरा हूँ,.... नहीं रहूँगा अब यहाँ,...आप अच्छे हैं,....वर्मा अंकल अच्छे हैं,.... सिंह... साहब भी अच्छे हैं, सब अच्छे हैं । अब नहीं लाऊँगा सोडा आपके लिए....यहाँ कौन है मेरा ? ममी-पापा रात दिन घर से बाहर रहते हैं, दोस्तों से मिल नहीं सकते, वे गँवार हैं । जिनसे आप चाहें उन्हीं से मिलें । वर्मा अंकल कितने अच्छे हैं,....क्यों ममी, जब उन्होंने उस रात आपके कन्धे में हाथ रखा था तब आप ही ने कहा था, कि इस नीच को घर में कभी नहीं आने देंगी । याद है ? बाहर जाता हूँ सब मुझसे नफरत करते हैं, घर में आपके लिए बोझ हूँ । आपके घूमने-फिरने में हम तकलीफ देते हैं । कभी आपने सोचा भी है कि हम....भी कुछ चाहते हैं ।....मैं जा रहा हूँ, कभी, कभी नहीं आऊँगा, मैं नीच हूँ....गंवार हूँ....मैं कभी आपको अपना मुँह भी नहीं दिखाऊंगा ।

(दरवाजे की तरफ बढ़ता है)

आशा : भैया ठहरो, ...मैं भी तुम्हारे साथ चलती हूँ । मेरा भी यहां दम घुट रहा है । जहां तुम रहोगे, वहीं पर हां मैं भी रहूँगी ।

(ममी पापा की तरफ देखती है)

श्रीमती शुक्ला : आशा, संजय यह सब क्या हो रहा है ? तुम देख रहे हो ? (शुक्ला की तरफ देखकर) यह सब क्या हो रहा है ? क्या इसी दिन के लिए हमने सोचा था ? हम अपनी खातिर जिन्दा हैं, यह

शुक्ला : ऐं. (चौंककर) ...अच्छा तुम जा रहे हो? जाओ. दुनिया देखी है, देखता हूँ. कहां जाते हो? लौटकर आओगे तो घर के दरवाजे बन्द मिलेंगे, समझे!

श्रीमती शुक्ला यह आप क्या कह रहे हैं? संजय, माला रुको, मेरी बात सुनो (वह बढ़कर दरवाजे की तरफ बढ़ती है) मेरी बात तो सुनो......

[नेपथ्य में–

समवेत स्वर : नहीं ममी. नहीं जब पापा ने घर से निकाल दिया है तब हम घर में कैसे आ सकते हैं?

श्रीमती शुक्ला : बेटे बात सुनो....ऐसा नहीं करते....पापा अभी नाराज हैं, तो चलो मैं भी तुम्हारे साथ चलती हूँ।

समवेत स्वर : ममी आप?

श्रीमती शुक्ला : हां जब तुम नहीं मानते, तो मैं भी तुम्हारे साथ चलती हूँ, जहां तुम ले चलोगे, वहां मैं भी तुम्हारे साथ चलूँगी।...चलो।]

शुक्ला : ओह, यह सब क्या हो रहा है नहीं ऐसा नहीं होगा। यह मेरी ज्यादती है। मैंने कभी अपने बच्चों की निगाह से नहीं सोचा।.... वर्मा का उस दिन का बिहेवियर,....बच्चे नाराज है ...इतने कि अब मुझसे भी नाराज हो गये हैं, तो मैं क्या करूं? (सर पकड़ता है) तो मैं बच्चों के सामने झुक जाऊं,....नहीं कभी नहीं,... (घूमता है). नहीं शुक्ला नहीं, तुम्हारा अहंकार तुम्हारे परिवार को तहस-नहस कर देगा. ...रोको ...अभी समय है (सर पकड़कर बैठ जाता है) सोहन,...सोहन....

(सोहन का प्रवेश)

सोहन : साहब!

शुक्ला : मालकिन हैं, देख किधर गई?

(सोहन बाजार जाता है और क्षण भर बाद अन्दर आता है)

सोहन : जी, वो बाहर के लॉन में है।

शुक्ला : उन्हें बुला, कहना मैं बुला रहा हूँ।

(सोहन बाहर जाता है)

शुक्ला : मुझसे तो इनकी मनी समझदार हैं. ...अभी तक समझा रही हैं,... और मैं,....ई मुझे भी बदलना होगा....।

(श्रीमती शुक्ला का प्रवेश–संजय और आशा भी आते है)

शुक्ला : सुनो मैं भी चल रहा हूँ ।

श्रीमती शुक्ला : (किंचित विस्मय से) कहाँ ?

शुक्ला : (हँसते हुए) राजू के फार्म पर चलो हम सब पिकनिक कर आते है । क्यों संजय ठीक है न ? (कन्धे पर हाथ रखता है) नाराज हो ?

संजय : पापा, (रोता है, और शुक्ला के पांव में गिर जाता है)

शुक्ला : रो मत बेटे, जो कुछ हुआ है, अच्छा ही हुआ है । तूफान आया और चला गया, हम हिलकर फिर मजबूती से सम्हल गये । आओ, चलें....मोहन जरा ड्राइवर को तो बुलाना ।

(पर्दा खिंच जाता है)

दहेज

कुन्दनसिंह सजल

○ ○ ○

पात्र परिचय

शशि भूषण :
प्रभाकर :
दिवाकर :
रमाशंकर : [कालिज के विद्यार्थी]
उमा शंकर :
दिनेश :

सेठ करोड़ी मल—नगर का ख्यात मक्खीचूस, उमाशंकर का पिता ।

लाला भगवानदास—नगर का धनाढ्य व्यक्ति ।

नौकर—लाला भगवानदास का नौकर ।

(कॉलेज की कैन्टीन में पांच विद्यार्थी बैठे चाय-पान कर रहे है । आपस में बातें चल रही है । समय कालिज मध्यान्तर का है) ।

शशि : आज हमने अंग्रेजी के पीरियड में मिस्टर शर्मा को ऐसा छकाया कि सारी सिट्टी-पिट्टी भूल गये ।

प्रभाकर : यार, इससे अच्छा तो बेचारा शुक्ला पढ़ाता है । शर्मा है भी थर्ड क्लास, लेकिन भाई प्रिंसिपल का लौंडा जो है ।

दिवाकर : कुछ भी कहो यार, प्रिंसिपल साहब अपने विषय के मास्टर ही हैं, यह तो मानना पड़ेगा ।

रमा शंकर : भाई अग्रवाल, तुम भी तो कुछ बोलो । आज उदास क्यों हो, क्या बात है ? इस तरह चेहरे पर हवाइयाँ क्यों उड़ रही हैं ।

शशि : हाँ, यार, अग्रवाल, लगता है मिस कान्ता से आज तुम्हारी मुलाकात नहीं हुई है ।

प्रभाकर : या आपस में कुछ कहा सुनी हो गई है ? तुम तो यार, हम सबसे अधिक वाचाल हो और जब बोलते हो तो किसी की सुनते ही नहीं । आज क्या तुम्हारा मौन व्रत है ?

रमा शंकर : अरे भैया, कान्ता जैसी सुशील और सुन्दर जीवन साथी पाने के लिए मिस्टर अग्रवाल मौन व्रत क्या एकादशी, अमावस, पूनम, मंगलवार सबके व्रत रख सकता है और आज का यह मौन व्रत शायद इसकी शुरुआत है ।

उमा शंकर : भाई लोगों, क्यों जले पर नमक छिड़कते हो । मैं तो कल से वैसे ही बुझा-बुझा हूँ । लगता है, चारों ओर अँधेरा छाया है और मुझे उसमें से पथ नहीं सूझ रहा है ।

दिवाकर : आखिर बात क्या है ? पहेली बुझाना छोड़कर कुछ कहो भी । क्या कान्ता के पिता ने इन्कार कर दिया ।

उमा शंकर : आप जानते हैं, हम पाँचों साथी कालिज के वे विद्यार्थी हैं जो कालिज के वार्षिकोत्सव पर पूरे कालिज स्टाफ व सहपाठियों के समक्ष यह संकल्प ले चुके हैं कि बिना एक पैसा दहेज लिए हम अपनी शादियाँ करेंगे और अपने से गरीब घरों की लड़कियों को जीवन साथी बनाकर, उनका उद्धार करेंगे ।

शशि : हम उस बात को भूले थोड़े ही हैं । हम तो हर प्रकार का त्याग करके इस संकल्प को निभाएँगे और तुम तो हमारे इस अभियान के नेता हो । क्या हममें से किसी पर शक है, तुमको ?

सब : (एक साथ) बोलो, बोलो ।

उमा शंकर : आप लोगों पर शक का तो कोई कारण ही नहीं है । नाव मेरी भँवर में फँस गई है । कल नगर के प्रतिष्ठित सेठ लाला भगवानदास

की चर्चा तो नगर में जो है सो राजा भोज की कहानियों की तरह फैली है। कल लाला भगवानदास अपनी लड़की का रिश्ता, जो है सो तुम्हारे साथ लेकर आए थे। मैंने जो है सो उन्हें बहुत इन्कार किया कि अभी लड़का पढ़ रहा है। पूरा पढ़-लिख लेने दो जो है सो आपका ही है किन्तु मेरे बिना कहे ही जो है सो उन्होंने कहा, 'पचास हजार दहेज में नकद दूँगा।' तुम्हारी मां से पूछा तो जो है सो उसने भी हामी भरदी और मैंने भी लाला को स्वीकृति दे दी जो है सो।

उमा : पिताजी मैं इसी प्रसंग में आपसे बात करने आया हूँ।

सेठ : निःसंकोच बात करो जो है सो। बेटा, मैं पुराने विचारों का जरूर हूँ जो है सो लेकिन इतना अधिक दकियानूस नहीं हूँ। तुम शायद भगवानदास की लड़की के विषय में कुछ कहना चाहोगे, जो है सो। देखो बेटा, जो है सो मनुष्यों में तो केवल दो ही रंग मिलेंगे, जो है सो गोरा या काला।

उमा : नहीं पिताजी, न मुझे लड़की के सम्बन्ध में कुछ कहना है और न उसके रंग के विषय में।

सेठ : तुम जानते हो जो है सो भगवानदास नगर का सबसे धनी व्यक्ति है अरे यदि वह अपने चंगुल में जो है सो फँसता है तो बेटा, हम मालामाल हो जाएँगे और उसके तो एक ही लड़की है, जो है सो।

उमा : पिताजी, मैं अपने पुरुषार्थ पर भरोसा रखने वाला हूँ। मैं यह पसन्द नहीं करता कि आप किसी से भीख माँगें।

सेठ : अरे जो है सो मैंने थोड़े ही कहा था कि दहेज में हम पचास हजार नकद लेंगे। उसने खुद ही, जो है सो देने को कहा है।

उमा : नहीं पिताजी, लाला मुझे आपसे, पचास हजार का टुकड़ा फेंककर नहीं खरीद सकता।

सेठ : बेटा, जो है सो तुम कैसी बात कर रहे हो? मैंने भी तो जो है सो तुम्हारी बहिनों की शादी में कुछ ना कुछ दहेज दिया है।

उमा : पिताजी, मैं इस दहेज प्रथा को ही बंद करना चाहता हूँ। आपने मुझे पैदा किया है, आपको पूरा हक है, आप मुझे बाजार में खड़ा करके बेच दीजिये शायद एक लाख में मैं बिक जाऊँगा और आप सहज ही लखपति बनने का अवसर पा जाएँगे।

सेठ : तू कैसी मूर्खतापूर्ण बातें कर रहा है, जो है सो। क्या मैंने तुझे इतना इसीलिए पढ़ाया है कि तेरे रिश्ते पर, जो है सो एक पैसा भी न लूँगा, इसका निर्णय तुझ पर छोड़ दूँ।

उमा : देखिए पिताजी, मैं सारी कॉलिज के सामने संकल्प कर चुका हूँ कि अपनी शादी में एक पाई भी दहेज की न लेने दूँगा।

सेठ : अच्छा, जो है सो मैं तेरी बात मान लेता हूँ। लाला से हम दहेज में कुछ भी तय नहीं करेंगे। लेकिन शादी पर, जो है सो, वह कुछ भी देगा, उसे लेने से इन्कार नहीं करेंगे।

उमा : लेकिन पिताजी, दूसरा संकल्प यह है कि शादी करूँगा तो किसी गरीब की लड़की से।

सेठ : अरे नालायक, जो है सो क्यों मेरी खाक उड़ाने पर उतारू हो रहा है। क्यों मेरे सपनों को जो है सो उजाड़ने चला है। देख बेटा, हमारे कुल की जो है सो यह परम्परा है कि जो कुछ बड़े बूढ़े तय कर दें, उसे छोटों को मानना पड़ता है।

उमा : पिताजी, अब वह जमाना लद चुका है। यह बीसवीं सदी है, इसमें सारे सामाजिक मूल्य व मापदण्ड बदले जाएँगे।

सेठ : और यह शुरुआत, जो है सो मेरे ही घर से होगी, क्यों न बेटा?

उमा : ऐसा ही समझ लीजिए पिताजी।

सेठ : यदि यही बात है, तो जो है सो मेरी बात भी कान खोलकर सुनले। तूने इस रिश्ते से इन्कार किया तो जो है सो न मैं तेरा बाप हूँ और न तू मेरा बेटा और इस घर में जो है सो तेरे लिए कोई जगह नहीं है। तेरा पढ़ना-लिखना भी बन्द।

उमा : यह सब मैंने पहले ही सोच लिया है पिताजी और कान्ता को बता भी दिया है कि हम दोनों को शादी करके जीवन क्षेत्र में अकेले उतरना है।

सेठ : हे भगवान, जो है सो यह मैं क्या सुन रहा हूँ ? अबे गधे जो है सो मुझे क्यों मिट्टी में मिलाने पर उतारू हो रहा है। क्यों मेरी इज्जत को नीलामी बोल रहा है। जा निकल जा मेरे घर से जो है सो, अभी, इसी समय (उठकर हाथ पकड़कर बाहर निकालने लगता है)

उमा : जो आज्ञा पिताजी, प्रणाम (चला जाता है)

स्थान—लाला भगवानदास की फैक्टरी का आफिस

समय—सुबह के ग्यारह बजे

(लाला भगवानदास आफिस में बैठे फैक्टरी के कुछ कागजात देख रहे हैं। उमा शंकर अपने चारों साथियों के साथ आता है)

उमा : (दरवाजे पर से) क्या मैं अन्दर आ सकता हूँ।

लाला : कौन है ? राम भरोसे।

उमा : जी, मैं सेठ करोड़ीमल का पुत्र उमाशंकर.......

लाला : (बीच में) अरे उमा, राम भरोसे आओ बेटा, अन्दर आ जाओ राम भरोसे।

उमा : (साथियों से) चलो, आओ (सभी फुसफुसाते हैं)

लाला : (एक से अधिक आवाजें सुनकर) आ जाइये, आप सभी लोग राम भरोसे अन्दर आ जाइये।

पाँचों : (अन्दर प्रवेश कर एक साथ) नमस्कार लाला जी।

लाला : जीते रहो, रामभरोसे जीते रहो (कुर्सियों की ओर इशारा करके) अरे, आप लोग बैठिये, रामभरोसे, खड़े क्यों हैं ? (सबके बैठ जाने पर लालाजी 'कॉल बैल' बजाते हैं। चपरासी अन्दर आकर सलाम करता है)

लाला : देखो, मोहन, रामभरोसे, चाय और कुछ खाने को भेज दो।

उमा : रहने दीजिए, हम तो अभी नाश्ता करके आये हैं।

लाला : बेटा, रामभरोसे, यह भी तुम्हारा ही घर है। इसे दूसरा क्यों समझते हो ?

उमा : देखिये चाचाजी, आप तो मुझे शर्मिन्दा कर रहे हैं।

(बातचीत के बीच में लाला भगवानदास का पुत्र दिनेश आता है जो उमाशंकर का सहपाठी है)

दिनेश : (आकर) नमस्ते साथियो ।

सब : नमस्ते दिनेश बाबू ।

(दिनेश एक कुर्सी पर बैठ जाता है । चपरासी चाय तथा प्लेटों में कुछ खाने की सामग्री लेकर आता है । दिनेश उठकर सभी के लिए चाय बनाने लगता है एवं प्लेटों में नाश्ता लगाता है । सभी चाय नाश्ता करते हैं ।)

उमा : (चाय का कप व प्लेट लालाजी की ओर बढ़ाकर) आप लीजिए चाचाजी ।

लाला : अरे नहीं बेटा, रामभरोसे, मैं तो कुछ भी न लूँगा ।

शशि : नहीं चाचाजी, हमारा साथ तो देना ही पड़ेगा ।

रमाशंकर : नहीं तो, हम भी कुछ भी नहीं खाएंगे ।

लाला : (हँसकर) अच्छा, रामभरोसे तुम्हारी जिद ही है तो मैं चाय लेता हूँ ।

(सब नाश्ता करते हैं । बीच-बीच में चाय नाश्ते की तारीफ भी करते जाते हैं । दिनेश बीच में सबको पुनः चाय के लिए पूछता है । सभी के नाश्ता कर चुकने के बाद बातों का सिलसिला फिर शुरू होता है ।)

लाला : अब बताओ बेटा उमा, रामभरोसे, कैसे साथियों की फौज लेकर मुझ पर चढ़ाई बोली है (सुनकर सभी हँसते हैं) ।

उमा : चाचाजी, बात ऐसी है कि आपने पिताजी से मेरे सम्बन्ध की बात-चीत की है तथा पिताजी दीपावली पर शगुन लेने जा रहे हैं । इसी सन्दर्भ में आपसे कुछ प्रार्थना करने आया हूँ ।

उमा : आप मेरी बात तो सुन लीजिए, आप बीच-बीच में मांगने की बात कहते हैं। हमें क्या आपने भिखारी समझा है (उत्तेजित होकर) मैं आपसे यह कहने आया हूँ कि मुझे आपकी लड़की से रिश्ता मंजूर नहीं है।

लाला : अरे, तुम तो रामभरोसे, बिना काम गुस्सा करते हो। मांगना कहने से मेरा मतलब रामभरोसे तुम्हें भिखारी समझने से नहीं है। आखिर तुम यह रिश्ता, रामभरोसे क्यों नहीं मंजूर करते हो ?

उमा : देखिये, हमारे कॉलिज में हमने एक कमेटी का गठन किया है 'दहेज विरोधी अभियान कमेटी'। मैं उस कमेटी का चेयरमैन हूं। ये चारों (शशि, रमा, प्रभाकर व दिवाकर की ओर इशारा करके) आप जानते है, नगर के प्रतिष्ठित व्यक्तियों के पुत्र हैं। हम पाँचों ने कॉलिज के वार्षिक उत्सव पर संकल्प लिया था कि हम अपने विवाह में एक पैसा दहेज नहीं लेंगे।

प्रभाकर : दिनेश बाबू, उमा का रिश्ता तय करने से पूर्व क्या आपने चाचाजी को यह बात नहीं बताई थी ?

दिनेश : पिताजी, मैंने आपको कहा तो था कि उमाशंकर इस रिश्ते को स्वीकार नहीं करेगा।

लाला : मैंने समझा था, रामभरोसे की बात इतनी नहीं बढ़ेगी। उमाशंकर रामभरोसे अपने पिताजी का कहना मान लेगा। तो उमाशंकर हम रामभरोसे अपने पिताजो का कहना मान लेगा। तो उमाशंकर हम दहेज तय नहीं करेंगे, वैसे ही विवाह देंगे रामभरोसे।

उमा : लेकिन चाचाजी, हमारी दूसरी प्रतिज्ञा यह है कि हम किसी गरीब की लड़की का उद्धार करेंगे।

दिनेश : भाई उमाशंकर, मैं क्षमा चाहूंगा। उस दिन तो मेरी आँखों पर पर्दा पड़ा हुआ था। मैं समझता था, आप सभी भावुक हैं और आपाक यह संकल्प शायद निभेगा नहीं किन्तु आज मेरी आँखें खुल गई हैं। मैं भी आज से आपके अभियान में शामिल हूँ तथा अपने पिताजी व आपके सामने संकल्प लेता हूँ कि अपने विवाह में एक पैसा भी दहेज न लेने दूंगा तथा किसी गरीब की लड़की से शादी करूँगा।

पाँचों : हम तुम्हारा स्वागत करते हैं दिनेश ।

लाला : (बिगड़कर) दिनेश, रामभरोसे तूने भी भावुकता में यह क्या कर डाला । अरे तुम्हारा रिश्ता तो रामभरोसे मैं जिले के एम. पी. की लड़की से तय कर चुका हूँ जो दिल्ली विश्वविद्यालय में पढ़ रही है, रामभरोसे ।

दिनेश : नहीं पिताजी, मैं भी किसी गरीब माँ बाप की लड़की से विवाह करूँगा ताकि गरीबों का भी उद्धार हो ।

लाला : उमाशंकर, बेटा तुमने यहाँ आकर रामभरोसे, मुझे दो तरफ से नुकसान पहुँचाया है । एक तो रामभरोसे मेरी लड़की का रिश्ता अस्वीकार करके । दूसरा रामभरोसे मेरे लड़के को सफल कराके ।

उमा : चाचाजी, हम तो आपको भी सफल करवाना चाहेंगे ।

लाला : वह क्या रामभरोसे ?

उमा : यही कि आप अपनी लड़की का विवाह किसी गरीब लड़के से करेंगे ताकि उसका घर भी आपके बराबर का हो जाये ।

विकास के पथ पर

चन्द्रमोहन 'हिमकर'

* * *

पात्र-परिचय

सुरेश कुमार	:	कांग्रेसी
राजेन्द्र कुमार	:	समाजवादी
कमलेश	:	साम्यवादी
बलवीरसिंह	:	जागीरदार
करोड़ीमल	:	सेठ
शिवकुमार	:	प्रोजेक्ट ऑफिसर
निक्सन	:	एक अमरीकन
अरविन्द कुमार	:	पत्रकार
विमला कुमारी	.	ग्रामसेविका
डाकिया	:	सरकारी नौकर

बलवीरसिंह : बाल-बच्चे तो हर साल पैदा होते ही रहते हैं। अभी श्रीमान्, हम तो चन्दा देते-देते थक गए। अगर चन्दे-बन्दे की बात हो प्रोजेक्ट में तब तो हमें पसन्द नहीं है।

शिवकुमार : ठाकुर साहब ! आप तो अब तक भी लकीर के फकीर बने हुए हो। आप नये जमाने के उन्नति पथ पर चलने में असमर्थ हैं। अब तीर और तलवार के दिन लद गये। सुरा और सुन्दरी के दिन अब सपने बन गए हैं। अब ऊँचे वेतन योग्यता के आधार पर ही तो हमें मिलते हैं। योजनाओं के द्वारा ही आज विदेशों ने उन्नति हुई है। हमारे देश में भी सैकड़ों स्कूलें खुली हैं। खेती-बाड़ी के कामों में, सिंचाई के साधनों में उन्नति हो रही है। लोगों में दासता और संकुचित दृष्टिकोण के भाव मिट रहे हैं; क्या ये हमारे विकास के प्रतीक नहीं हैं, जागृति के चिन्ह नहीं हैं ?

करोड़ीमल : (चाटुकारी वृत्ति से) अजी प्रोजेक्ट आफिसर साहब, हमें इसमें चन्दा तो नहीं देना पड़ेगा। अगर कुछ हमारी कमाई का धन्धा हो तो हम धनी-वर्ग के लोग इस योजना का हार्दिक स्वागत करेंगे। सहयोग भी देंगे। आप चिन्ता न करें।

बलवीरसिंह : अजी साहब तालो दोनों हाथों से बजती है।

शिवकुमार : सेठ साहब ! इसमें चन्दा देने का कोई भारी कार्य नहीं है। जनता के जिन गरीब लोगों से जो आपने छल-बल से रुपया कमाया है, उसका कुछ अंश-मात्र देने की नौबत आयेगी। वैसे चिन्ताजनक कोई बात नहीं है, सेठजी रुपया-पैसा तो हाथ का मैल है। जीते जी कोई ऐसा कार्य कर जाओ जिससे आपका नाम अमर हो जाये।

(एक कांग्रेसी नेता सुरेश कुमार का गाते हुए प्रवेश)

सुधार करें। देश-विदेश की प्रगति की जानकारी अखबारों व रेडियो द्वारा प्राप्त करें यही तो इस प्रोजेक्ट में सिखाते हैं।

सुरेश कुमार : अरे भई रेडियो खोलो ना, इस समय तो विकास कार्यक्रम प्रसारित होने वाला है।

(शिवकुमार स्वयं रेडियो का बटन खोलते हैं। थोड़ी देर में एक गायन सुनाई देता है।)

ग्राम-ग्राम अब स्वर्ग बनेंगे

यह सम्पन्न तपस्वी निर्भय विजय वीर वह मनुज महान्
मणि माणिक से महंगा मानव जनहित जो देवे बलिदान।
हरे-भरे खेतों में हँसते गाते हैं मजदूर किसान
सुखद अवस्था नई व्यवस्था नया गीत नव हिन्दुस्तान
नौजवान परिवर्तन करने विकास पथ पर आते हैं
लगन लगी है तिमिर त्याग कर प्रकाश पथ पर जाते है।
युग-युग से हम बढ़े निरन्तर अब भी बढ़ते जाते हैं।
प्रणय सुमन अगणित मुस्काये अब भी खिलते जाते हैं।
बहे देश में प्रेम विनय की निर्मल धारा चंचल
ग्राम-ग्राम सब स्वर्ग बने लहरें धरती के अंचल।
सुधा कलश से गिरा मनुज पर सरल सुधा बरसाती हैं।
निर्माणों की दीप शिखायें जीवन ज्योति जलाती हैं॥

शिवकुमार : देखा कैसा सुन्दर कार्यक्रम है! ग्रामीण भाइयों को विकास सम्बन्धी जानकारी के साथ-साथ मनोरंजन भी तो होना चाहिये।

एक ग्रामीण : सही फरमाते हैं आप। मनोरंजन.....।

शिवकुमार : अजी मनोरंजन हमारे तो हम सबके जीवन का एक अंग है। जब हम दिन भर मेहनत करते हैं, काम करते हैं, तो थोड़ा बहुत मनोरंजन भी होना चाहिये।

एक साथ कई स्वर : हां, हां, यह तो बड़ा अच्छा है।

सुरेशकुमार : हमारी सरकार को केवल शहरी लोगों का ही ध्यान नहीं है, ग्रामवासियों की तरक्की का भी उसे पूरा-पूरा ध्यान है तभी तो लाखों रुपये ग्राम विकास योजनाओं पर खर्च कर रही है, सरकार।

कुछ स्वर : सच कहते हैं, नेताजी।

सुरेशकुमार : हाँ, शिवकुमारजी, अब आगे क्या कार्यक्रम है ?

शिवकुमार : सुरेशजी, आज लिकन साहब आने वाले हैं।

सुरेशकुमार : अरे, वे अमरीकन महोदय।

शिवकुमार : और अरविन्दजी भी तो उनके साथ ही आ रहे हैं।

करोड़ीमल : अरे वे पत्रकार महाशय।

बलवीरसिंह : अमरीका तो धनी देश है। लिकन साहब की बातें हमें जरूर सुननी चाहिये।

शिवकुमार : लो वे आ ही गये।

(अरविन्द के साथ लिकन का प्रवेश)

सब उठ कर उनका स्वागत करते हैं।

सुरेशकुमार : आओ भई, हमें तुम लोगों की प्रतीक्षा थी।

अरविन्दकुमार : प्रतीक्षा थी तो हम आ भी गये।

शिवकुमार : आइये, आइये लिकन साहब। आप हमें अमरीका के बारे में कुछ बताने वाले थे।

लिकन : जरूर-जरूर ! हम अपने देश के बारे में जरूर बतायेगा। हाँ तो हम कहता है कि हमारी अमेरिका में लोग सरकारी अफसरों की बात को ध्यान से सुनता है। खूब सोचता है अमीर गरीब सब मिलकर देश की उन्नति के कामों में सहयोग देता है और सरकारी योजनायें सफल होती हैं।

कमलेश : लिकन साहब क्या भारत का आदमी नहीं सोचता ?

लिकन : ऐसा मालूम होता है, इधर का आदमी जिद्दी है। देशहित के कामों में मेहनत से जी चुराता है। कर्तव्य-पालन करना वह साधारण बात समझता है। कर्तव्य पालन में उदासीनता के कारण देश की उन्नति नहीं हो सकती है।

अरविन्द   अजी लेकिन साहब हमारे देश के लोग ऐसे हैं कि ठोस काम कुछ नहीं करते हैं और चाहते हैं कि उनका नाम अखबारों में छप जाये। लोग उनका जय-जयकार करें और कुछ लोग ऐसे पुराने रूढ़िवादी विचारों के है जो नई रोशनी से उल्लू की तरह चमकते हैं। कुछ कम्युनिस्ट हैं जो नासमझ जनता को इधर-उधर बहकाते हैं। सेठ साहूकारों का हाल यह है कि वे अनाप-शनाप तो कमाते हैं किन्तु जब दान या चन्दा देने का अवसर आता है तो मन छोटा करने लगते हैं। किसी ने सच कहा है—

> एरन की चोरी करे, करे सुई को दान,
>
> ऊंचा चढ़कर देख तो, केतिक दूर विमान ?

सुरेशकुमार : क्या खूब अरविन्दजी।

(सामान्य हँसी उभरती है)

अरविन्द : अजी चमड़ी चली जाय पर दमड़ी नहीं जाय। पर यह सब अब चलने वाला नहीं है। ऐसी बातें कम्यूनिज्म को मौन निमन्त्रण हैं।

रमसेन : लेकिन साहब, कम्यूनिस्ट देश भी तो अपना विकास करने में लगे हैं, वे भी बहुत आगे बढ़ गये हैं।

रनवीरसिंह : अगर हम जागीरदारों को कुछ हक वापिस मिल जाय और भविष्य में आमदनी के साधनों की सुरक्षा की गारन्टी मिल जाय तो हम आपकी इस योजना में सहयोग देने के लिए तैयार हैं।

रमसेन : अब यह कठिन है, ठाकुर साहब ! आप लोगों ने सैकड़ों वर्षों से जनता का शोषण करके ही तो आज उनको गरीब और जर्जर बना दिया है। उनकी आत्मा का हनन किया है।

(करोड़ीमल की ओर संकेत करके)

वैतरणी पार करने के प्रमाण-पत्र दे रही है। अंग्रेजों से जब हमने स्वराज्य लिया था तब वे लोग हमें सैकड़ों प्रकार की समस्याओं में उलझा कर चले गये थे।

राजेन्द्र : मेरा विचार यह है कि जब तक हमारे देश के बड़े-बड़े कल कारखाने सरकार के नहीं हो जाते तब तक देश की गरीबी मिटाना मुश्किल है। हमारे देश के नागरिकों की आमदनी में जमीन आसमान का अन्तर है। हमारे देश के एक व्यक्ति को १५–२० रुपये मासिक मिलते हैं, तो किसी को ८–८, १०–१० हजार रुपये मासिक मिलते हैं, इस महान् अन्तर को कब तक सहन करेंगे? भारत के प्रत्येक नागरिक के जीवन की बुनियादी आवश्यकतायें तो पूरी होनी ही चाहियें। समाज के प्रत्येक सदस्य को सम्मानपूर्ण जीवन बिताने के साधन तो मिलने ही चाहिएँ।

सुरेशकुमार : बुनियादी आवश्यकताओं से आपका क्या मतलब है? राजेन्द्र जी! अर्थशास्त्र के सिद्धान्त के अनुसार तो आप जानते हैं कि प्रत्येक मनुष्य की आवश्यकतायें असीम होती हैं।

राजेन्द्र : बुनियादी आवश्यकताओं से मेरा अभिप्राय यह है कि प्रजातन्त्र में भारत के प्रत्येक नागरिक को रहने के लिए सुविधाजनक मकान मिले। उनको जीवन-यापन के लिए रोजगार मिले। उनके बच्चों की शिक्षा का प्रबन्ध हो। मतलब यह है कि हर मनुष्य को रोटी, रोजी, कपड़ा, घर, काम-धन्धा मिलना चाहिये। साधारण नागरिक और उच्चाधिकारियों के वेतन में हजारों गुना अन्तर नहीं हो। जो सरकार यह कार्य नहीं कर सकती, उसे सत्तारूढ़ बने रहने का कोई अधिकार नहीं है।

लिकन : ठीक है, बिल्कुल ठीक है।

कमलेश : अजी सुरेश बाबू! देखिये दूसरे देश वहां के नेताओं के पथ प्रदर्शन में फल-फूल रहे हैं। हमारा देश स्वतन्त्र होकर भी दुखी है। हमारे यहाँ सरकार का खर्चा कितना बड़ा है। मैं तो समझता हूँ कि गरीबी का मुख्य कारण यह है कि इतने मिनिस्टरों को रखना सफेद हाथियों का पालन-पोषण करने जैसा है। मुझे यह भी कहने

दीजिए कि राज्य नम्रता व सज्जनता से नहीं चलता है। कुछ सख्ती भी होनी चाहिए। राज्य का राजदण्ड समर्थ होना चाहिये।

सुरेश : कामरेड कमलेश व साथी राजेन्द्र ! मैं कहता हूँ कि व्यर्थ ही वाद-विवाद करने से क्या लाभ होने वाला है ? यह तो तुम भली-भाँति जानते ही हो कि चीन के साम्यवाद की पतलून भारत के लिये उपयोगी नहीं है। पूँजीवाद के खतम करने का अभी यह उपयुक्त समय नहीं है। अभी लोहा ठण्डा है। यदि बड़े-बड़े कारखानों को सरकार अभी एकदम अपने अधिकार में कर ले तो राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार में हानि होने का डर है। पूँजीपतियों को सरकार यदि सख्ती से दबा ले तो वे लोग कल-कारखाने बन्द करके बैठ जायेंगे और हमारे देश के लोग जो कल-कारखानों में काम करते हैं, उन लाखों लोगों के बेकार होने की सम्भावना है। आप लोग जो सुधार करना चाहते हैं उसके लिए हम भी तैयार हैं। हम भी प्रगतिशील विचारधारा के है किन्तु इस विकास योजना में आप सब लोग अपना सहयोग देकर इसे सफल बनाइये। कँधे से कंधा लगा कर काम कीजिये तो यह सब समस्यायें आज नहीं तो कल अवश्य सुलझ जायेगी।

श्रम के शिव शंकर से बहती, अब विकास की गंगा
पंचशील संदेश सुनावे, शोभित विश्व तिरंगा।

मानव के कल्याण के हित गूँजे नित गान हमारा
बड़े प्रेम से प्रसन्न जन-मन स्वागत करें तुम्हारा ॥

अन्न वस्त्र का ढेर लगाकर, भरें खेत खलिहानों को
जन-जीवन में नित उन्नति हो, याद रखें बलिदानों को ॥

तूफानो के बीच मनुज के केवल एक सहारा
हम प्रसन्न मानव हिलमिल सब स्वागत करें तुम्हारा ॥

अखिल विश्व परिवार हमारा, मानव-मानव सब भाई,
जीवन पथ पर कदम बढ़ावें, रहे न कोई कठिनाई ॥

तन उपवन सब महक उठेंगे पाकर रूप तुम्हारा
हम प्रसन्न इस युग में जीवित यह सौभाग्य हमारा।

हरे-हरे पौधों के सिर पर पीले-पीले फूल हैं,
फल फूलों से लदे बगीचे, मौसम भी अनुकूल है।
कदम-कदम पर रिद्धि-सिद्धि धन दौलत के अम्बार लगे
घर-घर देखो द्वार द्वार सुख मंगल वन्दनवार सजे॥

भौतिक उन्नति संग जग रही जीवन ज्योति ज्ञान की,
हरे-भरे खेतों में अब लहराती फसलें धान की।
राम किसानों में रमता खेतों में रमती जानकी॥

दूर-दूर विस्तृत खेतों में पकी फसल लहराती है,
देख फली फूली खेती को, जनता हँसती गाती है।
इठलाता ये धान, चना, हँसता गेहूँ बल खाता है
हरियाली संग ज्वार बाजरा गाता है मुस्काता है॥

अलमस्त किसानो की टोली खेले गज घोड़ा पालकी,
हरे भरे खेतों में अब लहराती फसलें धान की।
राम किसानों में रमता खेतों में हँसती जानकी॥

सेठ करोड़ीमल : बस बस सुरेश बाबू! अब सब बात मेरी समझ में आ गई। मैं आज से ही ब्याज की दर कम कर दूंगा, गरीबों पर दया करूंगा, स्वार्थसिद्धि त्याग दूंगा, शोषण करना बन्द कर दूंगा। सरकार की प्रत्येक योजना में प्रत्येक राष्ट्रोत्थान के कार्य में तन, मन, धन से सहायता दूंगा।

सुरेशकुमार : धन्य है सेठजी! आप जैसे समझदार और दानवीर लोगों की देश को बड़ी आवश्यकता है। भामाशाह की वृत्ति वाले सेठ साहूकार अमर हो जायेंगे। विनोबा भावे के सम्पत्तिदान में आप जैसे अन्य सेठ साहूकार भी सक्रिय सहयोग दें तो जानते हो सेठजी सारा काम अहिंसा से ही चल जायगा।

करोड़ीमल : गर्दन हिलाकर……हां, हां पूरी तरह समझ गया।

बलवीरसिंह : सुरेश बाबू आज आप सब लोगों की ये बातें सुनकर मेरी भी आंखें खुल गई हैं। मुझे मेरे कर्त्तव्य का अब भान हुआ है। मैं सबके सामने प्रतिज्ञा करता हूँ कि मैं आज से मदिरा पीना छोड़कर देश की सेवा करूंगा। हमारी राष्ट्रीय सरकार को हर काम में सहयोग

विध्वंसात्मक कम्युनिज्म की नींव भारत में नहीं जम सकती, यह धर्म निरपेक्ष राज्य है समझे !

कमलेश : सचमुच मेरी भी बात कुछ समझ में आ गई है। भारत की जनता की उन्नति सरकार के द्वारा हो, इस बात से मैं कब इन्कार करता हूँ ? मेरा और मेरे दल का आदर्श सिद्धान्त रूप में कुछ विरोध है, हमारा मत भी आपसे भिन्न है किन्तु फिर भी मैं भारतीय कम्युनिस्ट हूँ इसलिए मैं विकास सम्बन्धी कार्यों के लिए अगले चुनाव तक पूर्ण सहयोग दूँगा। पर मेरा रास्ता अलग है, समझे नेताजी !

सुरेन्द्रकुमार : भाई कमलेश कहा चले ? सुबह का भूला भटका यदि शाम को घर आ जाय तो हमारा व देश का सौभाग्य है।

निक्सन : (प्रसन्न मुद्रा में, ओ हो)
अब आप सबको इस प्रकार देखकर हमारे दिल को सचमुच बड़ी खुशी होती है। अब आप इस प्रोजेक्ट की बातें समझने लगे हैं। इससे अब यह सामुदायिक विकास योजना जरूर सफल होगी। इसमें अब कोई शक नहीं है।

स्थापित करके संसार की मानवता को हम सुखी बनावें।
आओ हम सब मिलकर इस मंगलवेला में एक गीत गायें—

जग में जीवन ज्योति फैले फूले फले स्वदेश।
विकास पथ पर बढ़ते जावें, यह निश्चित उद्देश्य ॥

जय जय भारत देश !

कोटि कोटि जनता के मुख से गूंज उठे यह नारा,
सर्वोदय का पुण्य पोत, अपना भूदान सहारा।
उन्नति पथ पर बढ़े निरन्तर श्रम-जीवन संदेश ॥१॥

जय जय भारत देश !

इस विकास के पुण्य कार्य में हम भी हाथ बटावें,
भव्य भावना कलित कामना से सत् पथ अपनावें।
तन मन धन से त्याग करे हम सुखी बने यह देश ॥२॥

जय जय भारत देश !

करने नव-निर्माण देश का कोटि-कोटि अब चरण बढ़े,
हरने को अज्ञान देश का ज्ञान दीप ले मनुज बढ़े
लगे काम सब मिटे गरीबी मिटे हमारे क्लेश ॥३॥

जय जय भारत देश !

आज हमारा कर्म धर्म है, करें देश का नवनिर्माण
वर्गहीन शोषण विहीन जन करें विश्व भर का कल्याण
सुख संपत्ति यश गौरव पावें हरा भरा हो देश ॥४॥

जय जय भारत देश !

भूमण्डल में तरल तिरंगा विजय केतु अब लहर रहा है
उच्च गगन के मुक्त पवन में चक्र सुदर्शन छहर रहा है ॥
कोटि कोटि जन की लख आशा मुस्काये अखिलेश ॥५॥

जय जय भारत देश !

जग में जीवन ज्योति फैले फूले फले स्वदेश।
विकास पथ पर बढ़ते जावें यह निश्चित उद्देश्य ॥

जय जय भारत देश !

भारती : हाँ माँ मैं जल्दी ही आ····आ····ने वा····आ····आ ल····अ····आ य····या····अ············

भगवती : अरे तुम बोलते-बोलते बबराने क्यों लग गये। अरे कोई है, अरे मेरे लाल को तो देखो।

बेटा–यह तुम्हारे मुँह से क्या निकल रहा है अ र र झाग !

भारती : क····ण····ठ स सू ख र············

भगवती : अभी पानी लानी है पर तुम्हारा कण्ठ कैसे सूखने लग गया अरे किशनू············

किशनू : हाँ मालकिन

भगवती : देखो तो तुम्हारे छोटे बाबू को क्या हो गया ?

किशनू : हे ए–[पुकारता है] छोटे बाबू, छोटे बाबू।

भारती : ह····अ····हाँ····आ

भगवती : अरे कोई गोपाल को बुलाओ रे पूछें तो सही [किशनू का जाना गोपाल को साथ लेकर आना भगवती का उससे पूछताछ करना]

भगवती : क्यों गोपाल रास्ते में कोई विशेष घटना तो नहीं हुई थी देखो। न भारती की तबियत एकदम खराब हो गई है।

: क्यों मालकिन लड्डू वही तो नहीं थे जो·······

: अरे जुब्बां बन्द रख मैं तो मर गई ! बेटा एक बार तो मुँह से बोल। हाय मेरा तो घर उजड़ गया।

: घबरायें नहीं माताजी मैं अभी डाक्टर को बुलाकर, लाता हूँ····

: हायरे बेटा तू वहाँ गया ही क्यों ! [कहते हुए भगवती गिर पड़ती है गोपाल डाक्टर को बुलाने जाता है।]

[पर्दा गिरता है]

जलता चिराग

अमोलक चन्द जांगिड़

* * *

काल सन् 1019 ई०

पात्र परिचय

महमूद गजनवी	:	गजनी का सुलतान
वैहाकी	:	सिपहसलार
उत्वी	:	सलाहकार
अलबेरुनी	:	वजीर
फिरदौसी	:	सलाहकार
शेखर	:	भारतीय कलाकार
हबीबा	:	महमूद सुलतान की शहजादी
जन्नत	:	सहेली
शहर आजाद	:	सहेली

प्रथम दृश्य

स्थान—गजनी के सुलतान का राजमहल

समय—दिन का द्वितीय प्रहर

[आंगरारा नदी के दक्षिण किनारे पर सामानी शासकों के समय में ही बना हुआ एक पुराना किला जिसके भीतरी भाग की शानोशौकत बड़ी आकर्षक है। इसे

यामिनी वंश के प्रसिद्ध शासक महमूद ने अनेक परिवर्तन करके सजाया है, जो राजमहल की सुन्दरता को चार चाँद लगाता है। राजमहल के मध्य बने हुए विशाल भवन में आम दरबार लगा हुआ है।]

महमूद : (विजय की खुशी में) हमारे जांबाज बहादुरों को मैं तहेदिल से दाद देता हूँ जिन्होंने हिन्दोस्तां को इस बार वो शानदार शिकस्त दी है जिसकी कोई मिसाल नहीं। मथुरा तक के इलाकों को रौंद डाला गया। काफिरों के मन्दिरों को तहस-नहस कर दिया गया। (अट्टहास करते हुए) हा""हा""हा""! हमने अपार धन-दौलत लूट कर गजनी के खजाने को भर दिया है। हमने हीरे-जवाहरातों की नुमाइश लगाने का हुक्म दे दिया है। क्यों बैहाकी ! कितना काम और करने को रह गया है ?

बैहाकी : (झुककर खड़ा होता है) हुजूर ! आपके हुक्म के मुताबिक राजमहल के दाहिने बाजू वाले कमरे में नुमाइश का इन्तजाम कर दिया गया है। कल से आम रिआया के लिए कमरा खोल दिया जाएगा।

महमूद : शाबास ! हमें तुमसे ऐसी ही आशा थी।

उत्बी : (अपने स्थान पर खड़ा होकर सिर झुकाता है) खता मुआफ हो। हुजूर के कदमों में रिआया एक अर्ज पेश करना चाहती है।

महमूद : (उत्बी की ओर गरदन घुमाकर) कहो, क्या कहना चाहती है रिआया?

उत्बी : (दरख्वास्त पढ़ते हुए) हुजूर ! गजनी की रिआया दरख्वास्त पेश कर अर्ज करती है कि राजधानी में एक विशाल मस्जिद बनवाई जाय ताकि खास मौकों पर एक साथ नमाज अदा की जा सके। दूसरा—एक बड़ा मदरसा बनवाया जावे और मुदर्रिसों की तादाद बढ़ाई जावे ताकि मजहबी तालीम व कौमी खासियत को आवाम में ठीक अन्जाम दिया जा सके।

महमूद : बेशक ! आवाम की माँगें काबिले गौर हैं। मगर मेरी मंशा एक नया राजमहल बनवाने की है। उसकी इमारत इतनी बुलन्द और हुनर में इतनी शानदार हो कि दुनियाँ में उसका कोई मुकाबला न हो। तीनों इमारतों पर कितनी दौलत खर्च हो सकती है ? अलबेरुनी इसका तखमीना बनाकर पेश करें।

अलबेरुनी : जो हुक्म !

(एक सिपाही का प्रवेश)

सिपाही : (कोर्निश करते हुए) हुज़ूर ! ख़लीफ़ा की ओर से एक दूत आया है। वह आपसे मिलना चाहता है।

महमूद : उसे बाइज़्ज़त दरबार में लाया जावे।

सिपाही : जो हुक्म !

(सिपाही चला जाता है और दूत के साथ उसी समय लौट आता है)

दूत : (कोर्निश करता है) ख़लीफ़ा साहब ने आपकी सेवा में यह संदेश भेजा है। (परवाना पेश करता है। सुलतान पढ़ता हुआ बहुत खुश नज़र आता है)

महमूद : बैहाकी ! इस परवाने को दरबार में पढ़ा जावे।

बैहाकी : (झुककर परवाना हाथ में लेता है और परवाना पढ़ता है) (पढ़ते हुए) इस बार की हिन्दोस्तांफतह पर आपको मुबारकबाद ! आपने जो दूर-दूर तक इस्लाम का निशान फहराया है, इससे हम बहुत खुश हैं। हम आपको केवल खुरासान, बल्ख और हिरात का शासक ही नहीं बल्कि सारे गजनी का सुलतान मानते हैं। आगे आपके वंश को गद्दी का हकदार कबूल करते हैं।

महमूद : जानते हो तुम किसके सामने खड़े हो ? बेवकूफ नौजवान ! मैं वही महमूद हूँ जिसने हिन्दोस्तां को कई बार पैरों तले रौंदा है। उसी महमूद के एक इशारे से तुम्हारे जिस्म के टुकड़े-टुकड़े किये जा सकते हैं।

शेखर : (जोश में) भारतीय वीर मृत्यु और जीवन को समान समझता है। मातृभूमि के सम्मान के लिए मुझे मरना भी पड़े तो मुझे कोई दुःख नहीं होगा।

महमूद : (क्रोध से तिलमिलाता हुआ) सिपाहियो ! इस काफिर को कैद-खाने में बन्द करदो और मेरी आँखों से दूर हटाओ।
(सिपाही शेखर की मुश्कें बाँध कर ले जाते हैं)

[पर्दा गिरता है]

द्वितीय दृश्य

(पर्दा उठता है)

समय—शाम के ५ बजे

स्थान—[गजनी के महल का बाहरी भाग जहाँ एक छोटा सा बगीचा है। पेड़ और पौधों की गंध से सारा वातावरण महक रहा है। सुलतान महमूद की शाहजादी हबीबा अपनी सहेलियों के साथ घूम रही है]

जन्नत : शहजादी साहिबा ! कल दरबार में एक अजीब घटना हो गई।

हबीबा : क्या हो गई ? (उत्सुकता से)

शहर आजाद : लो शहजादी साहिबा को तो कुछ खबर ही नहीं। चिराग तले अंधेरा !

जन्नत : सारे दरबारी गणों ने दाँतों तले अंगुली दबा ली। सबके होश गुम हो गए।

हबीबा : (खीझ से) कुछ बताओगी भी या यों ही रहोगी ? ऐसा कौनसा आफत का पहाड़ टूट पड़ा ?

जन्नत : हिन्दोस्तां फतह की खुशी में कल दरबार में शहंशाह ने एक राजमहल, एक मस्जिद और एक मदरसा बनाने का एलान किया। इनको बनवाने का इन्तजाम फिरदौसी को सौंपा गया। जब बात कारीगरों की चली तो फिरदौसी साहब ने हिन्दोस्तां से लाये

कैदियों में एक नौजवां कलाकार की सिफारिश की जो अपने हुनर का बादशाह बताया गया है।

हबीबा : तब तो अब्बाजान ने उसे एक इमारत बनाने का हुक्म जरूर दिया होगा।

जन्नत : अब्बाजान ने तो तहेदिल से उसको चाहा मगर काफ़िर ने इनकार किया।

हबीबा : क्यों ?

जन्नत : काफिर का जवाब था—'मेरा जिस्म गुलाम है, मगर हुनर नहीं'।

हबीबा : तब तो अब्बाजान ने अवश्य ही उसके जिस्म के टुकड़े-टुकड़े कुत्तों को डलवाने का हुक्म दिया होगा।

जन्नत : यही तो अचम्भा है कि शहशाह ने उसे कड़ी कैद की सजा दी है, मौत की नहीं।

हबीबा : सबब ?

जन्नत : सबब मालूम नहीं। मगर काफिर है बहुत खूबसूरत। उसके काले-बाल, लम्बी गरदन और चौड़े कंधे उसकी खूबसूरती में चार चाँद लगाते हैं। क्या बला की जवानी है। उसको देखकर कलेजा मुंह को आ जाता है।

हबीबा : इतना हसीन ! जन्नत ! क्या हिन्दोस्तां के उस कलाकार का दीदार करा सकती हो ?

जन्नत : क्यों नहीं शहजादी साहिबा ! अभी चन्द लमहों में उसे इसी रास्ते से तहखाने वाली जेल में ले जाया जाएगा।

हबीब : चलो ! तब तक हम उस पेड़ की ओट में छिप जावें।

(शहजादी व सहेलियाँ एक पेड़ की ओट में हो जाती हैं। थोड़ी देर में चार सिपाही शेखर की मुश्के बांधे ले जाते हैं)

जन्नत : (इशारा करते हुए) वो देखो शहजादी साहिबा ! चेहरे से क्या नूर टपक रहा है। गजब का हुस्न दिया है खुदा ने।

(शहजादी थोड़ा आगे आकर ज्योंही उसकी तरफ देखती है शेखर का भी उधर ही देखना हो जाता है। चार आँखें होती हैं। शेखर वहीं ठिठक जाता है किन्तु पीछे से सिपाही उसे तहखाने के फाटक की ओर खदेड़ता हुआ आगे बढ़ जाता है)

जन्नत : यह क्या ? शहजादी साहिबा ! (मुखड़े को निहारते हुए) आप इतनी उदास क्यों हो गई ? यह खिलता हुआ गुल व गर्द में क्यों पड़ गया ? (दिल पर हाथ रखते हुए) ओह ! आपके दिल की धड़कन··· ···········

हबीबा : कुछ नहीं हुआ जन्नत ! अचानक मेरी तबियत खराब हो गई है। मुझे यहां से जल्द ले चलो।

(जन्नत और शहर आजाद शहजादी को सहारा देकर महल के भीतर ले जाती हैं)

[पर्दा गिरता है]

तृतीय-दृश्य

(पर्दा उठता है)

समय : रात्रि का द्वितीय प्रहर

स्थान : महमूद गजनवी का शयनगृह

(सुलतान अपने शयनगृह में उद्विग्न टहल रहा है। माथे में बल। मुट्ठियां बन्द। पास में एक लौंडी सेवा में खड़ी है)

महमूद : खड़ी क्या देखती हो ! शराब और लाओ।

(लौंडी धीरे खड़ी सुराही से शराब चांदी के प्याले में उड़ेलती है और सुलतान को पेश करती है। महमूद एक सांस में पी जाता है)

चतुर्थ दृश्य

(पर्दा उठता है)

समय—रात्रि का द्वितीय प्रहर

स्थान—तहखाने का भीतरी भाग

[चिराग की रोशनी में तहखाने का भीतरी भाग दीख रहा है। शेखर एक फीलपाये से बन्धा हुआ बेहोश दिखाई देता है। हबीबा का आहिस्ते से प्रवेश]

हबीबा : (आसमान की ओर दोनों हाथ किए हुए) ऐ मेरे परवरदिगार ! कितना खूबसूरत इन्सान बनाया है। मगर तुम्हारे हुनर की यह बेइज्जती क्यों ? क्या कसूर है इसका ? मेरे मालिक ! अब मुझसे रहा नहीं जाता। एक इन्सान का दर्द देखा नहीं जाता। बेशक अब्बाजान मेरा सर कलम करेंगे मगर मुहब्बत के बढ़ते तूफाँ को कौन रोक सका है ? इन्सानी जोश का तकाजा है कि मैं इस नौजवां शख्स का बन्धन तोड़ूं (कह कर आगे बढ़ कर शेखर के बन्धन खोल देती है। उसे फर्श पर आहिस्ते से लिटा देती है। थोड़ी देर में शेखर को होश आता है और हबीबा की ओर देखता है)

शेखर : हैं, मैं यह क्या देख रहा हूँ ! (धीरे-धीरे बैठता है) क्या स्वर्ग की अप्सरा इस धरती पर उतर आई है ? क्या मैं आजाद हूँ ?

हबीबा : हाँ कलाकार ! तुम आजाद हो। तुम्हारी कला आजाद है।

शेखर : तुम कौन हो ? राक्षसों के राज्य में एक दैविक शक्ति का अवतार ?

हबीबा : मुहब्बत की डोर यहाँ तक खींच लाई है मुझे कलाकार ! मैं सुलतान महमूद की शहजादी हूँ। मगर तुम्हारे हुनर की गुलाम हूँ।

शेखर : शहजादी ? यह आप क्या कहती हैं ?

हबीबा : ठीक कहती हूँ कलाकार ! मुझे तुमसे, तुम्हारे हुनर से बेहद प्यार है। मेरे पाक दिल में मुहब्बत का दरिया ठाठें मार रहा है। मेरा रोम-रोम तुम्हारे पाक कदमों में समा जाना चाहता है। जिसे अपने वतन से प्यार नहीं, अपने हुनर पर गुमां नहीं, वह असल इन्सान नहीं।

तुम भी मौत के घाट उतार दी जाओगी। मेरे खून को लज्जित न करो।

हबीबा : अब्बाजान ! मेरी रगों में आपका ही खून बह रहा है। मेरी मुहब्बत····

महमूद : (बीच में ही सिपाहियों से) इसकी भी मुश्कें बाँधकर एक तरफ पटक दो और इसकी आँखों के सामने ही काफिर को जलाओ ताकि अपने तड़फते कलाकार के नजारे देख ले।

[सिपाही हबीबा की मुश्कें बाँध कर एक ओर पटक देते हैं। तत्पश्चात् शेखर को मशालों से जलाते हैं। शेखर बार-बार 'जय भारत' बोलता है। अंग जलने से चित्कार निकलती है। अन्त में बेहोश हो जाता है। हबीबा विवश हाथ पैर मार कर रह जाती है। धीरे-धीरे मशालों की रोशनी गुल हो जाती है। केवल एक चिराग जलता दिखाई दे रहा है। उसकी मन्द रोशनी में शेखर का जला हुआ विरूप चेहरा दिखाई देता है। पर्दे के पीछे से मातमी धुन बजती है]

⊛ ⊛ ⊛

जय-यात्रा

राधामोहन जोशी

* * *

पात्र–परिचय

पुरुष पात्र		स्त्री पात्र
धर्मीचन्द :	मध्यमवर्गीय व्यापारी (प्रौढ़ावस्था)	माया देवी : (धर्मीचन्द की पत्नी)
अजय :	धर्मीचन्द का ज्येष्ठ पुत्र (आयु 20 वर्ष)	
अशोक :	धर्मीचन्द का कनिष्ठ पुत्र (आयु 18 वर्ष)	

(प्रथम दृश्य)

स्थान एवं पात्र : राजस्थान का सीमावर्ती नगर बाड़मेर। धर्मीचन्द किराना बेचने वाला साधारण व्यापारी है। बड़ा लड़का अजय बी० ए० कर चुका है। कभी-कभी दूकान पर बैठता है, अधिकांश समय घर से बाहर रहता है। छोटा अशोक बी० ए० का विद्यार्थी है। अधिकांश समय अपने कमरे में घुसा रहता है और बात बहुत कम करता है। धर्मीचन्द की पत्नी माया साधारण पढ़ी लिखी जागरूक महिला है।

समय : ३ दिसम्बर १९७१ संध्या के ७ बजे हैं। बैठक में साधारण फर्नीचर लगा है। मायादेवी एक आराम कुर्सी पर बैठी है। इस

इस समय घर में वह अकेली है। मेज पर रेडियो पड़ा है। भारत-पाकिस्तान के बीच वातावरण तनावपूर्ण होने के कारण रेडियो पर समाचार सुनने की उत्सुकता माया देवी के चेहरे पर झलकती है। टन-टन-टन""सात बजते हैं और माया देवी यकायक कुर्सी से उठकर रेडियो का स्विच ऑन करती है।

रेडियो पर आवाज सुनाई देती है—

'पिप-पिप-पिप""यह आकाशवाणी है, अब आप रामानुजप्रसादसिंह से हिन्दी में समाचार सुनिए—

'यू० एन० आई० के संवाददाता ने समाचार दिया है कि आज शाम को ४ बजकर २० मिनिट पर पाकिस्तान के सेवरजेट विमानों ने श्रीनगर, अमृतसर, पठानकोट एवं आगरा के हवाई अड्डों पर हमला करने का असफल प्रयत्न किया। पठानकोट में दो तथा अमृतसर में १ सेवरजेट मार गिराया गया। विस्तृत समाचारों की प्रतीक्षा की जा रही है। एक विशेष सूचना सुनिए—आज अर्द्ध-रात्रि में प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी राष्ट्र के नाम एक महत्वपूर्ण संदेश प्रसारित करेंगी। समाचार समाप्त हुए।'

माया : (स्वतः) तो आग भड़क उठी। याह्या खाँ ने आखिर अपनी हठ पूरी की। खैर, भारत अब १९६५ वाला भारत नहीं रहा, पाकिस्तान को छठी का दूध न याद आ जाय तो क्या बात हुई। देखती हूँ इन्दिरा जी आज रात में क्या कहती हैं? (अशोक कॉलिज से लौटता है और बैठक में से होकर माँ की ओर बिना देखे अपने कमरे की ओर बढ़ने लगता है। मायादेवी उसे टोकती हुई कहती है)

माया : बेटा! अशोक! देख तो बेटा! एक मिनिट मेरे पास भी बैठ जा! तू तो बस हर समय अपने कमरे में ही घुसा रहता है। तुझे दीन-दुनिया की कुछ खबर भी है?

अशोक : (परेशान सा) माँ"मुझे काम है, बताओ जल्दी से तुम क्या कहना चाहती हो?

माया : बेटा, एक मिनिट बैठ तो कहूँ। तुझे तो बस हर समय काम ही

जय-यात्रा

राधामोहन जोशी

* * *

पात्र–परिचय

पुरुष पात्र		स्त्री पात्र
धर्मीचन्द :	मध्यमवर्गीय व्यापारी (प्रौढ़ावस्था)	माया देवी : (धर्मीचन्द की पत्नी)
अजय :	धर्मीचन्द का ज्येष्ठ पुत्र (आयु 20 वर्ष)	
अशोक :	धर्मीचन्द का कनिष्ठ पुत्र (आयु 18 वर्ष)	

(प्रथम दृश्य)

स्थान एवं पात्र : राजस्थान का सीमावर्ती नगर बाड़मेर। धर्मीचन्द किराना बेचने वाला साधारण व्यापारी है। बड़ा लड़का अजय बी० ए० कर चुका है। कभी-कभी दुकान पर बैठता है, अधिकांश समय घर से बाहर रहता है। छोटा अशोक बी० ए० का विद्यार्थी है। अधिकांश समय अपने कमरे में घुसा रहता है और बात बहुत कम करता है। धर्मीचन्द की पत्नी माया साधारण पढ़ी-लिखी जागरूक महिला है।

समय : ३ दिसम्बर १९७१ संध्या के ७ बजे हैं। बैठक में साधारण फर्नीचर लगा है। मायादेवी एक आराम कुर्सी पर बैठी है। इस

माई ऐहा पूत जण, जेहा राण प्रताप,
अकबर सूतो ओझक के,जाण सिराणे साँप।

और तू समूचे राष्ट्र पर संकट आने के समय ऐसी कायरता की बातें कर अपनी जननी व जन्म-भूमि दोनों को अपमानित कर रहा है ?

अशोक : माँ ! तू भी जरा सोच ! युद्ध, हत्या, मार-काट, खून-खराबा क्या कोई अच्छी बात है ? मुझे तो युद्ध-मात्र से ही घृणा है। क्या मिलता है मनुष्य को मनुष्य का खून बहाकर ? कौन कहता है मनुष्य सभ्य हो गया है ? चन्द्रमा पर पहुँच गया है और मंगल पर जाने की सोच रहा है और कहाँ धरती पर ही अपनी जंगली सभ्यता से उबर नहीं पाया।

माया : यह तो तू बहुत बड़ी-बड़ी बातें करता है बेटा ! तू बी. ए. में पढ़ता है, तेरे जितना ज्ञान तो मुझमें नहीं, पर कुरुक्षेत्र के मैदान में कृष्ण ने अर्जुन से जो कहा था वे बातें मैंने भी गीता में पढ़ी हैं। अर्जुन ने युद्ध के मैदान में अपने सामने शत्रु पक्ष में अपने ही बन्धु बांधवों को देखा तो वह युद्ध से विरत होने लगा उस समय कृष्ण ने उसे कहा था 'स्वधर्मो निधनं श्रेय, परधर्मो भयावह' क्षत्रिय के लिए तो सत्य की रक्षा के लिए लड़ना ही परम धर्म है, तू क्या किसी की हत्या करेगा–वे जो अधर्म की राह पर हैं, पहले से ही मृत हैं, तू तो उनके विनाश के लिए निमित्त मात्र है। उठ ! शस्त्र संभाल ! युद्धरत हो।

अशोक : माँ, यह सब गये गुजरे जमाने की बातें हैं। आज तो दुनियां सिकुड़ कर बहुत छोटी हो गई है। राष्ट्र, धर्म और जातियों के घेरे अब समाप्त हो रहे हैं। किसका राष्ट्र ? किसका धर्म ? कौन सी जाति ? हम तो सब एक हैं। सारा विश्व एक राष्ट्र है।

माया : बेटा तू तो दार्शनिकों की सी बातें करता है। अपने यहाँ एक कहावत है,'डूँगर बलती दीसे, पग बलती नी दीसे'। घर में तो आग लगी है और तू राष्ट्र, धर्म, जाति सभी एक है जैसी बातें करता है। यह नहीं देखता कि सभी राष्ट्र एक होने को तैयार भी हैं, कि नहीं। अभी तो एक दूसरे से टकराने की बात हो रही है, एक

भगतसिंह, राजगुरु, यतीनदास और शहीद चन्द्रशेखर के परिवार वालों को आज कौन पूछता है। एक बार पढ़ा था कि उनको आज रोटियों के भी लाले पड़ रहे हैं।

माया : ज़रा ठहरो, अभी बारह बज रहे हैं। इंदिराजी का राष्ट्र के नाम संदेश आने ही वाला है। तुम भी सुनलो। (रेडियो का स्विच ऑन करती है। रेडियो से आवाज निकलती है—पिप....पिप....पिप.... हमारे श्रोताओं को शीघ्र ही प्रधान मन्त्री, श्रीमती इन्दिरा गांधी के एक महत्वपूर्ण संदेश की प्रतीक्षा करनी चाहिए....पिप....पिप.... रेडियो पर एक ध्यून बजती रहती है।)

माया : घर क्या केवल तुम्हारा ही है ? राष्ट्र से बड़ा तुम्हारा घर कब से हो गया ?

धर्मचंद : मुझे कुछ नहीं सुनना, कुछ नहीं समझना। यह बड़े बड़े नेता सब अपना घर भर चुके हैं, इन्होंने लाखों, करोड़ों की संपत्ति पहले ही जमा कर रक्खी है और अब हमको फाकामस्ती का उपदेश दे रहे हैं। पर उपदेश कुशल बहुतेरे।

माया : यह तुम कैसी बातें कर रहे हो ? अजय के बापू ! अभी पहले रेडियो खोलो और प्रधानमन्त्री का भाषण मुझे तो सुनने दो।

(आगे बढ़ कर स्वयं स्विच ऑन करती है— 'You will now hear an important message to the nation by our Prime-minister Indira Gandhi ... .स्विच ऑफ करते हुए)

माया : रही न आखिर तुम्हारी बात, नहीं सुनने दिया, पुरुष जो ठहरे। नारी को अपनी संपत्ति-गुलाम-दासी मानने वाले। ठीक है, नारी भी अब जग उठी है। वह तुम्हारी तानाशाही के खिलाफ लड़ेगी। अब से मैं तुम्हारी कोई बात नहीं सुनूँगी। मैं भी अपनी मनमानी करूँगी, देखती हूँ गृहस्थी की गाड़ी अकेला पुरुष कैसे चलाता है ?

(इतना कहती-कहती रुँआसी सी हो उठती है और साड़ी के पल्लू से आँखें पोंछने लगती है)

माया : घर क्या केवल तुम्हारा ही है ? राष्ट्र से बड़ा तुम्हारा घर कब से हो गया ?

धर्मीचंद : मुझे कुछ नहीं सुनना, कुछ नहीं समझना। यह बड़े बड़े नेता सब अपना घर भर चुके हैं, इन्होंने लाखों, करोड़ों की संपत्ति पहले ही जमा कर रक्खी है और अब हमको फाकामश्ती का उपदेश दे रहे हैं। पर उपदेश कुशल बहुतेरे।

माया : यह तुम कैसी बातें कर रहे हो ? अजय के बापू ! अभी पहले रेडियो खोलो और प्रधानमन्त्री का भाषण मुझे तो सुनने दो।

(आगे बढ़ कर स्वयं स्विच ऑन करती है— 'You will now hear an important message to the nation by our Prime-minister Indira Gandhi ... .स्विच ऑफ करते हुए)

माया : रही न आखिर तुम्हारी बात, नहीं सुनने दिया, पुरुष जो ठहरे। नारी को अपनी संपत्ति-गुलाम-दासी मानने वाले। ठीक है, नारी भी अब जग उठी है। वह तुम्हारी तानाशाही के खिलाफ लड़ेगी। अब से मैं तुम्हारी कोई बात नहीं सुनूँगी। मैं भी अपनी मनमानी करूँगी, देखती हूँ गृहस्थी की गाड़ी अकेला पुरुष कैसे चलाता है ?

(इतना कहती-कहती रूँआसी सी हो उठती है और साड़ी के पल्लू से आँखें पोंछने लगती है)

अफसर विजय बाबू को सब-कुछ बता दूंगी फिर तुम जानो और तुम्हारे बेटे ।

(धर्मीचंद पर यकायक आतंक व भय की छाया पड़ जाती है । गिड़गिड़ाते हुए से स्वर में कहता है)

धर्मीचंद : अरे....रे....रे... अजय की माँ यह क्या गजब कर रही हो क्या तुम अपने बेटे को और मुझे जेल भिजवाकर सुखी हो जाओगी ।

माया : जब तुम ही तस्करी करके देश के अनेक परिवारों को बरबाद करने पर तुले हो और तुम्हारा बेटा राष्ट्र से गद्दारी कर अनेक ललनाओं को विधवा बना डालने पर आमादा हो तो मैं ही सुखी बनकर क्या करूँगी ? कुछ तो राष्ट्र की सेवा हो जायगी ।

धर्मीचंद : (कपाल पर हाथ मारते हुए) अरे भागवान ! कुछ तो विचार कर.......हे राम ! मेरे घर में ऐसी कट्टर राष्ट्रभक्तिन भेजकर यह किन कर्मों की सजा दे रहे हो ? खैर तुम भी जब यही चाहती हो कि धर्मीचंद सदैव के लिए नाम का सेठ और घर का फकीर बना रहे तो तुम्हारी मरजी । अब हम भी तिरंगा चोला पहन कर राष्ट्र सेवा का व्रत लेंगे । संसार के बड़े-बड़े जोगी-जतियों को इस माया ने नाच नचाया है, ब्रह्माजी तक को जिसने कुमार्ग पर दौड़ा दिया उस माया देवी से यह क्षुद्र जीव धर्मीचंद कैसे पार पा सकता है । बोलो माया देवी की जय ! हाँ तो अब क्या हुक्म है देवीजी का ? अपना ता काम-धंधा सब चौपट हुआ समझो । अब तो जो तुम कहोगी, वही करूँगा ।

माया : यह नहीं अजय के बापू, यह तो तुम सी. आई. डी. को खबर करने के डर से बदल रहे हो, कल को फिर कोई ऐसा ही घोटाला करोगे । तुम्हारी वाणी बदली है, दिल नहीं ।

धर्मीचंद : अरे भाई जब घर का भेदी ही लंका ढाने को तैयार है तो हम क्या करें ? तुम तो महाशक्ति का अवतार हो, कहीं मास्टरनी होती तो अच्छा था । अब तो कसम ही खानी पड़ेगी । सच तो यह है माया कि अब तक अपनी राह चलता रहा तो भी रहा फटीचर का फटीचर । अब देखता हूँ तुम्हारी राह चलकर ही कुछ हो

जाय, शायद इसीमें मेरी भलाई हो। सचाई और ईमानदारी से भी पेट भरने लायक तो कमा ही लूँगा। फिर इस जन्म में तुमसे और अगले जन्म में अपने भाग्य से वैर क्यों मोल लूँ।

माया : तो फिर बताओ अब कौन सा सौदा करोगे ?

धर्मीचंद : यह भी साथ ही साथ सोच लिया है देवीजी, जानता हूँ आपको पूरी कैफियत तो देनी ही होगी। सौदा तो वही करूँगा—शक्कर, मिट्टी का तेल, अनाज-सभी भरपूर मात्रा में इकट्ठी करूँगा और उचित कीमत पर कम से कम मुनाफा लेकर बेचूँगा।

माया : हाँ यह बात तुमने ठीक कही। राष्ट्र की सेवा करने का यह भी एक तरीका है।

धर्मीचंद : जरूर है महामाया जी·······हर–हर–हरि करे सो खरी।

[तीसरा दृश्य]

(समय प्रातःकाल ४ दिसम्बर। माया देवी घर में झाड़-पोंछ कर रही हैं। धर्मीचंद गले में दुपट्टा डाले हाथ में माला लिए एक चौकी पर बैठे हैं। तभी अजय एक ओर बाहर से आता है और एकदम तेजी से दूसरी ओर घर में चला जाता है। माया उसे देख कर आवाज देती है··········?

माया : अजय ! अजय बेटे ! जरा इधर आना तो !

(अजय दूसरी ओर से बाहर आता है)

अजय : क्या है माँ ? मुझे बहुत काम है। क्या कहती हो ?

माया : ऐसा भी क्या काम है बेटा ? तू कल सुबह से गायब था अब २४ घण्टे बाद लौटा है और अभी भी तुझे कुछ काम है।

अजय : माँ, तुझे मेरे काम के बारे में क्या लेना-देना है, तुम अपना काम करो।

माया : तो तू समझता है, तेरे काम के बारे में मुझे कुछ नहीं पता। तू आजकल क्या खिचड़ी पका रहा है यह मुझसे छिपा नहीं है।

अजय : (चौंक कर एकदम निकट आते हुए) बता तो ? तू क्या जानती है ? मैं भी तो सुनूँ।

माया : नहीं बेटे, तुझे फुरसत नहीं है तो मत सुन पर अपनी बूढ़ी माँ की इतनी बात याद रखना कि जो तूने अपनी मातृभूमि से दगा किया तो तेरी यह माँ भी तेरी मित्र नहीं दुश्मन बन जायगी।

अजय : (पुनः चौंकते हुए) यह क्या ऊल-जलूल बक रही हो माँ। मैं क्या कर रहा हूँ—क्या नहीं कर रहा हूँ, तुम्हें क्या पता है? जरूर किसी ने तेरे कान भरे हैं।

माया : बेटा, मैं कानों की इतनी कच्ची नहीं हूँ। पर तू अपने माँ-बाप के नाम पर कलंक लगाने पर तुला है यह मैं खूब जानती हूँ। तू आजकल राष्ट्र के दुश्मनों की जी-हजूरी कर रहा है, उनके तलुए सहला रहा है।

अजय : (क्रोध से उफनते हुए) माँ—यह क्या कहती है, ताने पर ताने दिए जा रही है, खोल कर कुछ नहीं बताती? आखिर तू क्या कहना चाहती है?

माया : बेटा इतना भोला न बन। ले सुनना चाहता है तो कान खोलकर सुनले। तू पाकिस्तान की जासूसी कर रहा है। चन्द चाँदी के टुकड़ों के बदले तूने अपनी आत्मा को बेच दिया है। तुझे यदि पैसा मिले तो तू अपनी माँ को भी बेचने से नहीं हिचकिचाएगा?

अजय : (चीखते हुए) माँ....पहले मुझे यह बता कि यह सब बातें तुमसे किसने कही हैं? उसका नाम बता ताकि पहले उसी का हिसाब साफ करूँ।

माया : तो तू अब धमकियाँ भी देने लगा? चोरी और सीना जोरी? एक तो देश के साथ गद्दारी और ऊपर से पोल खोलने वालों को धमकी? मैं कहती हूँ बाज आजा इस देशद्रोह से? अभी भी समय है, बच ऐसे पाप कर्म से, नहीं तो तू तो डूबेगा ही अपने साथ सारे परिवार को ले डूबेगा।

अजय : (तेज स्वर में) माँ मैंने कुटुम्ब परिवार को अपने साथ बाँधा तो नहीं है। तू चाहती है तो मैं कहीं और जगह जाकर रहूँ, वैसे भी तुम लोगों को मुझ पर बेजा शक हो गया है।

माया : वह तो ठीक है, तू घर छोड़ कर चला जायगा पर क्या देश भी

छोड़ देगा ? उस मातृभूमि का त्याग कर देगा ? जिसकी मिट्टी पानी से यह तेरा शरीर बना है। उस जननी जन्मभूमि की सेवा करने के बदले तू तो उसे दुश्मनों के हाथ बेचने पर तुला है। 'जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी' कहने वाले तेरे लिए मूर्ख और पागल हैं। विदेशी शासन से देश को मुक्त करने के लिए जिन देशभक्तों ने अपने प्राण दे दिए वे सब क्या सिरफिरे थे ?

अजय : (परेशान सा होकर) बस माँ, मैं यह सब बकवास सुनना नहीं चाहता। इतना जानता हूँ कि जो कुछ कर रहा हूँ अपने परिवार की भलाई के लिए ही कर रहा हूँ।

(धर्मीचंद तभी पूजा के आसन से उठकर कुर्सी पर बैठते हुए)

धर्मीचन्द : बेटा कुटुम्ब की भलाई किसमें है, यह हम लोगों से ज्यादा तुम्हारी माँ समझती है। कल तक मैं भी अंधेरे में भटक रहा था पर आज मेरी आँखों पर से पड़ा पर्दा हट चुका है। तू पहले इसकी बात गौर से सुनले फिर तुझे अच्छी लगे तो करना।

अजय : बाबूजी आप भी माँ के बहकावे में आ गये लगते हैं। इन औरतों को मर्दों के मामले में नहीं पड़ना चाहिए। यह तो चाहती हैं कि हम इनकी गोद में छुप कर बैठे रहें नहीं तो कोई हव्वा हमको उड़ा ले जायगा।

माया : बेटा तू अपनी माँ और सम्पूर्ण नारी जाति का अपमान कर उनकी अच्छी मिट्टी पलीत कर रहा है। तुम जैसे पुरुषों को जन्म देकर सचमुच में ही हम लज्जा की पात्र बनी हैं। युद्ध में चूड़ियाँ ले जाने वाले पति और दूध लजाने वाले पुत्रों को जन्म देकर माताएँ सचमुच अभागिन होती हैं। (रुँआसी हो जाती है)

अजय : बस माँ, बहुत हुआ, मुझे अपना काम करना है। तुम्हारे आँसू पोंछने को मैं यहाँ बैठा नहीं रह सकता।

माया : नहीं बेटा, तू भला मेरे आँसू क्यों पोछेगा ? तू तो अपने आका, अन्नदाता पाकिस्तान के हुक्कामों की जूतियाँ चाट और अपने कमरे में बन्द होकर ट्रांसमीटर से समाचार दे कि देश की फौजों के महत्वपूर्ण मुकाम कहाँ-कहाँ हैं ? (आँसू पोंछने लगती है)

चुनौती

नाथूलाल चोरड़िया

* * *

पात्र परिचय

रामू	: कॉलिज का एक २१ वर्षीय छात्र ।
धरम चन्द	: नगर का एक सेठ, रामू का पिता ।
धन्नामल	: नगर का एक सेठ, धरम चन्द का मित्र ।
श्यामू	: रामू का सहपाठी मित्र ।
मन्त्री	: राज्य के वित्त मन्त्री ।
जज	: सेशन कोर्ट का मुख्य न्यायाधीश ।
भोलू	: एक १२ वर्षीय अनाथ बालक ।
भारत	: मानव रूप में देश का स्वरूप ।
अकाल	: यानि, अकाल-मानव के रूप में ।
वकील	: सरकारी वकील ।

समय : प्रातःकाल

स्थान : गाँव और कॉलिज के मध्य का मार्ग

[प्रथम दृश्य]

को गोदाम में भरते रहिये। दो गोदाम नाज मेरे यहाँ भी इकट्ठा हो गया है। भीषण अकाल में दूनी कीमत आ येगी।

(दोनों एक ककड़ी छीलते हैं खराब निकलने से फेंक देते हैं। भिखारी बालक चील और कौओं की भाँति उस पर झपटते हैं। उठाकर खाने लगते हैं।)

धरम चन्द : ठीक है काफी स्टॉक कर लेंगे। परन्तु धन्ना सेठ एक बात से सम्भल कर रहना कि कहीं मेरे लड़के रामू को यह सब भेद नहीं मालूम हो जाय। आजकल वह आवारा सी बातें करने लग गया है।

धन्नामल : आप चिन्ता न करें। मुझे मालूम है। उसका प्रबन्ध करा रखा है। अब चलें। (दोनों के प्रस्थान के समय एक भिखारी पैसा माँगता-माँगता साथ-साथ भागता है। धन्ना सेठ धक्का देकर उसे वहीं गिरा देता है।)

(दूसरी ओर से एक बाबू जी एक हाथ में मिठाई का डिब्बा और एक हाथ में अपने टॉमी कुत्ते के गले की चैन पकड़े आते हैं। कुत्ता भी साथ में आता है।)

भिखारी : बाबू साहब ! कुछ खाने को हमको भी दो। कल से कुछ नहीं खाया है।

बाबू जी : (टॉमी को डिब्बे में से मिठाई खिलाते हैं।) हट कुत्ते ! तुम्हारे पेट भरने का क्या हमने ठेका ले रखा है ? दीखता नहीं ! यह मिठाई तो मेरे टॉमी राजा के लिये है।

(फिर टॉमी को मिठाई हाथ से खिलाता है। भिखारी बालकों का जी ललचाता है। एक बालक कुत्ते के मुँह में से झपटना चाहता है। बाबू साहब उसे एक लात लगाकर गिरा देते हैं।)

बाबू जी : हट कमीने ! कहीं तेरी बीमारी मेरे टॉमी राजा को लग जायगी।

भिखारी : बाबू जी मिठाई नहीं, रोटी नहीं, तो कुछ पैसा तो दे दो। रात को फुटपाथ पर बहुत ठंड लगती है। ओढ़ने को एक फटा-टूटा लप्पड़ खरीदेंगे।

बाबू जी [लात मारकर] हट सामने से ! सर्दी लगती है तो हम क्या करें

पैदा क्यों हुआ ? [यह कहकर अपने टॉमी को लिए प्रस्थान। भिखारी 'ऐ ! बाबू' की आवाज करते रहते हैं।]

[इसी समय एक ओर से रामू और श्यामू का, हाथ में कुछ फल, कुछ रोटियां लिये प्रवेश। भिखारी बालक उसे देखते ही उसकी जय बोलते हैं।]

: [उछलते हुए] रामू दादा की जय !

[रामू और श्यामू भिखारियों में रोटी और फल वितरण करते हैं। भिखारी आनन्द से खाने लगते हैं। रामू और श्यामू बातें करने लगते हैं।]

: तो श्यामू ! धन्ना सेठ ने क्या उत्तर दिया ?

: रामू भैया ! उसने नाज का एक दाना भी दान में देने से मना कर दिया है। कहने लगा—'इस भीषण अकाल में हमारे पास कहां नाज है ?'

: फिर क्या कार्यवाही की ?

: वही की जिसकी पूर्व निश्चित योजना बना रखी थी।

: तो क्या धन्ना सेठ के नाजगोदाम का पता लग गया ?

होगा; क्योंकि अधिकारी और धनिक हमारे काम में विघ्न डालने लग गये हैं।

[बाहर से भीखू का प्रवेश]

भीखू : रामू दादा ! रामू दादा !

रामू : क्या है रे !

भीखू : रामू दादा ! कलक्टर साब के यहां कई आदमियों ने उनकी लड़की की शादी के भोजन की सब मिठाई और खाना झपट लिया और खा रहे हैं। पुलिस वाले उनको पीट रहे हैं।

रामू : [आश्चर्यपूर्वक] अच्छा ! तुम चलो। मैं सब सम्भाल लूँगा [बालक का प्रस्थान] श्यामू ! अब बड़े ढंग से काम करना होगा। इधर गरीबों की भूख बढ़ गई है और दूसरी ओर ये धनी मानो हमारे पीछे लग गये हैं।

श्यामू : रामू भैय्या ! किसानों की खेती भी पानी के अभाव में सूखी जा रही है।

रामू : देखो ! यदि अधिक ही हानि होती दीखे तो बांध की मोहरी खुलवा देना।

श्यामू : ठीक है। मैं देख लूँगा। मैं जाऊँ ? [जाना चाहता है।]

रामू : और सुनो ! एक संकेत और कर देना कि जिन गरीब किसानों के पास खेती की भूमि का अभाव है वे पड़त जमीन तथा जिनके पास भी अधिक भूमि देखें, अपनी ओर से बोवाई कर दें।

[श्यामू का प्रस्थान]

रामू : [भिखारी बालकों से] देखो अब तुम लोग भी भीख माँगना छोड़ दो। काम वालों से काम माँगो। कुछ काम कर मेहनत से पेट भरना सीखो। आज से ही अपने को भिखारी कहलाना बन्द कर दो। जाओ अभी से ही काम की तलाश में घूमना प्रारम्भ करदो।

भिखारी : अच्छा रामू दादा ! आज से हम ऐसा ही करेंगे।

[एक ओर से भिखारी बालकों का प्रस्थान, दूसरी ओर से रामू के पिता धरमचंद का प्रवेश]

[पिता को देखते ही रामू खड़ा होकर दृष्टि नीचे कर एक ओर खड़ा हो जाता है।]

धरमचन्द : [क्रोधपूर्वक] रामू !!

रामू : [सिर नीचा किये] जी पिताजी !

धरमचन्द : [फिर क्रोध से] जी पिताजी के बच्चे ! मैं जानता था कि तेरी आवारागर्दी एक दिन घर को बर्बाद कर देगी।

रामू : नहीं, पिताजी ! आप मुझे गलत समझ रहे हैं।

धरमचन्द : [और अधिक आवेश में] चुप रहो ! तुम्हें विदित होना चाहिए कि तुम्हारे ही कारण धन्ना सेठ का माल-गोदाम लूटा जाने से हम भी बर्बाद हुए हैं।

रामू : बर्बाद नहीं, पिताजी ! उस अन्न से तो गरीबों की आत्मा बड़ी शान्त हुई है। बड़ा शुभ काम हुआ है।

धरमचन्द : रामू !... मैं तुम्हें कई बार निर्देश कर चुका हूँ कि तुम्हारा यह रवैया ठीक नहीं है।

रामू : पिताजी, आप चिन्ता न करें। गरीबों को दिया दान कभी व्यर्थ नहीं जाता। आप भी स्वेच्छा से गरीबों को कुछ दान दे दीजिये।

धरमचन्द : [उग्र होकर] चुप रहो ! मुझे तुम्हारे धर्मोपदेश सुनने की आवश्यकता नहीं। छोटे मुँह बड़ी बात करते तुम्हें शर्म नहीं आती ! पहले तो कुछ आवारागर्दों के साथ मिलकर अपनी पढ़ाई बर्बाद की।

रामू : धन्यवाद जज साहब ! मुझे और तो कुछ नहीं, केवल यही कहना है कि क्या वे धनी-मानी नियम की दृष्टि में अभियोगी और दूषी नहीं हैं ? जो इस भीषण दुर्भिक्ष के समय नाज के गोदाम भरें, ब्लैक मार्केटिंग करें, भाँति-भाँति की मिलावट करें, साँठ-गाँठ कर निकासी करालें, अपने कुत्तों का मिठाइयों से पेट भरें और यह दीन मानव-बच्चा घास और भूसे की रोटियों से, चील-कौओं और कुत्तों की जूँठन से अपना पेट भरे। जज साहब !............नैतिक पतन की पराकाष्ठा हो चुकी है।

(बेंच पर बैठे वकील और पुलिस इन्सपेक्टर काना-फूँसी करते हैं और स्वीकृति-सूचक आश्चर्य प्रकट करते हैं। न्यायाधीश ध्यान-पूर्वक सुनते हैं। इसी समय सरकारी वकील खीझता हुआ कहता है।)

स० वकील : माई लॉर्ड ! यह न्यायालय के विरुद्ध है कि अभियोगी रामू, अपने दीन भावों को नाटकीय-ढङ्ग से प्रस्तुत कर अपराध को गौण बनाने का प्रयास करे। इसे बोलने से रोक दिया जाय।

(इसी समय बैन्च पर से एक वकील खड़ा होकर कहता है— नहीं, इसे कहने दिया जाय।')

न्याया० : हाँ रामू ! तुम अपना कथन जारी रखो।

रामू : धन्यवाद ! जजसाहब ! आज धनिक तथा उच्चाधिकारी-वर्ग दुर्भिक्ष की इस भीषण विभीषिका में विलास-केन्द्रों में, क्लबों में, रेस्त में, मध्य-भोज में तथा शानदार अट्टालिकाओं में आनन्द मनावें, उनके कुत्तों के लिये गर्म और शयन-गृह हों और यह जन-साधारण नंगी-देह, भूखे-पेट गन्दी बस्तियों और फुट-पाथ पर ठिठुर-ठिठुर कर, बिलख-बिलख कर अपनी जिन्दगी के दिन काटें। यह है हमारे देश का नियम और नैतिकता।

[बैंच पर बैठे वकील और इन्सपेक्टर फिर आश्चर्य करते हैं।]

न्याया. : रामू ! तुम कहना क्या चाहते हो ?

रामू : जी, यही कि इस अभूतपूर्व अकाल-संकट की अनुभूति उच्च-वर्ग को तब हो सकती है जबकि वे इस वज्र-प्रहार की परिणति को

कल्पना स्वयं अपने ऊपर करें। आज अकाल गरीबों को मृत्यु की चुनौती दे रहा है। देश का गरीब आज किंकर्त्तव्यविमूढ़ है। उनका जीना दूभर हो रहा है और यह उच्च-वर्ग दिन-प्रतिदिन उनके प्रति क्रूर एवं निर्दयी होता जा रहा है। आज समग्र जन-जीवन और पशु संत्रस्त हैं। उच्च-वर्ग में उनके प्रति सहानुभूति का एक शब्द कहने वाला भी नहीं। उनके समर्थक जेल में ठूँसे जाते हैं, अभियोग लगाये जाते हैं। जज साहब !........ ....

[इसी समय न्यायाधीश शांत रहने का संकेत करते हैं।]

: [रामू से] शान्त ! शान्त ! [जूरी से] मैं जूरी से अपील करता हूँ कि वे मि. रामू के अभियोग पर ध्यानपूर्वक विचार करें।

[बेंच पर बैठे वकील और इन्सपेक्टर आपस में काना-फूँसी करते हैं, फिर कुछ लिखते हैं। बाद में एक वकील खड़ा होकर वह कागज न्यायाधीश को देता है। न्यायाधीश पढ़कर कहता है।]

: [निर्णय सुनाने के पूर्व पर्दे के पीछे से 'रामू दादा को रिहा करो' के नारों की तीन-चार बार आवाज आती है। इसी समय न्यायाधीश निर्णय सुनाता है।] जूरी के निर्णय एवं जन-हित की दृष्टि से रामू को मुक्त किया जाता है और चेतावनी दी जाती है कि

स्थापना की है उसमें तुम्हें सचिव पद पर मनोनीत किया गया है अतः इस निर्णय को भी स्वीकार करो।

रामू : मन्त्री महोदय! इस कोष स्थापना हेतु तो मैं आपका आभारी, परन्तु इसके सचिव पद हेतु आप किन्हीं वृद्ध अनुभवी को नियत करने तो अधिक उचित होता। मैं तो दीन-हीन की सेवार्थ सर्वदा प्रस्तुत हूं।

वित्तमंत्री : नहीं रामू, इस पद पर किसी जागृत नवयुवक की ही आवश्यकता है। और तुम इस हेतु सर्वभांति उपयुक्त तथा योग्य हो। बापू-बाजार में इस हेतु एक कार्यालय की भी व्यवस्था की जा चुकी है। तुम्हें शीघ्र इस जन-हित कार्यालय को सम्भालना है।

श्यामू : रामू भैय्या! हम सब इस कोष के सक्रिय सदस्य बन जायेंगे। आप स्वीकार करलें।

रामू : आज्ञा शिरोधार्य!

वित्तमंत्री : धन्यवाद! (धरमचन्द से) सेठ साहब! यह मान्य है कि हमारा देश घोर संकट की घड़ियों में गुजर रहा है। ऐसी विकट दशा में हर व्यक्ति का कर्त्तव्य है कि वह तन-मन-धन से दीन-हितैषी रामू के हाथ मजबूत करे।

धरमचन्द : मैं स्वीकार करता हूँ मंत्री महोदय! आज मैं लज्जित हूँ कि हमने रामू को नहीं समझा। यद्यपि यह मेरा लड़का है परन्तु इसने हम सबकी आँखो का पर्दा हटा दिया।

वित्तमंत्री : सेठ साहब! यह आपका नौनिहाल रामू गाँव-गाँव और घर-घर का रामू बन गया है। आज समग्र बाल-युवा इसके संकेत पर उमड़ पड़े हैं।

रामू : मंत्री महोदय! आज आवश्यकता इस बात की है कि देश का हर नागरिक चाहे धनिक हो या गरीब, अधिकारी हो या सहायक, नेता हो या मजदूर, सभी अपने कर्त्तव्य का पूर्ण जिम्मेदारी एवं नैतिकतापूर्वक पालन करें। महोदय! जब तक समाज और सरकार के हर क्षेत्र में व्याप्त इस भ्रष्टाचारी-वृक्ष को निर्मूल नहीं

कर दिया जाएगा तब तक इस भुखमरी और अनैतिकता का विष-वृक्ष सर्वदा फलता रहेगा।

: मैं स्वीकार करता हूँ रामू ! पर युवा पीढ़ी को चाहिये कि वह इस जन-साधारण का मनोबल ऊँचा बनाये रखे।

: उसके लिये हम सभी जी-जान से प्रस्तुत हैं पर महोदय, सरकार की ओर से भी विभिन्न प्रकार की क्षेत्रीय विकास योजनाएँ लागू की जायं। भूमिहीनों को भूमि और अपाहिजों को भोजन दें।

: भाई ! मैं राज्य की ओर से सभी प्रकार का सहयोग दिलाने का वादा करता हूँ।

: परन्तु मंत्री महोदय, आज धनिक एवं उच्च वर्ग को भी व्यावहारिक धरातल पर लाने की आवश्यकता है। अन्यथा भारत की मानव-संरक्षक की जो कीर्त्ति विश्व-विख्यात है वह बालू की दीवार की भाँति ढह कर ढेर हो जायेगी और विदेशी राष्ट्र हम पर कीचड़ उछालेंगे। व्यंग्य कसेंगे।

: नहीं ऐसा कभी नहीं होने दिया जायगा। मैं वादा करता हूँ कि इस भीषण दुष्काल में किसी को भी मौत के मुँह में नहीं जाने दिया जायेगा।

: तो महोदय ! आप निश्चित मानिये कि देश में एक भिखारी भी ढूँढ़ने पर नहीं मिलेगा। जन साधारण का हर बाल-युवा-स्त्री-वृद्ध, श्रम के आधार पर अपना पेट-पालन करेगा।

: रामू !.... तो यह भारत फिर से सोने की चिड़िया हो जाएगा। अच्छा चलें। तुम अपना कोष-कार्यालय शीघ्र सम्भाल लेना।

[मंत्री उठता है, सभी उठते हैं। आगे-आगे मंत्री, पीछे सेठ, रामू, श्यामू सभी का प्रस्थान]

[पर्दा गिरता है।]

○○○

देश का मोह

मंडलदत्त व्यास

* * *

(करीम नवमीं कक्षा का छात्र है। पाठशाला से लौटकर अपनी अम्मी से होमगार्ड की ट्रेनिंग में जाने के लिए कहता है।)

अम्मी : नहीं-नहीं, मैं तुम्हें होमगार्ड की ट्रेनिंग में नहीं जाने दूंगी।

करीम : क्यों ? अम्मी ।

अम्मी : मैंने तुम्हें शिक्षा ग्रहण करने के लिए पाठशाला भेजा है। गार्ड बनने के लिए नहीं। मेरी इच्छा है कि तू पढ़-लिख कर डॉक्टर बने ।

करीम : (हँसकर) अम्मी मैं रेल का गार्ड बनने नहीं, होमगार्ड की ट्रेनिंग में जाना चाहता हूँ। इस ट्रेनिंग में अपनी तथा देश की सुरक्षा के नियमों को बतलाया जाता है ताकि समय आने पर अपनी तथा देश की रक्षा कर सकूँ।

अम्मी : देश की रक्षा करने के लिए तू ही बच गया है सो ट्रेनिंग में जायेगा ? तेरी कक्षा के अन्य विद्यार्थी चले जायेंगे।

करीम : अगर सभी माताएँ ममता का मोह नहीं छोड़ेंगी तो क्या देश की रक्षा करने वाला कोई नहीं रहेगा ? मैंने सोचा कि मेरी अम्मी हँसते-हँसते कहेगी कि जा बेटा, आज के होनहार बालकों पर देश की जिम्मेदारी आयेगी तब मेजर शैतानसिंह, अब्दुल हमीद की तरह रक्षा करेंगे। परन्तु तुमने............।

: मेरे सामने हठ कर रहा है। जीभ चलाता है। आने दे अपने अब्बा को, वही तेरी खबरगिरी लेंगे। मैं यह नहीं समझती थी कि तू मेरे सामने बड़ी-बड़ी बातें करेगा। मैं जाने के लिए मना कर रही हूँ और तू जिद्द कर रहा है।

: मैंने ऐसी कोई बात नहीं कही जिससे कि आपका अपमान हो मैंने आज तक आपकी इज्जत की, है और करूंगा। माँ की रक्षा करने वाला ही देश की रक्षा कर सकता है। देश की होमगार्ड की ट्रेनिंग जरूर करूंगा। मैं फालतू बात करता तो आप मुझ पर बिगड़तीं।

: अच्छा! तू ठहर, आने दे तेरे अब्बा को, वही तुझे समझायेंगे।

: अब्बा? कभी भी मना नहीं करेंगे। अब्बा तो खुशी-खुशी यही कहेंगे कि जा बेटा देश की रक्षा के लिए तेरे दादाजी, चाचाजी तथा मैंने सेवाएँ की हैं, तू भी कर!

: हाँ-हाँ! चाचाजी, दादाजी सभी देश के लिए शहीद हो गये परन्तु तू मेरा इकलौता बेटा है इसलिए ही मना कर रही हूँ।
(बातों ही बातों में करीम के अब्बा आ जाते हैं।)

: (करीम से) क्या बात है? कौनसी बात को लेकर माँ-बेटे कहा-सुनी कर रहे हो?

: अब्बा, मैं पाठशाला की ओर से होमगार्ड की ट्रेनिंग में जाना चाहता हूँ।

: जरूर....जरूर मेरे सपूत। मैं इसी दिन की राह में था कि देश हेतु उमंग तुम्हारे हृदय में उमड़े। आखिर वंश का खून रंग लाया ही। देश....मादरे वतन भारत, उसकी रक्षा करना हर भारतीय का फर्ज है।

: क्या हमने ही देश की रक्षा का भार लिया है? मेरा इकलौता पुत्र होमगार्ड की ट्रेनिंग ले और अपने पूर्वजों की तरह देश के लिए शहीद हो जाये? मैं ऐसा कभी नहीं करने दूंगी।

: (क्रोध में) कैसी बातें कर रही हो? ऐसी बातें करते हुए तुम्हें शर्म नहीं आती? करीम की अम्मी तुमने उस धरती पर जन्म लिया जहाँ की माताओं ने अपने पुत्रों को देश के लिए अर्पण कर दिया।

दुर्गावती ने अपने वीर पुत्र नारायण को सोलह वर्ष की उम्र में ही युद्धभूमि में भेज दिया। जिस धरती की नारियों ने केवल स्वामी-भक्ति हेतु पुत्र के प्राण न्योछावर कर दिये, उस पन्ना का नाम भूल गई हो? क्या उसके इकलौता पुत्र नहीं था? देश पर कुर्बानी देने वाले मर कर भी अमर हो जाते हैं जैसे शहीद भगतसिंह तथा सोहनलाल। तुम्हारी तरह सभी माताएँ ममता का मोह रखेंगी तो देश का मोह कौन रखेगा? करीम की अम्मी गर्व कर अपनी औलाद पर जिसके मन में देश का मोह है। मैं अपने भाग्य पर तभी गर्व करूंगा जब कि तू अपने मुँह से करीम को ट्रेनिंग में जाने के लिए सच्चे मन से कहेगी।

अम्मी : (भावना की मुद्रा में) मुझे माफ करना करीम के अब्बा, मैं ममता के मोह में अंधी हो गयी थी। आपने मेरी आँखें खोल दी। मैं करीम को हँसते-हँसते सच्चे मन से विदा करूंगी।

अब्बा : करीम की माँ, इस प्रकार की औरतों पर देश को गर्व है जो कि आन के लिए सर्वस्व त्याग देती हैं परन्तु पीछे नहीं हटतीं।

करीम : अब्बा, मुझे आप पर गर्व है। आपको विश्वास दिलाता हूँ कि मैं होमगार्ड की ट्रेनिंग कर देश का रक्षक बनूंगा। देश की सेवा करने वाला ही सच्चा लाल होता है क्योंकि माँ केवल जन्म देती है, धरती माता पालती है? उसी धरती माता की रक्षा करके आपका तथा मम्मी का सिर ऊँचा करूंगा। मैं उन बलिदानियों के नाम पर कभी भी कलंक नहीं लगने दूंगा जिन्होंने देश के लिए सिर कटवाया परन्तु झुकाया नहीं।

○○○

प्रदीप : तो प्रधानाध्यापक जी ने हमारी माँगें पूरी नहीं की ?

विजय : (हाथ उठा कर मुक्का तानते हुए) बिलकुल नहीं, बिलकुल नहीं। उन्होंने विद्यालय से निकालने की धमकी ग्रौर दी है।

नीलम : (साश्चर्य) अच्छा ! तब तो कुछ करना ही होगा।

गणेश : (खड़े होते हुए उत्तेजनापूर्वक) क्यों नहीं ! क्या हम भेड़-बकरी हैं ? यदि वे इतनी साधारण सी माँगें स्वीकार नहीं करते तो हमें सीधी कार्यवाही करनी ही होगी।

प्रदीप : सीधी कार्यवाही से तुम्हारा क्या मतलब है गणेश ?

विजय : यही कि हड़ताल जारी रखी जाय, विद्यालय में तोड़-फोड़ की जाय, किसी भी अध्यापक का कहना नहीं माना जाय। ग्रौर..........

नीलम : (बात काटते हुए) ग्रौर यदि वे समझाने-बुझाने की कोशिश करें तो ?

विजय : उनकी कोई बात नहीं सुनी जाय। प्रधानाध्यापक जी का घेराव किया जाय, जुलूस निकाले जायें ग्रौर नारे लगाये जायें। क्यों ठीक है न ?

सभी : बिलकुल ठीक है।

विजय : तो नारों को तैयार कर उन्हें दस-बारह गत्तों पर मोटे-मोटे अक्षरों में लिखने का काम सुभाष ग्रौर नरेन्द्र का है। लड़कों को संगठित कर जुलूस निकालने का काम प्रदीप और नीलम का है। यह ध्यान रखना है कि ग्राज तीन बजे तक जुलूस विद्यालय के क्रीड़ांगन पर लौट आये। हम वहाँ तैयार मिलेंगे। वहाँ भाषण होंगे ग्रौर ग्रागे का प्रोग्राम बनेगा।

नीलम : ठीक है।

प्रदीप : तो ग्रब चलें ? बहुत से लड़के घर चले गये होंगे। सभी को सूचना करानी होगी।

नीलम : एक बजे जुलूस निकाला जाय ग्रौर सदर बाजार में घुमाकर क्रीड़ांगण पर लौटा जाय।

विजय : बहुत ठीक । अच्छा अब चला जाय ?

सब उठकर : हाँ–हाँ, चलो ।

(सब का निष्क्रमण, पटाक्षेप)

द्वितीय दृश्य

स्थान : प्रधानाध्यापक-कक्ष । प्रधानाध्यापक तथा दो अध्यापक चिन्तातुर बैठे हैं ।

प्रधानाध्यापक : देखिये अब गोविन्द आता ही होगा ।

पहला अध्यापक : वर्मा जी वहाँ करने क्या गये थे ?

प्रधानाध्यापक : मैंने भी उन्हें रोका था परन्तु वे माने नहीं । जब विद्यार्थी क्रीड़ांगण पर सभा करने जा रहे थे तभी वे उन्हें समझाने पहुँचे ।

दूसरा अध्यापक : ओह, अकेले ही ?

प्रधानाध्यापक : हाँ, उन्हें देखकर पहले तो विद्यार्थियों ने खूब जोर शोर से नारे लगाये और जब वे उन्हें समझाने पर ही तुले रहे तो कुछ ने पत्थर फेंक दिये और एक-दो पत्थर उनके सिर में आ लगे ।

पहला अध्यापक : क्या खून बहुत बह गया ?

प्रधानाध्यापक : हाँ, दशा कुछ गंभीर ही है । मैं डॉक्टर को फोन कर चुका हूँ । पुलिस को भी फोन किया है । कुछ पुलिसमैन आ जायें तो यहाँ की सुरक्षा का भार सौंपकर मैं अस्पताल जाना चाहता हूँ ।

दोनों अध्यापक : ठीक है, हम भी आपके साथ चलेंगे ।

प्रधानाध्यापक : (कुछ चिन्तित स्वर में) समझ में नहीं आता कि इस देश और जाति का क्या होगा, दिन पर दिन अनुशासनहीनता बढ़ती जा रही है ।

पहला अध्यापक : और क्या होना है सिवा पतन के ?

दूसरा अध्यापक : और मजेदार बात यह है कि इन सब के लिए दोषी हैं अध्यापक ।

प्रधानाध्यापक : हाँ, कहा तो यही जाता है ।

पहला अध्यापक : (उत्तेजित होकर) क्या कहा जाता है इसे छोड़कर यह बताइये कि [illegible] कौन दोषी है ?

प्रधानाध्यापक : उनकी शिक्षा और उनके आचरण का प्रभाव उनके शिष्यों पर पड़ना चाहिये।

दूसरा अध्यापक : ऐसा सोचने वाले यह क्यों भूल जाते हैं कि आज का शिक्षक एक कक्षा में एक कालांश के लिए ही जाता है और एक कक्षा में लगभग चालीस विद्यार्थी होते हैं।

पहला अध्यापक : और वह कक्षा-प्रवेश से कालांश की समाप्ति तक शिक्षण में व्यस्त रहता है। कालांश के पश्चात् उनका सम्पर्क उन विद्यार्थियों से बिलकुल नहीं रहता है।

दूसरा अध्यापक : ऐसी दशा में शिक्षक का क्या प्रभाव पड़ेगा ?

प्रधानाध्यापक : आपका कहना ठीक है, परन्तु भारतीय परम्परा के अनुसार शिष्य पर गुरु के आचरण का प्रभाव माना जाता है। वे आज की स्थिति पर कहाँ विचार करते हैं ?

पहला अध्यापक : जब गुरु के यहाँ रह कर शिष्य पढ़ते थे तब की बात और थी। तब गुरु-शिष्य हर समय साथ रहते थे और समाज से अलग भी रहते थे।

दूसरा अध्यापक : तब के शिष्य गुरु के प्रति असीम श्रद्धा रखते थे और सबसे बड़ी बात यह थी कि उन्हें कायदे-कानून सिखाने वाला कोई नहीं था। आज तो विद्यार्थियों को अपने शिक्षकों से अधिक उनकी नौकरी के कायदे कानून मालूम हैं।

प्रधानाध्यापक : वास्तव मे आज सम्बन्ध गुरु-शिष्य का नहीं, शिक्षक और शिक्षित का है।

पहला अध्यापक : आज की शिक्षा क्या शिक्षा है ?

प्रधानाध्यापक : नहीं है, और इस कारण भी अनुशासनहीनता बढ़ रही है।

दूसरा अध्यापक : वास्तव में इस अनुशासनहीनता के कई कारण हैं।

प्रधानाध्यापक : हाँ, निकम्मी शिक्षा, बालक का वातावरण तथा समाज और सरकार का दृष्टिकोण इसके लिए मुख्य रूप से उत्तरदायी हैं।

(बाहर से आवाज सुनाई देती है)

—क्या मैं आ सकता हूँ ?

प्रधानाध्यापक : अवश्य आ सकते हैं।

(पुलिस वर्दी में एक हैड कान्स्टेबुल का प्रवेश)

हैडकांस्टेबुल : (अभिवादन करते हुए) सबसे पहले मैं दो बातों के लिए क्षमायाचना करता हूँ। एक तो मैंने आपकी बातों में विघ्न डाल दिया, दूसरे मैंने आपकी कुछ बातें अनधिकारपूर्वक सुन ली हैं। क्या मैं भी इस चर्चा में कुछ भाग ले सकता हूँ ?

प्रधानाध्यापक : दीवानजी यह विद्यालय है, यहाँ गोपनीय बातें नहीं होती हैं अतः न तो आपको क्षमायाचना की आवश्यकता है, न चर्चा में भाग लेने में संकोच करने की।

हैडकांस्टेबुल : यह तो स्पष्ट है कि यह शिक्षा निकम्मी है क्योंकि नीरस होने के साथ ही यह उद्योगहीन भी है। इससे केवल सूचनात्मक ज्ञान, स्मृति और कुछ समझने की शक्ति का विकास होता है परन्तु बालक के वातावरण से आपका अभिप्राय शायद उसके घर के वातावरण से है ?

प्रधानाध्यापक : आपने ठीक समझा है। बालक विद्यालय में लगभग छह घण्टे रहता है अर्थात् एक दिन के चौथे भाग, शेष समय वह घर पर या विद्यालय के बाहर रहता है। अवकाश के दिनों में तो उसका विद्यालय से कोई सम्पर्क रहता ही नहीं है। इसी के साथ एक बात और है कि अब अशिक्षित और अर्द्ध सभ्य घरों से बहुत बड़ी संख्या में बालक पढ़ने आते हैं।

हैडकांस्टेबुल : एक बात और, समाज और सरकार के दृष्टिकोण से आपका क्या अभिप्राय है ?

प्रधानाध्यापक : समाज और सरकार शिक्षा और शिक्षक के प्रति जैसे विचार और भाव रखेंगे वैसा ही व्यवहार उनके साथ करेंगे और उसका प्रभाव बालकों पर भी पड़ेगा।

पहला अध्यापक : आज से हजार वर्ष पहले भारतवर्ष में गुरु पर क्या पत्थर फेंके जा सकते थे ? और यदि कोई ऐसा कर बैठता तो क्या राज्य और समाज आज की तरह उपेक्षा करते ?

प्रधानाध्यापक : हां देखिये, इस ओर न तो अभी तक सरकार ने ही कोई ध्यान दिया है न समाज ने। किसी ने पूछा भी नहीं कि जिन शिक्षकों के

चोट लगी है वे कैसे हैं ? न तो वे शिक्षक कोई अपराधी थे और उन्हें उचित दण्ड मिल गया, चलो छुट्टी हुई।

हैडकांस्टेबुल : निस्सन्देह यह व्यवहार निन्दनीय है। मैं आपका बड़ा आभारी हूँ कि आपने मेरे मन से कुछ गलत धारणायें निकाल दीं। अब आज्ञा दीजिये कि हम क्या करें ? मेरे साथ दस कान्स्टेबुल हैं।

(एक चपरासी का प्रवेश)

चपरासी : (अभिवादन करके) साहब, वर्मा साहब अब ठीक हैं।

प्रधानाध्यापक : अच्छा, बड़ी अच्छी खबर है।

(सबके मुख पर प्रसन्नता झलकती है)

प्रधानाध्यापक : (हैडकांस्टेबुल की ओर अभिमुख होकर) हम लोग अस्पताल जा रहे हैं। आप विद्यालय की सुरक्षा का उत्तरदायित्व सम्हालें। अब तक बहुत सी मेज-कुर्सियाँ टूट चुकी हैं, खिड़कियों के शीशे भी कम नहीं टूटे हैं।

हैडकांस्टेबुल : अब हम आ गये हैं। अब कुछ नहीं टूटेगा-फूटेगा।

प्रधानाध्यापक : (उठते हुए) अच्छा, अब हम जा रहे हैं।

हैडकांस्टेबुल : बहुत अच्छा साहब (अभिवादन करते हैं)

(प्रधानाध्यापक तथा दोनों अध्यापक जाते हैं)

तृतीय दृश्य

दृश्य : अस्पताल का एक कक्ष। एक व्यक्ति सफेद चद्दर ओढ़े सिर पर पट्टी बँधवाये लेटा है। पलंग के पास स्टूल पर एक प्रौढ़ स्त्री बैठी हुई है, वह चिन्ता में लीन है पास ही विजय खड़ा है। एक अन्य स्टूल पर सुराही और उस पर ढका गिलास है।

स्त्री : कहो विजय तुम्हारी हड़ताल के क्या हाल हैं ?

विजय : (विह्वल कण्ठ से) माँ, मुझे माफ कर दो माँ।

स्त्री : (आवेश से) नहीं, तुम हड़ताल करो और शिक्षकों पर पथराव करो।

विजय : (अवरुद्ध कण्ठ से) माँ !

स्त्री : क्यों किसी का सिर फूटे तो फूटे, तुम्हें इसको चिन्ता क्यों ? हड़ताल ऐसे कमजोर दिल से कैसे सफल होगी ? सारे शिक्षक तुम्हारे शत्रु हैं, सारा समाज तुम्हारी उपेक्षा करता है। तुम ऐसी सख्त कार्यवाही नहीं करो तो तुम्हें कौन जाने माने ?

विजय : (माँ के पैरों में गिर कर) माँ-माँ (कण्ठावरोध)

माँ : (रोते हुए) हट जा मेरे सामने से, मैं तेरी माँ नहीं। तेरी बजाय पत्थर ही होता तो अच्छा रहता। तू मेरा बेटा होता तो मुझे विधवा बनाने की कोशिश करता ? यदि इन्हें कुछ हो जाता तो मुझे और छोटे-छोटे बच्चों को कौन रोटी देता ? जवानी इसलिये नहीं आती कि किसी के प्राण लिये जायें।

विजय : (आँसू पोंछते हुए अवरुद्ध कण्ठ से) माँ, मुझे माफ करो मैं अब कभी ऐसा नहीं करूँगा। (पैर पकड़ कर) विश्वास करो माँ !

(दोनों अध्यापकों के साथ प्रधानाध्यापक का प्रवेश। विजय की माँ उठकर खड़ी हो जाती है, विजय अपराधी की भाँति नत-मस्तक मौन खड़ा रहता है।)

विजय की माँ : (नमस्कार करते हुए) आइये।

प्र. अध्यापक : बैठिये, बैठिये ! वर्मा जी की तबियत कैसी है ?

विजय की माँ : अभी नींद आयी है। वैसे ठीक हैं, खून बहुत बह जाने के कारण कमजोरी आ गयी है। सिर में पाँच टाँके आये हैं, एक इंच गहरा घाव भी है।

प्र. अध्यापक : डॉक्टर साहब ने क्या कहा है ?

विजय की माँ : कह रहे थे कि अब कोई डर नहीं है। हाँ कुछ दिन आराम करना होगा।

प्र. अध्यापक : (विजय की ओर देखकर) क्यों विजय यही माँग थी तुम्हारी ?

(विजय मौन खड़ा रोता रहता है)

पहला अध्यापक : अच्छा भाभी जी किसी प्रकार की सहायता की आवश्यकता हो तो विजय को निस्संकोच किसी के भी घर भेज देना।

प्र. अध्यापक : वैसे समय-समय पर हम आते रहेंगे।

नीलम : भाइयों, आज हमारी हड़ताल विना शर्त समाप्त हो गयी है, यह तो आपको मालुम ही है और हमारा नेता विजय अस्पताल में अपने पिताजी की सेवा कर रहा है।

सुभाष : (अपने स्टूल से खड़ा होकर) वे केवल उसके पिता ही नहीं हमारे गुरू भी हैं।

नीलम : हाँ हैं, परन्तु हम में से ही किसी ने उन पर पत्थर फैंक कर उन्हें गम्भीर रूप से घायल कर दिया है।

प्रदीप : (अपने स्टूल से उठकर सामने आते हुए) और यह हमारा गम्भीर अपराध था। इसी कारण यह हड़ताल इस रूप में समाप्त करनी पड़ी।

सुभाष : केवल इतना ही पर्याप्त नहीं होगा, हमें कुछ प्रायश्चित भी करना होगा। क्या सब इसके लिए तैयार हैं ?

सभी समवेत स्वर में : हाँ, हम तैयार हैं।

नीलम : अब बताओ तुमने क्या प्रायश्चित सोचा है ?

सुभाष : अच्छा भाइयों सुनो, हमारे चौकीदार की रिपोर्ट के अनुसार हमने चालीस स्टूलें और तीस डेस्कें तोड़ डाली हैं। स्कूल में फर्नीचर की पहले ही कमी थी। किसी भी प्रकार यह सामान इस सत्र में नहीं आ सकता। इसलिये अब कोई न कोई कक्षा इस सामान से वंचित रहेगी।

प्रदीप : हमारी कक्षा सबसे बड़ी कक्षा है, अतः यह त्याग हमें करना चाहिये।

नीलम : अवश्य ही, क्योंकि यह सब कुछ हमारे ही नेतृत्व में हुआ है।

सुभाष : क्या यह सभी को स्वीकार है ?

समवेत स्वर : हां, हम दरी बिछाकर जमीन पर बैठेंगे।

सुभाष : अब हमें कम से कम इस सत्र में हड़ताल जैसी बात और पथराव व घेराव जैसा व्यवहार कभी नहीं करने की प्रतिज्ञा करनी चाहिये।

समवेत स्वर : हम सहमत हैं।

सुभाष : तब मेरे अच्छे भाइयो, तुम्हें धन्यवाद !

सेना और साहस

सुरेन्द्र अंचल

* * *

[साधारण रंगमंच ! एक मुगल सरदार आरवखाँ बेचैनी से टहल रहा है]

नेपथ्य : शाबाश आरवखाँ ! हम तुम्हारे हौसले की दाद देते हैं ! शहंशाह बाअदब बागी अमरसिंह को गिरफ्तार कर लाने की इजाजत देते हैं ! मगर हुशियार ! याद रखना कि वह राजपूत है ! जाओ ।"

[कुछ क्षण मौन]

"मगर हुशियार ! याद रखना कि वह राजपूत है ! जाओ !"

आरवखाँ : (उत्तेजित) बागी का सर कुचल दूँगा उसका कवाब बना दूँगा—अल्ला पाक की कसम !—मगर शहंशाह अकबर का हुक्म उसके सरकलम का नहीं है !—उसे जीते जी पकड़ लाने का है ! हूँ ! (सीना ठोककर) आरवखाँ की बादलों सी उमड़ती फौज के सामने मुट्ठी भर राजपूत ! (अट्टहास) हा""हा""हा""हा !""सिपाही !

(एक सिपाही आकर कोर्निस करता है !)

आरवखाँ : कुरबान अली ! हम राजा साहब पृथ्वीराज से मिलना चाहते हैं।

[सिपाही उसी तरह आदाब करता हुआ वापस चला जाता है।]

आखिर इन राजपूतों के पास ऐसी क्या वजह है कि वे इतना गजब का हौसला रखते हैं—एक ओर फौज का उमड़ता हुआ दरिया, दूसरी ओर हौसला सिर्फ हौसला !"" ""हूँ !

[पृथ्वीराज का प्रवेश]

आरबखाँ : आइये राजा साहब ! शाही दरबार में आपने जो अलफाज़ थे—याद हैं ?

पृथ्वीराज : हाँ, जरूर याद हैं ! अमरसिंह को आप जिंदा पकड़ने का देखते हैं ! मैं कहता हूँ वह गिरफ्तार नहीं किया जा सकता। भय है कि उसे पकड़ने वाले का सर·······!

आरबखाँ : (अट्टहास) राजा साहब ! मैं शाही बागी अमरसिंह की बोटी काटकर कौवों को खिला सकता हूँ !—किन्तु नहीं जिन्दा पकड़कर आपके सामने लाऊँगा ! आप चाहें तो उसे कर दें ! मुझे भी जागे हुए सिंह से लड़ने में ही मजा आता है हैं हैं हैं···········!

पृथ्वीराज : वह बागी है इसलिए मेरा भी दुश्मन है किन्तु मेरा भाई नाते मैं उसे खूब जानता हूँ ! वह मरना भी जानता है मारना भी !

आरबखाँ : राजाजी आप आरबखाँ सिपहसालार से ऐसी बातें कर र वह मुट्ठी भर राजपूत मेरी फौज की आँधी के सामने ति तरह उड़ जायेंगे।

पृथ्वीराज : आजादी और अपनी आन बान के लिए लड़ने वालों के पास ताकत से भी बड़ी ताकत होती है आरब खाँ जी !

[सिपाही का प्रवेश]

सिपाही : हुजूर, फौज रवाना होने की इजाजत चाहती है !

आरबखाँ : अच्छा अब हम प्रस्थान करेंगे ? राजा साहब आरब खाँ वार का पानी देखिये !

[आरब खाँ का प्रस्थान]

पृथ्वीराज : (स्वकथन) जाओ ! आरब खाँ जाओ, तुम्हारी मौत तु लिए जा रही है ! जाओ तुम भी देखो सेना बड़ी होत साहस······ हौसला !

[पृथ्वीराज का प्रस्थान-मंच पर दूसरा पर्दा खुलता है-बादशाह कक्ष सम्राट अकबर बेचैनी से टहल रहे हैं ! एक ओर पर्यंक बिछा है—टेबुल लगी है ! टेबुल पर एक पीतल का एक छोटा घण्टा टँगा है।]

अकबर : (स्वगत)…… …यह शाही दरबार की इज्जत का सवाल है। अमरसिंह बागी है—इसे सजा देनी ही होगी ! अगर इस तरह छोटे बड़े राजा लोग सिर उठाने लगे तो मुगलिया सल्तनत पर मुश्किल आ जायेगी ! (क्षण भर मौन) अमरसिंह जैसे बहादुर तो हमारे दरबार की शोभा बढ़ाने चाहिये ! (क्षण मौन, सहम रुककर) आरब खाँ की तरह जिन्दगी खतरे में है !—हाँ जरूर खतरे में है ! —(डर गया) खतरे में है ! नहीं ऐसा नहीं हो सकता (कुछ शान्त रहकर) शाबाश अमरसिंह ! हम तुम्हें बाइज्जत हमारे दरबार में अच्छा ओहदा देंगे। इतिहास के पन्ने बतायेंगे कि अकबर बहादुरी की कद्र करना जानता था। राजपूत बहादुर कौम है। इस कौम की बहादुरी की चाबी है उनका आजादी के लिए दीवानापन—हौसला !

[घण्टा बजाता है !—पहरेदार का प्रवेश]

हम राजा साहब को याद फरमाते हैं

(सिपाही का प्रस्थान)

………क्या सचमुच अमरसिंह जिन्दा नहीं पकड़ा जा सकता !

………आरब खाँ जरूर पकड़ लायेगा ! आखिर इतनी बड़ी फौज और मुट्ठीभर बागी………………

(पृथ्वीराज का प्रवेश)

पृथ्वीराज : (झुककर सलाम करते हुए) शहंशाह की खिदमत में पृथ्वीराज हाजिर है !

अकबर : राजा साहब ! आरब खाँ की कोई खबर आई ?

पृथ्वीराज : जहाँपनाह ! अमरसिंह को घेर लिया गया है।

अकबर : हाँ, मैं जानता था, आरब खाँ बहादुर है—वह अमरसिंह को जरूर पकड़ लायेगा।

पृथ्वीराज : नामुमकिन ! जहाँपनाह गुस्ताखी माफ हो, लेकिन यह नामुमकिन है। वह शाही हुकूमत का बागी है, इसलिये मेरा भी दुश्मन है ! लेकिन है तो वह राजपूत ही न ! वह मेरा भाई है, उसके खून को मैं जानता हूँ। आरब खाँ का सलामत लौट आना मुश्किल है।

अकबर : (उत्तेजित) पीथल जी ! यह नहीं हो सकता । हम जानते हैं उसके पास हौसला है किन्तु फौज तो नहीं है ।

पृथ्वीराज : गुस्ताखी माफ हो आलमपनाह ! फौज कभी नहीं जीता करती— हौसला जीतता है ।

अकबर : अच्छा ! पृथ्वीराज ! हम तुम्हारे भाई का हौसला देखेंगे । वह हमारी फौज की शमशीर के सामने कैसे टिकता है । जब से आरब खाँ ने कूच किया है हम बड़ी बेचैनी से फैसले का इन्तजार कर रहे हैं । कई बार हमने अमरसिंह के बहादुरी से लड़ने के ख्वाब देखे हैं । अच्छा अब आप जाइये— हम आराम करेंगे ।

[पृथ्वीराज का प्रस्थान, अकबर एक मसनद पर लेटता है, मंच पर सहसा अन्धकार होकर एक परदा उठता है । रंगीन प्रकाश से भीतरी दृश्य स्पष्ट दीखता है, एक पलंग पर अमरसिंह सोया हुआ है । दीवारों पर ढालें और तलवारें लटकी हुई हैं, कुछ राजपूत सरदार खड़े हैं । एक चारणी कन्या सफेद वस्त्र पहने पलंग के दूसरी ओर खड़ी है ।]

एक सरदार : आरब खाँ शाही फौज के साथ लड़ने आ गया है, अमरसिंह जी अभी अफीम खाकर सोये हुए हैं ।

दूसरा सरदार : दाता अफीम खाकर सोते हैं । तो फिर जगते हैं अपने आप ही । यदि किसी ने बीच में जगा दिया तो उसका सर कलम !

पहला सरदार : किन्तु जगाना तो पड़ेगा ही ।

युवती : मैं जगाती हूँ ।

पहला सरदार : पद्मा तुम ! नहीं, नहीं ! जानती नहीं, सर कलम हो गया तो कन्या वध का महान पाप ! नींद में यह ध्यान नहीं रहेगा कि सामने पद्मा है कि कोई दूसरा ।

युवती : पद्मा कायर नहीं है । सामने दुश्मन ललकार रहा है और हम अपने सर की सलामती चाह रहे हैं ! नहीं ! मेरा काव्य बल और कब काम आयेगा ? मैं चारण कन्या हूँ । मेरा काम ही सोये शौर्य को जगाना है ।

(कविता बोलती है)

सहर लूटतो तू सदा देश करतो सरदद
कहर नर पड़ी थारी कमाई,
अमर ! अकब्बर तणी फौज आई,
नींदहर सिंह वरमार करतो वसूं !

अरब खाँ अठिव आवियों आग आसमाण
निवारो नींद कमवज अवे नीडर नर !
अमर ! अकब्बर तणी फौज आई !

(अमरसिंह करवट बदल लेता है) पद्मा पुनः कहती है—

आरब खाँ ठहर, अमरसिंह जाग
गया है तू बच कर नहीं जा सकता !
नहीं जा सकता ! नहीं जा सकता !

अमरसिंह : (सहसा तलवार खींच कर उठ खड़ा होता है) हाँ, नहीं जा सकता! आरब खाँ जिन्दा नहीं जा सकता !

पद्मा : वीर वर अमरसिंह की…………!

सभी : (तलवारें खींच कर) जय हो !

पद्मा : भैया ! दुश्मन दरवाजे पर खड़ा ललकार रहा है। दिल्ली से दाता पृथ्वीराज का पत्र भी आया है।' उन्होंने यह शर्त रखी है कि अमरसिंह जीवित नहीं पकड़ा जा सकता और आरब खाँ के भी जीवित लौटने की और आशा नहीं है ।

अमरसिंह : आरब खाँ ! अमरसिंह ने गुलाम रहना नहीं सीखा। यह भवानी तेरे खून की प्यासी है। इस तलवार पर बाई पद्मा के दोहों की धार लगी हुई है।—(तलवार उठाकर हर-हर महादेव)

सभी : हर हर महादेव ! (एक ओर से सब का प्रस्थान)

[नेपथ्य से युद्ध का शोर-गुल]

आरबखाँ : (नेपथ्य) बहादुरो घेर लो ! अमरसिंह को जिन्दा पकड़ लो !

(प्रवेश)

[मंच पर आरबखाँ और अमरसिंह का लड़ना ! सहसा अंधकार ! परदा गिरना ! मुख्य मंच पर प्रकाश—अकबर का पूर्ववत सोये हुए होना]

अंतिम बलिदान

देवप्रकाश कौशिक

० ० ०

पात्र-परिचय

निर्मला	:	१८ वर्ष की एक सुन्दर लड़की कैन्सर से पीड़ित
निर्मला के पिता	:	एक अध्यापक, आयु लगभग ५० वर्ष
निर्मला की माँ	:	आयु लगभग ४० वर्ष
कमलेश	.	निर्मला की छोटी बहन, आयु १५ वर्ष
डॉक्टर मोहन	:	प्रसिद्ध तथा कुशल डॉक्टर, आयु लगभग ३० वर्ष
प्रकाश	.	निर्मला का बड़ा भाई, आयु २५ वर्ष

पहला दृश्य

[मध्यम परिवार का एक साधारण-सा कमरा। समय रात के ८ बजे। कमरे मे एक चारपाई पर निर्मला लेटी हुई है। एक लम्बे समय से कैन्सर से पीड़ित होते हुये भी उसके मुख मण्डल पर प्रसन्नता की आभा है। एक-एक कर खाँसती है और नीचे रखे तसले में थूकती है। एक मेज पर कुछ दवाइयाँ पड़ी हुई हैं। चारपाई के आस-पास कुछ कुर्सियाँ पड़ी हुई है। इस समय कमरे में निर्मला के पिता तथा डॉक्टर मोहन बैठे हैं। डॉक्टर मोहन का इस परिवार से घनिष्ट सम्बन्ध है।

कमरे में एक कोने में एक मेज पर रेडियो बज रहा है। रेडियो काफी धीमी आवाज से बज रहा है। रेडियो के यह कहने पर कि "अब हिन्दी में समाचार होगें" सब ध्यानपूर्वक सुनने लग जाते है। निर्मला भी तकिये के सहारे बैठ जाती है।

पिता : जलूस में तू भी गई थी ?

कमलेश : हां पिताजी मैं जलूस से ही तो आ रही हूं। हमारे यहां लड़कियों ने एन. सी. सी. में नाम लिखाया है। मैंने भी एन. सी. सी. में नाम लिखवा लिया है।

पिता : यह तूने बहुत अच्छा किया बेटा। मेरी दीदी भी खून देने को कह रही थी, जबकि उसे खुद खून की जरूरत है।

कमलेश : दीदी को तो मैं खून दूंगी पिताजी !

निर्मला : (कृत्रिम हंसी हंसते हुए) तुझ में बहुत खून है न जो मुझे खून देगी !

कमलेश : दीदी तुममें तो मेरे से कम से कम दस गुना खून होगा। और फिर जब मेरे खून देने से तुम जल्दी ठीक हो जाओगी तो मारे खुशी के मेरा खून फिर बढ़ जायेगा।

निर्मला : अच्छा जा ! डॉक्टर भैय्या के लिए मां से कुछ चाय-वाय ले आ।

(कमलेश कमरे से बाहर जाती है, निर्मला संकेत से डॉक्टर मोहन को अपने पास बुलाती है।)

निर्मला : भैय्या मेरी एक बात मानोगे ?

डॉक्टर : (हँसकर, कौनसी बात है बोल न ? मैंने आज तक तेरी कोई बात टाली है !

निर्मला : भैय्या.........मैं नेत्र दान करना चाहती हूं।

डॉक्टर : (आश्चर्य चकित होकर) निर्मला.......तू.......तू.......यह क्या...............कह रही है ?

निर्मला : (दृढ़ स्वर मे) मैं ठीक कह रही हूँ भैय्या ! और मैं कर ही क्या सकती हूँ अपने देश के लिये।

डॉक्टर : (प्यार से डांटते हुये) निर्मला पागल मत बन ! इस तरह हिम्मत नही हारते हैं। तू ठीक हो जायेगी जल्दी। तू फिर चाहे जैसे भी देश की सेवा करना।

निर्मला : भैय्या, तुम सब कुछ जानते हुए भी अनजान बन रहे हो। तुम डॉक्टर हो। तुम्हारा काम ही धीरज बँधाना है। पर मुझे पता है

मैं कुछ ही देर की मेहमान हूँ। (डॉक्टर तथा निर्मला के पिता की आँखें छलछला आईं उसे देखकर)

डॉक्टर भैय्या यह तुम क्या कर रहे हो, डॉक्टर होकर अपने कर्त्तव्य से दूर जा रहे हो। अभी तो तुम मुझसे कह रहे थे (खांसती है) कह रहे थे कि हिम्मत नहीं हारनी चाहिये और अब तुम खुद दिल छोटा कर रहे हो। (फिर खाँसी आती है। थोड़ा रुक कर)
और.......और पिताजी आप........आप इतने बड़े होकर रो रहे हैं बच्चों की तरह। माँ देखेगी तो उनकी क्या दशा होगी और कमलेश बेचारी के दिल पर क्या प्रभाव पड़ेगा। छिः मुझे छोटा होकर भी आपको समझाना पड़ रहा है। (फिर खाँसती है, डॉक्टर और निर्मल के पिता आँसू पोंछ लेते हैं)

पिता : (कुछ बोलना चाहते हैं पर कण्ठ अवरुद्ध हो जाता है) बे....टा, बेटा तू....

निर्मला : मैं जानती हूँ आप कुछ कह नहीं सकते? आपका हृदय करुणा और ममता से भीग रहा है। पर आपको आज्ञा देनी ही होगी। बोलिये पिताजी....?

[कमरे में निस्तब्धता कुछ क्षण को हो जाती है। निर्मला कभी डॉक्टर की ओर, कभी अपने पिता की ओर देखती है।]

पिता : (अवरुद्ध स्वर में) मैं....मैं क्या कहूँ बेटा!

दूसरा दृश्य

समय—शाम के सात बजे हैं।

स्थान—पहले दृश्य वाला कमरा।

[इस समय कमरे में निर्मला, उनकी माँ, पिता, कमलेश तथा डॉक्टर बैठे हैं।]

निर्मला : (माँ से) माँ आज खाने को क्या बनाया है?

माँ : (प्रसन्न होकर) बोल क्या खायेगी बेटी? वैसे मैंने तेरी पसन्द की ही चीजें बनाई हैं—मक्का की रोटी और आलू मटर टमाटर की मज़ेदार सब्ज़ी! इसके अलावा सलाद भी है।

निर्मला : माँ यहीं ले आओ।

[निर्मला की माँ खाना लेने कमरे से बाहर जाती है।]

निर्मला : (पिता से) पिताजी प्रकाश भैय्या नहीं आये ?

पिता : बेटा, आता ही होगा। कल इतवार है न, उसके कॉलिज की छुट्टी होगी। अबके वह तेरे लिये घड़ी जरूर लावेगा, कह गया था न।

[निर्मला की माँ का खाना लिये हुये प्रवेश। निर्मला थोड़ा सा खाना खाती है। माँ थाली लेकर बाहर चली जाती है।]

निर्मला : (कमलेश से) कमलेश ! तू मुझे खून देने को कह रही थी न ?

कमलेश : हाँ दीदी, मैं तुम्हें खून दूँगी और ......।

निर्मला : पर अब मुझे खून की जरूरत नहीं रही।

कमलेश : (आश्चर्य-चकित होकर) क्यूँ दीदी ?

निर्मला : अब मैं खून का क्या करूँगी ? मैं तो वैसे ही ठीक हो रही हूँ। अब तू खून घायल जवानों के लिये देना। देगी न ?

कमलेश : हाँ दीदी, क्यों न दूँगी जब तुम कह रही हो ?

निर्मला : और देश की हर तरह से सेवा करना, जवानों के लिये ऊनी कपड़े भेजना, नर्स बन कर घायलों की सेवा करना। करेगी न मेरी अच्छी बहन ?

कमलेश : (कुछ न समझते हुए)......हाँ दीदी।

निर्मला : (खाँसते हुये) प्रकाश भैय्या नहीं आये।

डॉक्टर : आता ही होगा। क्यों दिल घबरा रहा है क्या ? ग्लूकोज ले लो जरा।

निर्मला : (टूटे स्वर में) ग्लूकोज ......हाँ ......दे दो ......पर .... ?
(थोड़ा-सा ग्लूकोज लेती है, कमलेश उसे पानी पिलाती है)
[बाहर पानी बरस रहा है, जिसकी आवाज धीमी-धीमी आती है]

निर्मला : बाहर पानी बरस रहा है क्या ?

डॉक्टर : हाँ निर्मला, हल्का-हल्का पानी बरस रहा है और बादल हैं।

[निर्मला डॉक्टर को पास बुलाती है]

निर्मला : भैया, मेरी बात जरा ध्यान से सुनना। समय कम है। देखो भैया तुमने मेरे लिए बहुत कुछ किया पर अब पिताजी और माँ का ध्यान रखना। दोनों वृद्ध हैं, और कमलेश (खाँसती है) कमलेश बच्ची है उसका ध्यान रखना (फिर खाँसती है)

(पिता भी उसके पास आ जाते हैं)

पिताजी जब प्रकाश भैया आएँ तो मेरा चरण स्पर्श कहना और ....और कहना........कहना कि वे अपना जीवन देश-सेवा में समर्पित कर दें और आप लोग भी जितनी हो सके देश-सेवा करें।

और........भैया............आपको मेरी बात याद है न....नेत्रदान ! पिताजी घबराना नहीं। ईश्वर को यही मंजूर था........दिल छोटा मत करना........माँ का, कमलेश का और अपना ध्यान रखना। रोना धोना नहीं........ नहीं तो मेरी आत्मा को दुःख पहुँचेगा।.... ....अच्छा पिता....जी....भैया....विदा !

[निर्मला के प्राण पखेरू एक हिचकी के साथ उड़ जाते हैं। कमला चीखकर उसके निर्जीव शरीर से लिपट जाती है। चीख सुनकर उसकी माँ दौड़ी-दौड़ी आती है।]

माँ : डॉक्टर भैया, देखो तो जरा क्या हुआ मेरी बच्ची को....... देखो न भैय्या !

(तभी बाहर का दरवाजा खुलता है और प्रकाश का सूटकेस और एक बण्डल लिये हुए प्रवेश। वह पानी से भीगा हुआ है।)

प्रकाश : ....निर्मला....निर्मला.... ... देख .. ....(सहसा शव देखकर).... ....हैं....यह क्या किया तूने .. क्या-क्या लाया हूँ तेरे लिए....यह देख सुनहरी घड़ी (भावावेश में आकर) और यह तेरे लिए साड़ी....

डॉक्टर : (समझाते हुए) प्रकाश पागल मत बनो। कुछ सोच समझ से काम लो। बूढ़े माँ-बाप और छोटी कमलेश को देखो। उनकी हालत क्या होगी ?....और ...और अपनी दीदी के अन्तिम शब्द सुनो ... उसने तुम्हारे लिए क्या कहा ......

प्रकाश : (भावावेश में).......... .. क्या कहा भैय्या मेरी दीदी ने.......

डॉक्टर : (भावुक होकर तथा सोचते हुए)..........उसने-उसने ... . कहा था कि.......कि प्रकाश भैय्या को मेरा चरण स्पर्श कहना।

राकेश : (खड़े होकर) जी–जी ।

मास्टर जी : हाँ बताओ न कि तुम्हें रोज रोज देरी क्यों हो जाती है ?

राकेश : (एकाएक) आप कौन होते हैं पूछने वाले, मेरा जब मन करेगा कक्षा में आऊँगा, जब मन करेगा चला जाऊँगा ।
(अध्यापक को पहले क्रोध आता है तदुपरान्त बड़े ही प्यार से एवं स्नेह सिक्त स्वर में) अरे आज क्या हो गया है तुम्हें ?

मास्टर जी : तुम्हें स्कूल तक छोड़ने कौन आता है ?

राकेश : (गुस्से से) मेरी गवर्नेस, मिस मेरी ।

मास्टर जी : (प्यार से) आज शाम को घर जाने से पूर्व मुझसे मिलना ।
(मास्टर जी चले जाते हैं ।)

राकेश : (अपने साथी से) रमेश आज नई फिल्म लगी है, मैं दोपहर वाले शो में जाऊँगा । बड़ा मजा आएगा ।

[नये अध्यापक का प्रवेश]

(उनके हाजिरी के लिए रजिस्टर खोलने के बाद राकेश उनके पास जाता है ।)

राकेश : सर आज मुझे घर पर कार्य है मेरी उपस्थिति लगा दीजिए ।

[राकेश का प्रस्थान]

[चौथा दृश्य]

(पहले दृश्य का ही कमरा, समय रात्रि के ८ बजे । मेरी हाथ में सुई धागा लेकर राकेश की बुशर्ट में बटन लगा रही है ।)

राकेश : मेरी, पिक्चर अच्छी थी न ?

मेरी : सभी पिक्चर अच्छी होती हैं । (बटन लगा कर) चलो चल कर सोयें, सुबह स्कूल भी तो तुम्हें जाना है ।)

राकेश : (मुँह बनाते हुए) हूँ मैं स्कूल नहीं जाऊँगा, कल तुम्हारे साथ सिनेमा देखने और घूमने जाऊँगा ।

मेरी : (समझाते हुए स्वर में) लेकिन उसके लिए तो रुपये चाहिये ।

राकेश : (चिन्तित स्वर में) रुपये ?

मेरी : हाँ रुपये, ऐसा करो अपने पापा से कहना कि दस रुपये चाहिए स्कूल में मास्टर जी ने मँगवाये हैं। (खुशी से) क्यों ठीक है न, तब मैं तुम्हें खूब सैर करा दूँगी।

राकेश : यह तो झूठ है।

मेरी : अरे, कौन से तुम्हारे पिताजी मास्टरजी से पूछने जायेंगे।

राकेश : (प्रसन्न हो जाता है) हाँ मेरी यह ठीक रहेगा।

[पाँचवाँ दृश्य]

(स्कूल का कक्षा-कक्ष, अन्य बालकों में राकेश नहीं है)

मास्टर जी : (अन्य बालकों से पूछते हुए) राकेश आज भी नहीं आया क्या? आपमें से कोई जानता है कि राकेश स्कूल क्यों नहीं आ रहा? (सभी विद्यार्थी नकारात्मक ढंग से प्रत्युत्तर देते है) (चिन्तित स्वर में) न जाने राकेश को इन दिनों क्या हो गया है? स्कूल में देर से आना, क्लास में समय से पहले घर चले जाना, आश्चर्य तो तब होता है जब अभिभावक भी उपेक्षामय व्यवहार करते हैं। (अपने आपसे) मैं आज जाकर पता लगाऊँगा।

[छठा दृश्य]

हम सब एक हैं

गणपत लाल शर्मा

* * *

[कुछ लोगों का बातचीत करते हुए प्रवेश]

मोहन : मैंने आज तक जितने 'राजस्थान-श्री' देखे, उनमें रमेश जैसा आज तक नहीं देखा।

विनोद : कल शारीरिक गठन और सौन्दर्य दोनों में उसकी जोड़ का एक भी प्रतियोगी नहीं था।

कमल : सितारों में चाँद-सा लग रहा था।

मोहन : क्या गठीला जवान है?

विजय सिंह : अङ्ग की एक-एक मच्छी बोल रही थी। यार 'कॉलेज श्री' तो मैं भी हूँ पर रमेश तो रमेश ही है।

मोहन : लो इन 'श्री' को तो आप भूल ही गये! इसकी भी थोड़ी……

विजय सिंह : मैं अपनी तारीफ करने की बात नहीं कहता।…खैर छोड़ो रमेश को आज बधाई देने चल रहे हो? वह कल मोर्चे पर जा रहा है। सेना का अनुशासन ही ऐसा है।

कमल : अभी चले चलें। क्यों?

सभी : हाँ ठीक है। [सबका प्रस्थान]

[रमेश कमरे में बैठा है। मोहन, विनोद, कमल सभी कमरे में प्रवेश करते हैं।]

सभी : (बारी-बारी से) बधाई रमेश बाबू, आपके 'राजस्थान श्री' चुने जाने पर सबकी ओर से बधाई स्वीकार करें।

रमेश : ओ हो! आईये बैठिये! यह सब आपकी शुभकामनाओं का फल है।

विजय : भाई कल तो स्टेज पर तुम ही तुम थे।

रमेश : तुम प्रतियोगिता में क्यों नहीं शामिल हुए?

विजय : मैं तुम्हारे सामने क्या हूँ।

रमेश : अरे! इसमें निराश होने की क्या बात! हौसला बढ़ता है, प्रदर्शन की तकनीक मालूम होती है।

विजय : हाँ! यह तो है ही।

(नौकर चाय लेकर आता है, रमेश चाय तैयार करता है)

रमेश : चाय में शक्कर कितनी डालूँ?

विजय : मैं तो एक चम्मच ही लेता हूँ।

कमल : भाई मैं तो मीठे के लालच से ही चाय पीता हूँ। मैं दो चम्मच लूँगा।

रमेश : जरूर, जरूर।

मोहन : इस चाय ने ही तुमको सीकिया पहलवान बना दिया है।

विनोद : हाँ, यदि इसे मोर्चे पर भेज दिया जाय तो यह क्या निहाल करेगा?

कमल : और तुम जैसे बड़े तीस मार खाँ हो? बड़े तीर मार लोगे?

विजय : अच्छा-अच्छा लड़ो मत 'हाँ रमेश! तुम सीमा पर कल जा रहे हो?

रमेश : हाँ कल ही जा रहा हूँ। सीमा पर तो मोर्चे तो हम सम्भालेंगे। पर देश के भीतर के मोर्चे?

कमल : जनता सम्भालेगी।

रमेश : जनता अभी आपसी झगड़े में उलझी है। कहीं प्रान्त के नाम पर झगड़ा तो कहीं भाषा के नाम पर। ऐसा लगता है देश के शरीर का प्रत्येक अंग आपस में झगड़ रहा है।

: यही तो बुरी बात है। यदि ऐसा ही होता रहा तो देश कमजोर हो जायेगा।

: कल जब 'राजस्थान श्री' के मुकाबले में लोगों ने मेरे प्रत्येक अंग की सराहना की तो मैं फूला नहीं समा रहा था।

: क्यों नहीं सुन्दर पिण्डलियाँ और मजबूत रानों वाले पैर, बलिष्ठ भुजाएँ, उन्नत वक्ष, केहरी कटि और उसके साथ उज्ज्वल दूध से दाँत और सुन्दर आँखें ! सभी तो प्रशंसनीय हैं।

: मैं जब घर आकर सोया तो सपने में क्या देखता हूँ कि सभी अंग आपस में झगड़ रहे हैं।

आँख : (गुस्से से) चुप ओ शूद्र ! आज तुमको भी घमण्ड हो रहा है। प्रतिदिन रेत और गन्दगी से सने रहने वाले ! तू क्या प्रशंसा पायेगा !

पैर : पलकों की कोठरी में बैठने वाली डरपोक ! तू हम वीरों के कार्य क्या जाने ! हम दोनों भाइयों का कड़ा परिश्रम ही इस शरीर को ऐसा बनाये हुए है।

हाथ : वाह रे वीर के बच्चे ! तू हम दोनों भाइयों को नहीं जानता ? सब लोग यही कहते हैं। भुजाओं का दिया खाते हैं, भुजाओं के बल पर जीवित हैं।

पैर : हाँ, हाँ, सुन लिया। पर तुमने यह नहीं सुना कि जब तक पैर चलते हैं तब तक ठीक। टट्टू थका कि शरीर थका।

आँख : अरे कुरूप की प्रशंसा कभी नहीं होती। देख मेरे रूप पर रीझकर लोगों ने कितने मुहावरे और कितनी कहावतें रच डाली हैं ?

पैर : सुन्दरता पर नहीं लोग गुणों को देखते हैं। पंचतंत्र की वह व रह-सिंगे की कहानी नहीं सुनी जो अपने सींगों को सुन्दर और पैरों को कुरूप समझता था। उस सुन्दर सींगों ने झाड़ियों में फँसकर उसे मरवा डाला और हम पैरों ने यथाशक्ति भाग कर उसकी रक्षा की।

आँख : सुनली तुम्हारी दलील। किस बूते पर भागते हो ? तुमको मैं सम्भालती हूँ। कहीं ठोकर नहीं लग जाय, कहीं गड्ढे में नहीं गिर पड़ो। काँटा न चुभ जाय। (हाथ की ओर मुड़कर) और हाथ ! तुम मेरे इशारे पर काम करते हो। तुम दोनों का इस शरीर को बनाने में कोई योग नहीं।

हाथ : चुप रहो वाचाल ! तुम स्वयं तो अपनी सहायता कर नहीं सकती, दूसरों का क्या निदेशन करोगी ? एक अणु ने भी आकर छेड़ा नहीं कि रोने लगती हो। सहायता तो आखिर मुझको ही करनी पड़ती है।

पेट : (प्रवेश करके) तुम सब निरर्थक लड़ रहे हो। तुम सबको इस

पेट की पूजा करनी चाहिये। मैं ही सब भोजन पचाकर, उससे सबको बल प्रदान करता हूँ।

: (प्रवेश करके) अरे ओ आलस के अवतार! कुछ करते-धरते तो तुझसे बनता नहीं और बढ़-बढ़ कर बातें बनाता है। यदि मैं नहीं होऊँ और तुम तक खाना नहीं पहुँचाऊँ तो हाय-हाय करने लगेगा।

: ओ झगड़े की साक्षात मूर्ति! तू अपनी आदत नहीं छोड़ेगी। महापुरुषों ने ठीक ही कहा है। जबान को लगाम चाहिए। यों ही बकवास करती जा रही है। अरे हम बत्तीस भाई न हों तो बिना चबाये भोजन को तू इस आलसी पेट के पास कैसे पहुँचा पायेगी?

: अरे जबड़ों पर आश्रित रहने वाले तुम क्या चबाते हो? यदि जबड़े नहीं चले तो तुम क्या कर सकते हो? यह तो मेरा और जबड़ों का ही काम है कि जबड़े चलते हैं, और मैं वस्तु को तुम्हारे नीचे देती हूँ, उसमें लार मिलाकर फिर पेट तक पहुँचाती हूँ। तू तो जड़ है जड़।

: यह भी खूब रही! सारा यश तू ही लिये जा रही है। तूने यह नहीं कहा कि मैं भोजन और अन्य खाद्य वस्तुओं के लिए कितना परिश्रम करता हूँ। खाने वाली वस्तुओं को जुटाता हूँ, साफ करता हूँ, पकाता हूँ और तुम्हारे स्वाद के भेंट चढ़ाने उसे मुँह तक पहुँचाता हूँ। तू पहले उसका स्वाद ले लेती है, फिर बेकार समझ कर पेट के पास पहुँचा देती है।

: चुप रहो! मेरे और आँख के गुलाम! यदि आँख तुम्हारी सहायता न करे और मेरे स्वाद की आज्ञा मैं तुमको न दूँ, तो तुम निठल्ले बैठे रहोगे। इस शरीर की सुन्दर बनावट में हम दोनों का ही योग है।

: हाँ तुम्हारे निर्माण की भी अजब बात है। खट्टा, कभी मीठा, तो कभी चटपटा न जाने कितनों की फरमाइश करती रहती हो, और हम दोनों भाइयों को उस तक भागना पड़ता है। यदि गलत फरमाइश हुई तो तुम अपना स्वाद ले लेती हो और सजा पेट को मिलती है।

दांत : हाँ बेचारा पेट हाय-हाय करने लगेगा और यह सुन्दर शरीर खाट में पड़ जायेगा। यही है न तुम्हारा योग।

हाथ : हाँ बिल्कुल ठीक। और इसकी बहन आंख इस शरीर को ऐसा झटका देती है कि, यह इस लोक या परलोक कही का नहीं रहता। वह न दीन का रहता है न दुनिया का। तभी तो एक कवि ने कहा है:—

नैण पटकद्यूं ताल पर, किरच किरच हो जाय।
मैं नैणां थने कद कह्यो, मन पहलां मिल जाय॥

पेट : अरे वाह हाथ वाह! खूब कही। इस सुन्दर शरीर को ये आँखें मजनूं बना देती हैं, वह नियड़ा फाड़ता दर-दर भटकता है और इस तरह यह सुन्दर शरीर टूट जाता है।

दांत : और जीभ तो भैया आँख से भी बुरी है। किले के भीतर बैठी-बैठी ऐसी बात करती है कि इस शरीर को इसका फल भोगना पड़ता है। कपाल पर जूतों की इतनी बौछार होती है कि इस पर एक भी बाल न रहे, और हमारी भी खैर नहीं रहती। इसीलिये रहीम ने ठीक ही कहा है:—

रहिमन जिह्वा बावरी, कह गई सरग पताल।
आप कहि भीतर गई, और जूते खात कपाल॥

हाथ : अरे! बड़े-बड़े राज्य उजाड़ दिये है इस जीभ ने। इस पर तो लगाम जरूरी है।

पेट : अब तुम सब चुप भी रहोगे या नहीं। तुम सबको मेरी गुलामी करनी पड़ेगी। तुम्हारी सबकी यह बकवास बेकार है। मैं तुम्हारा राजा हूँ। तुम मेरी प्रजा हो। तुमको मेरी गुलामी करनी पड़ेगी। पैर! तुमको मेरे लिये दौड़ना पडेगा। हाथ! तुमको मेरे लिये भोजन जुटाना और पकाना होगा। आँख, दांत, जीभ सब अपना-अपना काम करो! यह सारा शरीर मेरा साम्राज्य है।

हाथ : हमें गुलाम कहने वाले दम्भी! तेरी खैर नहीं। हमारे सहयोग को तुमने गुलामी कहा। हम गुलाम बनाया करते हैं, बनते नहीं। मैं तुम्हारे लिये कोई काम करने को तैयार नहीं।

दांत : हाँ बेचारा पेट हाय-हाय करने लगेगा और यह सुन्दर शरीर माट में पड़ जायेगा। यही है न तुम्हारा योग।

हाथ : हाँ बिल्कुल ठीक। और इसकी बहन आंख इस शरीर को ऐसा भटका देती है कि, यह इस लोक या परलोक कहीं का नहीं रहता। वह न दीन का रहता है न दुनिया का। तभी तो एक कवि ने कहा है:—

नैण पटकद्यूं ताल पर, किरच किरच हो जाय।
मैं नैणां थने कद कह्यो, मन पहणां पिल जाय॥

पेट : अरे वाह हाथ वाह! खूब कही। इस सुन्दर शरीर को ये आँखें मजनू बना देती हैं, वह चिथड़ा फाड़ता दर-दर भटकता है और इस तरह यह सुन्दर शरीर टूट जाता है।

दांत : और जीभ तो मैया आंख से भी बुरी है। किले के भीतर बैठी-बैठी ऐसी बात करती है कि इस शरीर को इसका फल भोगना पड़ता है। कपाल पर जूतों की इतनी बौछार होती है कि इस पर एक भी बाल न रहे, और हमारी भी खैर नहीं रहती। इसीलिये रहीम ने ठीक ही कहा है:—

रहिमन जिह्वा बावरी, कह गई सरग पताल।
आप कहि भीतर गई, और जूते खात कपाल॥

हाथ : अरे! बड़े-बड़े राज्य उजाड़ दिये है इस जीभ ने। इस पर तो लगाम जरूरी है।

पेट : अब तुम सब चुप भी रहोगे या नहीं। तुम सबको मेरी गुलामी करनी पड़ेगी। तुम्हारी सबकी यह बकवास बेकार है। मैं तुम्हारा राजा हूँ। तुम मेरी प्रजा हो। तुमको मेरी गुलामी करनी पड़ेगी। पैर! तुमको मेरे लिये दौड़ना पडेगा। हाथ! तुमको मेरे लिये भोजन जुटाना और पकाना होगा। आँख, दांत, जीभ सब अपना-अपना काम करो! यह सारा शरीर मेरा साम्राज्य है।

हाथ : हमें गुलाम कहने वाले दम्भी! तेरी खैर नहीं। हमारे सहयोग को तुमने गुलामी कहा। हम गुलाम बनाया करते हैं, बनते नहीं। मैं तुम्हारे लिये कोई काम करने को तैयार नहीं।

कमल : हाँ ठीक है ! यह भारत शरीर है। और शरीर के अंग हैं जनता

विजय : किसान, मजदूर, कामगर पैर हैं जो निर्माण को गति देते हैं। तथा सैनिक और युवक इसकी बलशाली भुजाएँ हैं।

मोहन : शिक्षक और नेता इसकी आँखें हैं जो देश का निर्देशन कर उसे खतरे से बचाते हैं।

कमल : जीभ तो व्यापारी और उद्योगपति हैं जो नाना स्वादों की आकांक्षा करते हैं। और दांत ?..........

विनोद : दांत मुनीम और कर्मचारी हैं।

रमेश : और पेट है सरकार जो कर आदि की योजना से राजस्व का भोजन पचा, जन-समृद्धि की योजना के रस में परिवर्तित कर देश में प्रवाहित करता है।

मोहन : तो मस्तिष्क बाकी क्यों छोड़ें ?

रमेश : मस्तिष्क है देश की संसद और विधान सभा। हृदय और फेफड़े हैं न्यायपालिका और व्यवस्थापिका। ये सब देश-रूपी शरीर की इन्द्रियों का संचालन करते हैं, प्राणवान बनाते हैं, शुद्धिकरण करते हैं।

विजय : शरीर के अङ्गों की तरह इनमें समन्वय आवश्यक है।

रमेश : हाँ सबकी एकता ही देश की समृद्धि है। सबको अपना-अपना कर्त्तव्य निभाना चाहिये। कारखानों में मजदूर अधिक उत्पादन करें, खेतों में किसान। व्यापारी देश की अर्थ-व्यवस्था में सहयोग दें। सीमा पर हम अपना मोर्चा सम्भालें और जनता प्रान्तीयता, साम्प्रदायिकता के झगड़े छोड़ अपना मोर्चा सम्भाले।

विनोद : बहुत अच्छा रमेश ! आज यह भी मालूम हुआ कि स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मस्तिष्क रहता है। आज तुमने हमारे कर्त्तव्य का भान कराया।

विजय : तुम अपना मोर्चा सम्भालो। हम अपना। हमारा नारा है, हम एक थे, एक हैं, एक रहेंगे।

रमेश : तो जय और जीत हमारी होगी।

मेघला : देखो किस्तूर चन्दजी ! और चौधरी वीरा ! हम थके हुए हैं ! पुलिस हमारा पीछा कर रही है।) परन्तु फिर भी हम यहां विश्राम करना चाहते हैं। जल्दी प्रबन्ध करो ।

(सब सिर झुकाकर स्वीकृति देते हैं)

एक डकैत : इस गाँव पर हमको पूरा भरोसा है। हम भी अपना फर्ज निभायेंगे।

दूसरा डकैत : देखते जाओ ! इस गाँव में खपरैल का एक मकान नजर नहीं आयेगा। मालामाल कर देंगे। पक्के मकान बन जायेंगे सबके। हाँ इन्तजाम में दारुड़ा, मारुड़ा का भी प्रबन्ध होना चाहिये ।

मेघला : हाँ ! जल्दी करो ! तुम्हारा यह गाँव इसीलिये बचा हुआ है कि तुम हमारी सेवा करते आ रहे हो। नहीं तो आज गाँव मेघसिंह के हाथों कभी धूल में मिल गया होता। जाओ !

(सब जाते हैं।)

वीरा : ठाकुरों की बेगार तो गई, पर यह नयी बेगार सिर पर आ पड़ी है।

गाँव चौधरी : किस्तूर चन्द जी ! हिम्मत तो नहीं होती। पर आप हमारे ही हैं तो कहे देता हूँ। हम इनके खाने-पीने का प्रबन्ध तो करते हैं पर गाँव की बहन बेटियों की इज्जत ये सरे आम लूटते हैं, यह ठीक नहीं।

किस्तूर चन्द : मेरा भाई ! तुम बड़े भोले हो। अपनी कौनसी बहन-बेटी ? उनको पैसा भी तो देते हैं। खैर छोड़ो पहले प्रबन्ध करना है। वीरा जी ! कहाँ प्रबन्ध करें ?

वीरा : जहाँ आपकी मर्जी। एक जगह ठहरना ठीक नहीं। जगह बदलते रहना चाहिये।

किस्तूर चन्द : अच्छा तो मेरे नोहरे का तलघर कैसा रहेगा ?

वीरा : उससे अच्छी जगह कोई नहीं। एकान्त का मकान और तलघर में किसी को पता भी नहीं लगेगा।

किस्तूर चन्द : तो ठीक है। चलो।

(सभी थोड़ी देर बाद मेघला के पास पहुँचते हैं)

चाहिये। डाकुओं को पकड़वाने में मदद करने वाले को इनाम मिलता है। अच्छा हम पास ही डाकुओं को खोज रहे हैं। आप लोग सावधान रहें। ज्योंही डाकुओं का आभास हो तुरन्त हमें सूचित करें।

सेठ : जो हुक्म साहब।

(पुलिस का प्रस्थान)

सेठ : देखो, कोई इत्तला देने नहीं जावे। ये पुलिस वाले केवल बकवास करते हैं। डाकुओं का सामना कभी नहीं करते। दिखावे के लिए यों ही इधर-उधर हाथ-पांव मारते हैं।

एक ग्रादमी : हां, गोली के सामने जाते इनकी नानी मरती है। सबको अपनी जान प्यारी है। सबके पीछे बाल बच्चे हैं।

सेठ : जो आदमी शिकायत करता है, वह बेमौत मारा जाता है। उसका पूरा परिवार डाकुओं के द्वारा मौत के घाट उतार दिया जाता है। ऐसा इनाम मिलता है।

दूसरा ग्रादमी : (डरा हुआ सा) सच है। पर कभी-कभी पुलिस वाले भी तंग करते हैं। बताओ कौन आये हैं, कहां छिपे हैं? तुम झूठ बोलते हो आदि।

सेठ : कुछ भी हो हमारे गांव का संगठन नहीं टूटना चाहिये। हमें ये पुलिस वाले क्या निहाल करने वाले हैं? ये डाकू कुछ न कुछ तो हमें देते ही हैं।

थानेदार : अच्छा बैठो। बोलो क्या खबर है ?

भेरा : बैठने का समय नहीं है। जल्दी कीजिये। मेघला किस्तूरचन्द के मकान में छुपा हुआ है।

थानेदार : क्या कहते हो ? अभी तो सेठ कह रहा था, यहाँ कोई नहीं आया।

भेरा : वह डाकुओं से मिला हुआ है।

एस.पी. : अच्छा फिर जल्दी करो। चलो। बैठो सभी जीप में। बहादुर जवानों आज मेघला बच कर नहीं जाना चाहिये। पुलिस के इतिहास में अपनी वीरता का अध्याय जोड़ दो। आज तुम्हारे कर्तव्य की घड़ी है। तुम्हारी परीक्षा है। चलो।

(सभी का प्रस्थान)

(सेठ किस्तूरचन्द के मकान के बाहर पुलिस जीपों से उतरकर मोर्चा सम्भालती हैं।)

एस.पी. : (ध्वनि विस्तारक पर) डाकू मेघला ! तुम पुलिस के घेरे में हो। हथियार डाल दो और अपने साथियों के साथ अपने आपको पुलिस को समर्पण करदो।

(तलघर में नाच-गान और शराब के दौर चल रहे हैं। एस.पी. हवा में फायर करता है। नाचगान बन्द होता है। एस.पी. अपनी घोषणा पुनः दोहराता है)

मेघला : सेठ किस्तूरचन्द ! यह गद्दारी !

सेठ : (घबराकर) गद्दारी ? मैं....मैं....मैं गद्दारी करता तो यहाँ क्यों आता ?

मेघला : तो किसने की है यह गद्दारी ?

सेठ : (काँपता हुआ) भेरा हो सकता है। वह आजकल खिचा-खिचा रहता है।

मेघला : अच्छा तो उससे भी निपटेंगे। चलो साथियो ! निकलने की तैयारी करो।

(सब राइफलें उठाकर खिड़की के रास्ते से बाहर निकलते हैं। भेरा उन्हें देख लेता है। वह उधर झपटता है।)

बड़ा कौन ?

गरणपतलाल शर्मा

* * *

[स्थान—विद्यालय। कक्षा में कुछ छात्र बैठे हुए हैं। गुरुजी का कक्षा में प्रवेश। सभी छात्र गुरुजी के सम्मान में खड़े होते हैं।]

सभी छात्र : प्रणाम गुरुजी !

गुरुजी : आशीर्वाद बच्चो ! खुश रहो ! बैठो।.................. अपनी-अपनी पुस्तकें निकालो !
(छात्र अपनी-अपनी पुस्तकें निकालते हैं)

गुरुजी : अच्छा बच्चो बताओ, राणाप्रताप कौन थे ? गोपाल !

गोपाल : मेवाड़ के महाराणा थे जो अपनी स्वतन्त्रता की रक्षा के लिए अकबर से लड़ते रहे। अनेकों कष्ट सहे।

गुरुजी : भामाशाह कौन थे ? महेश तुम बताओ !

महेश : राणा प्रताप के मंत्री थे।

गुरुजी : उनका नाम इतिहास में क्यों प्रसिद्ध है ?

राम : मैं बताऊँ गुरुजी ?

गुरुजी : हाँ बताओ।

राम : राणा प्रताप के पास जब अकबर का सामना करने के लिए सेना एकत्रित करने के लिये धन की कमी आ गई और वे जंगलों में रहकर घास की रोटियाँ खा रहे थे। ऐसे दिनों में उन्होंने मेवाड़ को छोड़कर जाने का निश्चय किया तो भामाशाह ने अपनी सारी सम्पत्ति देश की स्वतन्त्रता की रक्षा के लिए राणा को दे दी।

गुरुजी : बहुत अच्छा ! शाबाश ! अब दान के बारे में किसी कवि का कोई कथन याद है तो सुनाओ। (सभी छात्र चुप हैं)

गुरुजी : अच्छा आज हम दान के बारे में तुलसी और कबीर की उक्ति पढ़ेंगे। बाईसवाँ पाठ निकालो।
(सभी छात्र पुस्तक खोलते हैं)

गुरुजी : देखो बच्चो ! तुलसीदास जी ने दान के बारे में कहा है :—
जो जल बाढ़े नाव में, घर में बाढ़े दाम,
दोनों हाथ उलीचिये, यही सज्जन का काम।
बताओ नाव में पानी भरने लग जाय तो क्या करेंगे ?

एक छात्र : नाव में पानी भरेगा तो वह डूब जायेगी।

गुरुजी : हाँ, डूब जायेगी। परन्तु नाव में बैठे लोगों को क्या करना चाहिए ?

वही छात्र : तैरना आता है तो नाव से कूद जाना चाहिये।

गुरुजी : (दोहे को पुनः पढ़कर) तुलसीदास जी ने क्या तरीका बताया है ? गोपाल....।

गोपाल : दोनों हाथों से पानी उलीच कर बाहर फैंकना चाहिए।

गुरू : क्यों ?

गोपाल : पानी उलीचा नहीं तो नाव में पानी भरने से वह डूब जायेगी।

गुरू : बहुत अच्छा, बैठो और घर में दाम बढ़ जाये तो क्या करना चाहिए।

महेश : बैंक या पोस्ट ऑफिस में जमा करा देना चाहिये।

वीणा : गुरुजी, विनोद कहता है कि धन को गाड़ कर रखना चाहिए।

गुरुजी : जो धन को जमीन में गाड़ कर रखते हैं वे नादान हैं। वह धन न तो उनके ही काम में आता है, न दूसरों के। और मरने से पहले किसी को नहीं बताया तो वह धन जमीन में ही गड़ा रह जायेगा।

महेश : हाँ गुरुजी ! इसीलये रुपया बैंक या पोस्ट ऑफिस में ही जमा कराना चाहिए। इससे ब्याज भी मिलता है।

गुरुजी : ठीक है। परन्तु मैंने पूछा था घर में अधिक दाम बढ़ने पर क्या करना चाहिए ?

कमला : गहने बनवा लेने चाहिए।

एक लड़का : इसे अभी से गहने पर मोह है। अरे कल कथा में सुना नहीं !

बनने का दम भरता है। अरे यह रामू तो क्या मेरी महानता के लिए तुलसीदास जी भी कह गये हैं :—

तुलसी अम्ब, सुअम्ब तरु फूलहिं फलहिं पर हेत।
वे इतने पाहन हनै, वे उतते फल देत ॥

लेटर बक्स : किसी ने कह दिया और तुम बड़े हो गये। क्या कहने तुम्हारे बड़प्पन के ? बच्चे के महान कहने से वह महान नहीं होता। हाँ दिल बहलाने को गालिब खयाल अच्छा है। तू भी अपने मुँह मियाँ मिट्ठू बन कर दिल बहला ले।

दीपस्तम्भ : अरे दूसरों की प्रशंसा से तुमको जलन क्यों है ? कोई किसी की प्रशंसा बिना बात नहीं करता। तेरे में ऐसे गुण भी तो हों कि कोई तारीफ करे। सुना आम ! इस लेटर बक्स की वाणी में ईर्ष्या की बू आ रही है।

लेटर बक्स : और तेरे बोल से जैसे फूल झड़ते हैं ? क्यों ? अरे मूर्ख........

दीपस्तम्भ : चुप रहो ! मूर्ख मैं नहीं तुम हो। मैं ज्ञान का प्रतीक हूँ।

लेटर बक्स : वाह रे ज्ञान के प्रतीक ! अरे तेरे साये में आने वाला अन्धेरे में ही रहेगा। हाँ तेरे से दूर रहने वाला जरूर लाभ उठाता है। अपने तले अन्धेरा रखने वाला भी कोई महान होता है ? एक मैं ही महान हूँ, जिसके पास सब बड़े प्रेम से आते हैं।

लेटर बक्स : (व्यंग्य से) हाँ ! बड़े प्रेम से आते हैं। पत्थर ले कर ! अरे तुम दोनों ऐसे ही हो। लोग पत्थर से ही स्वागत करेंगे।

आम का पेड़ : अबे ओ पेटू ! हमें तो वैसा कहने के पहले अपनी औकात तो आंक ले ! तेरी नियत तो अपना पेट भरने की रहती है। पर डाकिया तेरी एक नहीं चलने देता।

दीपस्तम्भ : और इस तरह अपना पेट भरने वालों से बड़ा अनर्थ होने का भय रहता है। इनकी कन्जूसी से लोग बड़े दुःखी रहते हैं।

आम का पेड़ : ठीक है। ऐसे कन्जूसों को दण्ड देने वाले भी मिलते हैं। इस पेटू लेटर बक्स को डाकिया ठीक करता है। कन्जूस जमाखोरों को डाकू।

लेटर बक्स : वाह रे मेरी औकात की याद दिलाने वाले ! अरे तेरी औकात तो बच्चे-बन्दर सभी आंकते हैं। मैं पेटू नहीं हुँ। बड़े पेट वाला हूँ।

सबकी बातों को पचाने वाला हूँ । तेरे समान बातों को हवा देने वाला नहीं हूँ ।

आम का पेड़ : ओ पेट्ट ! तू वास्तव में पेट्ट है । ठूँठ है । बड़ा वह होता है जो नम्र होता है । तुम में नम्रता बिल्कुल नहीं है । मैं गुणीजनों का रूप हूँ । शास्त्रों में भी मेरी प्रशंसा की गई है कि फल वाले वृक्ष और गुणीजन नम्र होते हैं । परन्तु मूर्ख और सूखे ठूँठ नहीं नमते । सो तुम और दीपस्तम्भ मूर्ख और ठूँठ हो ।

लेटर बक्स : वाह रे नम्रता के रूप ! सज्जनता के अवतार ! ! अरे चोर भी कभी महान् हुए हैं । जमीन का भाग चुराकर सज्जन बनता है । 'मुँह में राम बगल में छुरी' की कहावत विद्वानों ने तुझे देख कर ही बनाई है । ऐसा लगता है तू जमीन से खाद और पानी चुराता है, मैं किसी से कुछ नहीं लेता । अमानत में खयानत नहीं करता ।

दीपस्तम्भ : और मैं अन्धेरे के खतरे से बचाता हूँ । मेरे कारण ही लोग अन्धेरे में तुम्हारे पास आ सकते हैं ? मुझ पर आश्रित होकर बड़ी बात मत बोलो । तुम दोनों मेरी बराबरी नहीं कर सकते । हा-हा-हा……मैं बड़ा हूँ । मैं महान हूँ ।

लेटर बक्स : तेल और बिजली पर आश्रित रहने वाला भी दूसरों को अपने आश्रित समझता है । केवल रात को जगने वाला भी महान् बनता है । छिः, मैं बड़ा हूं । मैं रात-दिन सबकी सेवा करता हूँ । मैं बड़ा हूँ । हा-हा-हा-हा मैं महान् हूँ ।

आम का पेड़ : सब ठूँठ और मूर्ख हैं । मैं नम्र हूँ । मैं परोपकारी हूँ । मैं पक्षियों का आश्रयदाता हूँ । प्राणी-मात्र की सेवा करता हूँ । मैं महान् हूँ । हा-हा-हा-हा…… मैं महान् हूँ ।

(राम चौंक कर जागता है । और चीखता है)

राम : अरे-अरे, यह क्या है ? यह कैसा झगड़ा है ? कैसा सपना है ? कौन बड़ा है ? कौन महान् है ? कुछ समझ में नहीं आता । सब अपनी-अपनी खिचड़ी पका रहे हैं । अरे कोई है ? मुझे डर लग रहा है ।

[गुरुजी का छात्रों के साथ प्रवेश]

गुरुजी : अरे यह रामू की आवाज है । हम आ रहे हैं बेटा राम !

डरो मत !! (पास आ कर) क्या बात है राम ? इतने परेशान और डरे हुए क्यों हो ?

एक छात्र : रामू आज अभी उत्सव की तैयारी के लिए स्कूल क्यों नहीं आये ? हम तुम्हें बुलाने आ रहे थे।

दूसरा छात्र : हम तो तुम्हारी आवाज सुनकर डर गए थे। क्या हुआ रामू ?

गुरुजी : बस-बस चुप रहो, इसे भी तो कुछ बोलने दो। हाँ बोलो राम क्या हुआ ?

राम : गुरुजी मैं स्कूल आ रहा था तो माँ ने पत्र डालने के लिये दिया। यहाँ आया तो साँप निकला। मुझको डर लगा। मैं इस चबूतरे पर चढ़ गया। डर के मारे आँखें बन्द कीं तो नींद-सी आ गई। सपने में यह पेड़, लैटर बक्स और दीपस्तम्भ झगड़ने लगे। तीनों अपने आपको महान और बड़ा कहते हुए अट्टहास करते थे गुरुजी ! इतने में मैं जाग गया और चिल्लाया। अब आप आ गये।

गुरुजी : ओह तेरे दिमाग में 'बड़ा कौन' वाली बात अभी तक चक्कर लगा रही है। अच्छा पहले बता साँप किधर गया ?

राम : वह तो उधर चला गया गुरुजी। परन्तु बड़ा कौन ....

गुरुजी : हाँ-हाँ धीरज रखो मैं बताता हूँ।

सभी : हाँ गुरुजी।

गुरुजी : देखो बच्चो ! इस लैटर बक्स की तरह कोई अभिमान करे तो वह बड़ा नहीं है। इस आम के पेड़ की तरह परोपकार का ढिंढोरा पीटे तो वह भी बड़ा नहीं है। इस दीपस्तम्भ की तरह ज्ञान की शेखी बघारे, वह भी नहीं। परन्तु इन तीनों के गुण जिनमें हों, वह बड़ा है।

गोपाल : कैसे ? यह कैसे गुरुजी ? इनके जैसा कोई बड़ा नहीं और इनके गुण जैसा बड़ा है ? यह तो कोई पल्ले नहीं पड़ा गुरुजी।

गुरुजी : हाँ, हाँ सुनो ! देखो यह आम का पेड़ फल खुद नहीं खाता लुटाता है। पत्थर फेंकने वालों को फल देता है। फल लगने पर झुक जाता है। इसी तरह जो मनुष्य धन का यथाशक्ति निःस्वार्थ भाव से दान करे, बुराई के बदले भलाई करे तो वह महान् है। परन्तु दान तो दे कम और ढिंढोरा सारे संसार में पीटे तो वह बड़ा नहीं है।

राम : लैटर बक्स की बात गुरुजी ! यह कैसे बड़ा है ?

तार

दीनदयाल गोयल

* * *

पात्र-परिचय :

रामपाल	:	गांव का एक अपढ़ किसान
सोनपाल	:	रामपाल का बड़ा भाई
महेन्द्र	:	ग्राम सेवक
श्याम	:	रामपाल का लड़का

इसके अतिरिक्त रामपाल के बूढ़े माता-पिता व उसकी बहिन तथा गांव के एक दो व्यक्ति तथा गांव में डाक लाने वाला डाकिया।

(हमारे देश में अशिक्षा है। गांवों में तार का आना अब भी अशुभ माना जाता है। वे समझते हैं कि तार में हमेशा अशुभ समाचार ही होते हैं। इसके कारण कभी कभी वे उपहास के पात्र बन जाते हैं।

प्रस्तुत एकांकी में दर्शाया गया है कि एक गांव में एक अपढ़ परिवार के घर मे नौकरी की खोज में गए केवल एक-मात्र शिक्षित लड़के का तार आता है। परिवार वाले अशुभ समाचार मानकर रोने लग जाते हैं : घर में कुहराम मच जाता है लेकिन बाद में जब ग्रामसेवक आकर, तार पढ़कर उनको प्रसन्न होने की बात सुनाता है कि उनके लड़के की नौकरी लग गई है तो सभी के चेहरों पर प्रसन्नता की लहर दौड़ जाती है, परन्तु बिना कारण रोने पर उपहास के पात्र भी बन जाते हैं।)

(स्थान—गांव का एक मकान। मकान कच्चा है, बाहर छप्पर डला हुआ है तथा उसमें एक बड़ी खाट पड़ी हुई है दरवाजा भिड़ा हुआ है)

[डाकिया का प्रवेश]

से रोने लगती है। इतने में रामपाल की बहिन भी आ जाती है तथा मौहल्ले की दो-चार औरतें भी आकर रोने लगती हैं)

(रामपाल के बड़े भाई का प्रवेश)

सोनपाल : अरे रामपाल.......यह रोवाराट कैसे हो रई है ? का बात है ?

रामपाल : (आँसू पोंछते हुए तथा सिसकी लेते हुए) अरे भइया का बताऊँ श्यामू कूँ गए चार दिना ऊ नाँय बीते और आज वाकौ वहाँ ते तार आयौ है...का बताऊँ भइया कहीं नहीं काहू मोटर-ताँगे की *झपेट में तो नाँय आ गयौ ?...हाय भगवान ई तैनें का करी ?*

सोनपाल : (रोते हुए) हाँ भइया—रामपाल तार से तो यही मालूम पड़ता है। हे भगवान ई तैनें का करी। दोनों भइयान के बीच में एक ही तौ छोरा हो (जोर से रोते हुए) हाय भगवान ई तैनें का गजब ढायौ है ?

(सभी और जोर से रोने लगते हैं)

सोनपाल : (रोते हुए) अरे रामपाल—या तार कूँ पढ़वा तौ लै।

रामपाल : (रोमनी आवाज में) अरे भइया का पढ़वाऊँ। यामें बुरी बात के अलावा और का है सकै है। तार में आवै ही कहा है ?

सोनपाल : (नमी आवाज में) फिर भी भइया मालूम तो पड़ जायगी।

रामपाल : अरे भइया मालूम पड़ी पड़ाई है (जोर से रोकर) अब मेरौ छोरा मोय नाँय मिलने कौ ......अरे श्यामू (श्यामू को आवाज दे देकर रोने लगता है सभी घर वाले और जोर जोर से रोने लगते हैं।)

(ग्राम सेवक का प्रवेश)

ग्रामसेवक : (ऊँची आवाज में) अजी चौधरी जी.......चौधरी जी।

सोनपाल : (रोमनी आवाज में) का है भइया !

ग्रामसेवक : यह रोना-धोना कैसे हो रहा है ?

सोनपाल : अरे रामपाल—बता दे भइया।

रामपाल : (रोते हुए) मैं कैसे बताऊँ...तुम ई बताय देउ।

ग्रामसेवक : अरे भाई कोई भी कह दो—जल्दी बताओ—आखिर तुम सब क्यों रो रहे हो ?

रामपाल : (आँसू पोंछते हुए) अरे भइया · श्यामू हो न, जानै तुम्हारे संग बी० ए० पास करी हो—वाकू चार दिना है गए, नौकरी की

है और तुम रो रहे हो। अरे यह तो मिठाई खाने खिलाने का अवसर है।

रामपाल : (हँसते हुए) अरे भइया तेरे मुँह में घी शक्कर। अरे श्यामू की माँ ! सुन तेरो श्यामू 250.00 रु. माहवार को नौकर है गयो है। जा जल्दी जा और भीतर मलरिया में ते कछु लड्डू तो निकाल ला।

ग्रामसेवक : चौधरी जी ! यह पुरानी रिवाज थी जबकि केवल मरने आदि की खबर पर ही तार दिया करते थे और अधिकाश लोग बिना पढ़े-लिखे होते थे। अब तो बहुत लोग पढ़े लिखे हो गये हैं। शिक्षा का प्रसार दिन पर दिन बढ़ता ही जा रहा है। गाँव-गाँव में स्कूल खोले जा रहे हैं।

सोनपाल : हाँ भइया ठीक कह रहे हो। अगर हम पढ़े-लिखे होते तो ऐसे काय कूँ रोते। पर अब का कियौ जाय जब चिड़ियाँ चुग गईं खेत !

ग्रामसेवक : अरे भाई अभी तो खेत बाकी है। सरकार ने प्रौढ़ शिक्षा का भी आयोजन रखा है। दिन भर लोग खेतों पर काम करते हैं और रात को प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों पर पढ़ते हैं।

(इतने में श्यामू की माँ लड्डू लेकर आती है सभी के लिए लड्डू बाँटती है और एक प्लेट में ग्रामसेवक जी के आगे भी रख देती है। ग्रामसेवक व सभी अन्य लड्डू खाते जाते हैं और बातें करते जाते हैं।

ग्रामसेवक : देखो भाई अब तो सरकार अनिवार्य शिक्षा करने जा रही है। हर बच्चे को शिक्षा दी जायगी। कोई भी बिना पढ़ा-लिखा नहीं रहेगा। सब पढ़-लिखकर भारत के उत्थान में लग जायेंगे।

रामपाल : अरी श्यामू की माँ ! सुन रही है न ? देख अब पढ़िबे की काई ते मने मत करो कर। सब छोरा छोरीन नै पढ़बे कूँ भेजो कर।

श्यामू की माँ : (घूँघट में से ही) हाँ अब तो सब छोरान नै पढ़िबे कूँ भेजो करूँगी। पर छोरीन नै तो नाँय भेजूँगी।

रामपाल : हाँ ई बात तेरी मानी। छोरी पढ़-लिख कें कहा करेगी।

प्रहसन

नशाह : (कड़क कर) चुप बदजबान ! इतने बड़े वजीर पर ऐसा इल्जाम ? तू अपनी सफाई पेश कर क्या तूने सचमुच रेजगारी इकट्ठी की ?

धनियामल : प····इ ······इकट्ठी की तो नहीं, हो जाती है, भला इसमें मेरा क्या कसूर, लोग धनिया खरीदते ही पाँच-दस पाई का हैं, मैं कोई आलू, अरबी का व्यापारी तो हूँ नहीं जो लोग किलो दो किलो खरीदें और नोट आयें यहाँ तो परचूनी है ! सरकार परचूनी !!

बैंगनशाह : अबे तू परचूनी हो चाहे अरचूनी पर रेजगारी इकट्ठी करने से लोग सौदा सुलफा कैसे खरीदेंगे ? बच्चे हाथ खर्ची कहाँ से पायेंगे ? औरतें खैरात कैसे बाँटेंगी ? मतलब गृहस्थी की गाड़ी कदम-कदम पर रुकेगी ।

करमकल्ला : (खड़े होकर) पनाहेआलम ! कल का ही किस्सा है मैंने पाँच-दस पैसे का धनिया ही नहीं लिया नींबू अदरख भी ली, कुल मिला कर चालीस पैसे हुए—इसके गल्ले में ढेर सारी रेजगारी थी पर इस बदजात ने मुझे छुट्टे पैसे न देकर लिफाफे पोस्टकार्ड पकड़ा दिये । मालूम है फिर क्या हुआ ?

बैंगनशाह : क्या हुआ ?

और क्या जुर्म नहीं है, इसे हम अच्छी तरह जानते हैं। (वजीर से) पर वजीरेआजम हम अभी तक यह नहीं समझ पाये कि आखिर इतनी रेजगारी का ये मरदूद करता क्या है। इसमें इसको फायदा क्या है?

करेले खाँ : फायदे कई हैं हुजूर! एक तो रेजगारी की कमी के कारण मजबूरन ग्राहकों को एक ही दूकान से चाहे सड़ा हो चाहे मँहगा, रुपये के आस-पास सौदा लेना पड़ता है नहीं तो खुल्ले पैसे नहीं मिलते।

आलूमल : दूसरा ये रेजगारी को बेच देता है।

बैंगनशाह : रेजगारी को बेच देता है? आलूमलजी क्या रेजगारी भी कोई गुड़-शक्कर या चने-मुँगड़े हैं जिसका रोजगार होता है?

आलूमल : (हँसकर) होता है खुदावंद होता है! शरीफ दुकानदारों को धन्धा चलाने के लिये रेजगारी की जरूरत पड़ती है उन्हें, रुपये के निव्वे पैसे, अस्सी पैसे के हिसाब से ये नामाकूल बेच देता है।

बैंगनशाह : अब आया मामला समझ में! तब तो यह जालिम रोज पाँच-पचास की रेजगारी बेचकर दो तीन रुपये तो फोकट में ही कमा लेता होगा?

परवल देव : मैं एक राज की बात और बताऊँ सरकार! ये शरीफ गुण्डा कभी-कभी तो कानून तक की परवाह नहीं करता। रेजगारी को गला देता है।

बैंगनशाह : (आश्चर्य से) गला देता है?

परवलदेव : हाँ हुजूर! जितने पैसे का सिक्का गलता है उससे ज्यादह की धातु बिक जाती है।

बैंगनशाह : चालाकी की भी हद होती है! अपने भले के लिए दूसरों को परेशान करे इससे ज्यादह नीचता और क्या होगी! जो अनाज इकट्ठा करके लोगों को भूखा मरने के लिये बेबस करते हैं, यह गुनाह भी उसी तरीके का है। (जोर से) सिपहसालार।

मियाँ प्याजुद्दीन : (तड़ाक से सलामी देकर) जी सरकार!

बैंगनशाह : इस खुद गर्ज, बेईमान इन्सान को हथकड़ी बेड़ी डालकर कटघरे में डाल दिया जाये। इस पेट भरने वाले जलील कुत्ते को आजादी की पच्चीसवीं सालगिरह के दिन लाल किले के फर्श पर आधा गाड़ा जाये और इसके इकट्ठे किये हुये सारे सिक्के रियाया में बाँटकर

अधूरी गज़ल

कुन्दन सिंह सजल

* * *

पात्र परिचय :

युगल किशोर	: एक कवि।
शकुन्तला	: युगल की पत्नी।
श्याम	: युगल का पुत्र।
लीना	: युगल की पुत्री।

(कवि युगल अपने कमरे मे बैठे, कापी खोले, कलम हाथ में लिए एक गजल का मिसरा सोच रहे हैं।)

युगल : (सोचकर) आ गया ...आ गया, कितना बढ़िया शेर दिमाग में आया है— (गुनगुनाता है)

उनका आना गोया पैगाम है कयामत का—
उनका जाना जैसे तूफान का उतरना है।

शकुन : (आकर) अजी, सुनते हो। घर में अनाज बिलकुल नहीं है। मैं रोज आपको फरियाद करती हूँ। आज जब अनाज चक्की से पिस कर आएगा तब चूल्हा जलेगा, कान खोल कर सुन लीजिये।

युगल : आ गई न शृंगार रस में वीभत्स रस पैदा करने। अरी महरबान मैं एक गजल लिख रहा हूँ, तुम थोड़ी देर बाद आना। देखो, एक शेर सुनो, कितना बढ़िया बन पड़ा है, शायद तुमको भी पसन्द आये—

उनका आना गोया पैगाम है, कयामत का—
उनका जाना जैसे तूफान का उतरना है।

शकुन : भाड़ में जाए ऐसी शायरी। आपको कुछ और भी सूझता है या मुझ पर ही शेर कहना सूझता है? क्या मैं कयामत हूँ? अगर कयामत ही हूँ तो मुझे लिवा क्यों लाए थे इस घर में।

युगल : अरे, तुम तो बेवजह नाराज होती हो। भई, मैंने तुम्हारे लिए यह शेर थोड़े ही कहा है। यह तो, मैं जो गजल लिख रहा हूँ उसका एक शेर है।

शकुन : घर में तो मुझे बच्चे खाते हैं और आपके पास आती हूँ तो आप जली-कटी सुना कर मुझे जलाते हैं। आखिर आपका इरादा क्या है? यदि भूखों ही मारना है तो मुझे फाँसी लगा कर ही क्यों नहीं मार देते, बच्चों को जहर खिला कर क्यों नहीं सुला देते?

युगल : शकुन, तुम तो बेबात पर नाराज हो रही हो। जरा इस कुर्सी पर बैठो (खाली कुर्सी की ओर इशारा करता है) और देखो, मेरी यह गजल जो आज रात मैं मुशायरे में पढ़ने वाला हूँ, सुनो।

शकुन : लेकिन आपकी गजल से पेट थोड़े ही भरेगा। पेट तो खाना खाने से भरेगा और घर में जब तक अनाज नहीं है तो खाना बनेगा कैसे? इसलिए कविजी, घर के लिए गजल नहीं अनाज जरूरी है, समझे!

युगल : शकुन, गांधीजी ने कहा था मनुष्य को उपवास करना चाहिये। उपवास से अन्तरात्मा की आवाज भगवान तक पहुँचती है। आज उपवास करके भगवान तक ही आवाज पहुँचाई जाये क्या विचार है?

शकुन : जी, गांधाजी के शागिर्द, लेकिन बच्चों की वह आधी दर्जन पलटन, जो मेरे पीछे पड़ी रोटी-रोटी पुकार रही है, उसको क्या खिलाऊँ? जरा यह तो बताओ। अभी मैंने बड़े लड़के श्याम को बनिये की दूकान से अनाज लाने को भेजा था। बनिया बोला 'पहले का उधार चुका कर हिसाब साफ करो तब आगे उधार दूँगा।' दूधवाला भी कल शाम को कह गया था कि जब तक मुझे दूध के पिछले पैसे नहीं मिल जायेंगे आपको दूध नहीं दूँगा।

युगल : श्रीमती जी, अब आप अपना यह बकाया बहीखाता समेट कर जाइये। मुझे यह गजल तैयार करने दीजिये, नहीं तो रात को होने वाले मुशायरे में मैं क्या पढ़ूँगा?

शकुन : गजल... गजल.... गजल, भाड़ में जाये आपकी यह गजल। घर में न अनाज है, न दाल है, न सब्जी है और आपको गजल लिखने की सूझ रही है। न जाने किस मनहूस साइत में आपसे भाँवरे लीं थीं कि रोटियों के भी लाले पड़ रहे हैं। (गुर्राती है)

युगल : (अनसुनी करके गुनगुनाता है) उनका आना गोया पैगाम है....

शकुन : अच्छा, मैं तो जाती हूँ, मगर कहे जाती हूँ कि खाने का इन्तजाम आप अपना कर लेना। (जाती है)

युगल : गई, सचमुच जैसे तूफान उतर गया। आती है तो फरमाइशों की लम्बी-चौड़ी फहरिश्त लेकर। नाहक मेरा मूड खराब कर देती है (गजल का अगला शेर सोचने लगता है इतने में बड़ा लड़का श्याम आ जाता है)

श्याम : पापाजी, पापाजी !

युगल : तेरी मम्मी गई तो अब तू आया है। बोल क्या बात है ? अरे तुम सब मेरे पीछे क्यों पड़े हो ? क्या भगवान के लिए मुझे कुछ देर अकेला नहीं छोड़ सकते, जिससे मैं यह गजल पूरी कर लूँ।

श्याम : आप पर तो गजल का भूत सवार हो रहा है और उधर मेरा स्कूल से रेस्टीकेशन होने का सामान हो रहा है। हैडमास्टर साहब ने कहा है कि कल यदि मैं स्कूल यूनिफार्म में स्कूल नहीं आऊँगा तो मुझे स्कूल से निकाल दिया जावेगा। देखिये मेरा नेकर और कमीज (दिखाकर) दोनों फट गये है। जगह-जगह पैबन्द लगे हैं। आप इसी समय चलकर, दूकान से कपड़ा लेकर, दर्जी से मेरी स्कूल ड्रेस तैयार करवाइये।

युगल : देखो बेटा, एक दो दिन में रेडियो स्टेशन से जैसे ही मेरे प्रोग्राम का पारिश्रमिक आएगा, मैं तुम्हारे लिए स्कूल ड्रेस सिलवा दूँगा। एक दो दिन तो तुम वैसे ही काम चलाओ–समझे !

श्याम : नहीं पापा, बिना ड्रेस मुझे कल स्कूल में घुसने भी नहीं दिया जावेगा। आज दो माह हो गए मेरे लिए स्कूल ड्रेस नहीं बनी है आप दो माह से कहते आ रहे हैं 'पारिश्रमिक के पैसे आने दो, पारिश्रमिक के पैसे आने दो' आप इतना अच्छा लिखते ही कहाँ हैं कि आकाशवाणी आपकी रचनाएँ प्रसारित करे।

युगल : अरे, साहबजादे, सुनली तेरी तकरीर। मुझे मेरी गजल पूरी करने

दूँगा मगर अभी तो तू जा यहाँ से। देख आज रात को शहर में हिन्दुस्तान स्तर का मुशायरा होने वाला है। मैं उसी में पढ़ने के लिए एक गजल लिख रहा हूँ। जैसे ही यह गजल पूरी होगी, मैं तुमसे बातें करूँगा।

सोना : पापा, किन्तु उसमें तो हिन्दुस्तान के बड़े-बड़े शायरों को निमंत्रण दिया गया है। क्या आपको भी निमंत्रण मिला है? आपको मुशायरों व कवि सम्मेलनों में निमंत्रित तो किया नहीं जाता है, आप हमें झूँठ-झूँठ बहका देते हैं कि यहाँ कविता पाठ के इतने रुपये मिलेंगे, वहाँ गजल पढ़ने के इतने रुपये मिलेंगे और जब आप वापस आते हैं तो कह देते हैं 'संयोजक ही दिवालिया निकला' या 'संस्था में पैसों की कमी थी'। सभी संयोजक व संस्थाएँ आपके लिए ही दिवालिया क्यों हैं, समझ में नहीं आता।

पागल : तू नहीं समझेगी, बेटी, जा अपना स्कूल का काम कर। ज्यादा बातें न बना।

: मालकिन, प्रेस तो कल विमला बहिन जी के घर चली गई अब मैं आपके कपड़ों में प्रेस कैसे करूँ ?

: 'प्रेस' विमला के घर कैसे चली गई ? कल शाम को तो मैंने उसे आलमारी में रखी थी ।

: मालकिन, कल रात को ९ बजे उनका लड़का आया और मुझसे पाँच मिनिट में वापिस देने का कहकर प्रेस ले गया ।

: मगर मुझसे पूछे बिना तो तुम कभी किसी को कोई चीज नहीं देतीं फिर कल कैसे दे दी ?

: मैंने तो कहा था कि मैं मालकिन से पूछे बिना कोई चीज नहीं देती तो कहने लगा कि अभी पाँच मिनिट में लाकर तुझे ही वापस दे जाऊँगा । इतनी सी देर के लिये मालकिन से पूछने की क्या जरूरत है ?

: मुझे तो तूने मुसीबत में फँसा ही दिया । मुझे अब कोई दूसरी साड़ी पहिननी पड़ेगी । तू जाकर अपना काम कर ।
(नौकरानी जाती है, शीला कमरे में आकर आवाज देती है)

: सुनीता ओ सुनीता ।

जरूरत पड़ने पर दुख न उठाना वहाँ से माँग लाना। लेकिन वह तू अब उसकी किसी बात में न आना।

सुनीता : अच्छा माताजी (प्रस्थान करती है)

शीला : (जोर से) 'रेखा' ओ रेखा !

(रेखा दौड़कर आती है)

रेखा : क्या है मम्मी ?

शीला : जा बाबूजी की घड़ी (रिस्ट वाच) में जल्दी से देखकर आ कि कितने बज गये हैं। आज तो समय का कुछ पता ही नहीं चल रहा।

(रेखा जाती है व शीघ्र लौट आती है)

रेखा : 'मम्मी' बाबूजी की घड़ी तो मुझे कहीं भी नहीं मिली, मैंने सब जगहों पर उसे ढूँढ ली।

शीला : घड़ी मिली नहीं तो कहाँ गई। कहीं पटक न आये हों। जा उनसे खुद से पूछकर आ कि घड़ी कहाँ है। मुझे बेकार ही में देर हो रही है।

(रेखा जाकर सोते हुये महेन्द्र को झँझोड़ती है)

रेखा : बाबूजी, ओ बाबूजी ! अब उठो भी देखो कितना दिन चढ़ आया है।

(महेन्द्र आँखें खोलते हुए)

महेन्द्र : क्या बात है रेखा ? आज सुबह-सुबह बाबूजी कैसे याद आ रहे हैं।

रेखा : बाबूजी तो मुझे हमेशा ही याद आते रहते है लेकिन अभी तो मैं आपकी घड़ी माँगने आई हूँ, मम्मी टाइम देखने के लिए घड़ी मँगा रही है।

(महेन्द्र एकदम से उठकर बैठ जाता है)

महेन्द्र : घड़ी, मेरी घड़ी ·······?

रेखा : हाँ आपकी घड़ी, जल्दी से मुझको बता दीजिए कि घड़ी कहाँ रखी है।

महेन्द्र : अगर वह कहीं रखी होती तो मैं फौरन बतला न देता। असली बात तो यह है कि वह अब मेरे पास न होकर किसी दूसरे के पास चली गई है।

रेखा : दूसरे के पास चली गई ? कौन है वह दूसरा जिसे आप अपनी इतनी कीमती घड़ी दे आये।

ेन्द्र : बतलाता हूँ, बतलाता हूँ। पर मेरी घड़ी के लिये तुम क्यों इतनी परेशान हो। बात यह हुई कि कल मोहन (मित्र) मेरे पास आया और बोला कि उसका लड़का इस साल बी० ए० फाइनल की परीक्षा दे रहा है व उसके पास घड़ी न होने से उसे पेपर्स देने में बहुत कठिनाई होगी। इसलिये मैं उसे कुछ दिनों के लिये अपनी घड़ी दे दूँगा। बेचारा बड़ी आशा से मेरे पास आया था तो मैं उसे कैसे निराश कर देता। आखिर इन्सान के काम इन्सान ही तो आता है।

क्षा : पर बाबू जी आपको यह भी तो मालूम था कि अपने घर में भी फिलहाल उस घड़ी की सख्त जरूरत है। अपनी दूसरी दोनों घड़ी खराब पड़ी हैं।

हेन्द्र : मालूम तो था ही पर 'मरता क्या न करता'। उसने कुछ ऐसे लहजे में बात करी थी कि मुझसे उसे इन्कार करते न बन सका। अब चाहे तुम लोग नाराज होते रहो। दुनियाँ में सबको तो खुश रखा नहीं जा सकता।

(एकाएक दरवाजे के जोर-जोर से खटखटाने तथा महेन्द्र जी, महेन्द्र जी आवाज आती है)

(चौंककर) अरे यह तो सामने वाले सुरेन्द्र जी की आवाज मालूम होती है। कोई बहुत ही जरूरी काम होगा तभी तो बेचारे सवेरे-सवेरे आ पहुँचे हैं)

(जल्दी से उठकर दरवाजा खोलता है तथा सुरेन्द्र अन्दर प्रवेश करता है)

संजय : ओ हो; अरे भाई मैंने तो कल ही शाम को ब्लैक से टिकट खरीद कर यह फिल्म देखी थी। उसका हीरो तो राजेश खन्ना, हिरोइन शर्मिला टैगोर है।

सुबोध : (मेज पर मुक्का मारते हुए) नहीं; हीरो जितेन्द्र और हिरोइन मुमताज है।

संजय : नहीं हीरो राजेश ·········(वाक्य पूरा नहीं हो पाता है कि इससे पहले ही ······ ···)

अध्यापक : अरे यह क्या शोर मचा रखा है ?

संजय : ओह ! सर आप आ गये !

सुबोध : (अध्यापक को देखते हुए) कुछ नहीं सर, कुछ नहीं। हम तो कल के पढ़े हुए लेसन की पुनरावृत्ति कर रहे हैं।

अध्यापक : ओ हो। गुड, वेरी गुड। (और अध्यापक बोर्ड पर बनाये हुए चित्र को देखने लगते हैं।)

(संजय और सुबोध वापिस बहस करने लग जाते हैं)

सुबोध : चल यार सर के पास चलें। वो ही इस बात का फैसला करेंगे।

संजय : चलो हां। कल हॉल में मेरे आगे वाली सीट पर ही तो सर बैठे थे। उनको जरूर याद होगा।

(एक साथ पाँच हाथ उठते हैं। जिनमें तीन लड़कियों के तथा दो लड़कों के होते हैं।)

अध्यापक : अच्छा संजीव तुम बताओ कि पानी किसका यौगिक है ? (संजीव खड़ा होता है।)

संजीव : सर आपने तो कल कुछ और ही बताया था लेकिन मेरे डेडी तो कहते हैं कि योगी वो होता है जो गेरुए वस्त्र धारण करता है। तथा जो अपने शरीर पर भस्म मलता है (पूरी कक्षा हँस पड़ती है।)

अध्यापक : (क्रोध से) शट अप। नाउनसेन्स ! गेट आऊट ऑफ द क्लास।

(संजीव वहीं खड़ा रहता है।)

अध्यापक : (और भी क्रोध में) आई से, यू गेट आऊट ऑफ द क्लास।

संजीव : लेकिन सर, मेरी गलती क्या है ?

अध्यापक : रास्कल कहीं का ! मैंने योगी नहीं, यौगिक पूछा था (और बोर्ड पर यौगिक लिख देते हैं)

संजीव : ओह पार्डन सर। एक्सक्यूज मी।

अध्यापक : सिट डाउन। बच्चों, मैंने योगी नहीं यौगिक पूछा है। अच्छा सीमा तुम बताओ ? (सीमा खड़ी होती है।)

सीमा : सर पानी समुद्र और सूर्य का यौगिक है क्योंकि सूर्य द्वारा जल वाष्प बनता है (अभी वो पूरा भी नहीं बोल पाती है कि.......)

अध्यापक : सिट डाउन सीमा ! तुम गलत बोल रही हो (और सीमा बैठ जाती है।)

अध्यापक : देखो बच्चों पानी समुद्र और सूर्य का यौगिक नहीं है। बल्कि यह हाइड्रोजन और ऑक्सीजन का यौगिक है। हाइड्रोजन और ऑक्सीजन दो-एक के अनुपात में मिला देने पर दोनों रासायनिक क्रिया करके जल बना देते हैं।

सीमा : ओह ! पार्डन सर।

(इसी समय पीरियड लग जाता है और अध्यापक टॉपिक पूरा किये बिना ही कक्षा से बाहर निकल आते हैं। अध्यापक के कक्षा से बाहर निकलते ही लड़के बुरी तरह शोर मचाने लग जाते हैं। संजीव खड़ा होता है और जोर से चिल्लाता है।)

संजीव : पानी सूर्य और समुद्र का यौगिक है।

(सब लड़के भी उसकी आवाज में आवाज मिलाकर चिल्लाते हैं और संजीव इस वाक्य को बोर्ड पर उठाकर लिख देता है।)

(लड़कियों को यह बात सहन नहीं होती। वे भी सब सीमा की आवाज में आवाज मिला कर चिल्लाती हैं।)

सब लड़कियाँ : योगी अपने शरीर पर भस्म मलता है।

(तथा सीमा भी बोर्ड पर जाकर इसी वाक्य को लिख देती है। बेचारा संजीव और उसके साथी खिसिया कर रह जाते हैं। सीमा और उसकी सहेलियाँ ठहाका मारकर कक्षा से बाहर जाने ही लगती हैं कि दरवाजे पर दूसरे टीचर मिल जाते हैं। इनकी भी वेश-भूषा ठीक वैसी ही है जैसी कि पिछले पीरियड वाले अध्यापक की होती है।)

अध्यापक : यू इडियट! व्हेयर आर यू गोईंग ?

(एक बार तो सभी छात्रायें सहम जाती हैं)

संगीता : पार्डन सर वेट प्लीज। वी आर जस्ट कमिंग।
(अध्यापक अवाक् देखते रह जाते हैं। छात्रायें मुँह बिचका कर बाहर निकल जाती हैं।)

सुरेश : बिना किसी से पूछे, दरवाजे पर आकर बहाना बनाते हुए मानो उसे कोई बुला रहा है। आया, अभी आया, क्या संजय, सुबोध, सुनील और संजीव को भी लाऊँ ? अच्छा ला रहा हूँ। (चारों एकदम खड़े हो जाते हैं।)

पाँचों : सर वी आर जस्ट कमिंग (और स्वीकृति पाये बिना ही कक्षा से बाहर निकल जाते हैं। अब कक्षा में चार विद्यार्थी शेष रहते हैं।) (बाहर जाते हुए विद्यार्थी बात करते जाते हैं) यार जार्ज-

वाशिंगटन बैठा है अन्दर। नहीं यार, इब्राहिम लिंकन है, अरे यार चमचे हैं चमचे ! बच्चुओं को परीक्षा में नहीं बैठने देंगे। देखते हैं कैसे नम्बर प्राप्त करेंगे। (बेचारे शेष छात्र भयातुर होकर उन छात्रों को संकेत से कह देते हैं) अरे यारो ! नाराज मत होवो ! तुम चले गये तो हम भी आ रहे हैं।)

(और वे छात्र एक चिट अध्यापक की टेबल पर रख कर पीछे वाली खिड़की से कूद कर एक-एक बाहर निकल जाते हैं।) अध्यापक जो कि बोर्ड पर फ्रॉग का डाईग्राम बनाने में व्यस्त हैं, जब एकदम वे छात्रों की तरफ मुड़ते हैं तो उन्हें सिर्फ टेबिल, कुर्सियाँ ही दिखाई देती हैं। तथा उनकी नजर स्वयं की टेबुल पर जाती है तो उस पर एक चिट पड़ी देखते हैं जिस पर लिखा होता है "सर ! 'नया जमाना' चल रहा है। मैं आपकी टिकट ले रहा हूँ। आप आने में जल्दी कीजिये।।" आज की कक्षा को देखकर अध्यापक अवाक् रह जाते हैं।)

पार्वती : (चिढ़ते हुए) ओफ ! इस घर में कदम रखना ही पाप है। सुबह से रात तक कोल्हू के बैल की तरह घर में काम करो। बच्चों को सम्भालो। स्कूल में विद्यार्थियों से माथा-पच्ची करो। इस बीच अपने नये-नये नाम सुनते रहो—सिरदर्द ! बुखार ! कम्बख्त !

कैलाश : अरे ये तो मेरे प्यार भरे शब्द हैं। मैं डार्लिंग वार्लिंग का दिखावा नहीं करता।

पार्वती : वा हा ! दिखावा नहीं करता""तो फिर तुम्हारी कहानियों व कविताओं के अधिकतर पात्र कैसे प्रेमसागर में डुबकी लगाकर प्यार भरे शब्द व वाक्य बोलते हैं।

कैलाश : अरे वो तो कविताओं व कहानियों की बातें हैं। वहां सब-कुछ वही थोड़ा लिखा जाता है, जो मन और मस्तिष्क में होता है।

पार्वती : तभी तुम एक असफल लेखक हो।

कैलाश : कैसे ?

पार्वती : मन और मस्तिष्क से परे हट कर, यथार्थ से परे हट कर, जो लिखता है; वह असफल लेखक न होगा तो और क्या होगा ?

कैलाश : निकालो। निकालो अपने दिल का गुबार। मेरी कलम तो चलती रहेगी।

पार्वती : यदि ऐसा ही सोचते हो तो चलाओ कलम। खींचते रहो लकीरें। पर कान खोलकर सुन लो कि ऑफिस से आकर सीधे अपने कमरे में जाकर, हमारा पेट काट कर खरीदी पत्र-पत्रिकाओं को सरसरी नजर से देखकर और फिर दूसरों के वाक्यों व पैराग्राफों को चुरा कर एक नई रचना घड़ने से तुम लेखक नहीं बन सकते। कभी नहीं।

कैलाश : (गरजकर) तो तुम मुझे चोर समझती हो ?

पार्वती : हां, शब्दों के चोर। वाक्यों के चोर।

कैलाश : सचमुच मेरी तो तकदीर ही फूट गई, जिस दिन से तुम्हारा मुंह देखा।

पार्वती : मेरी तकदीर में कौन सी दरार नहीं पड़ी, जिस दिन से मैंने इस घर में कदम रखा है।""लोग तो हनीमून मनाने के लिए देश या विदेश के किसी रमणीय स्थान पर जाते हैं और मैं वर्ष भर

तक तो तुम्हारी शादी का कर्ज उतारती रही और फिर हर वर्ष पैदा हुए तुम्हारे इन नये-नये मॉडलों का। क्या सुख देखा मैंने ?

कैलाश : अरे आठ बच्चों की माँ कहीं तुम्हारे दिमाग को दीमक तो नहीं चाट गई ?

पार्वती : वह कैसे ?

कैलाश : सुनो ! जिन्हें तुम मेरे 'मॉडल' बताती हो। वह तो भगवान के दिये तोहफे हैं। वे तोहफे, जो भाग्यशालियों को ही मिलते है।

पार्वती : तभी जब कोई तुमसे कम बच्चे पैदा करने की बात कहता है तुम सटाक से उत्तर दे देते हो–मैं कम बच्चे पैदा करने के आज के इस फैशन से नफरत करता हूँ।

कैलाश : बिलकुल ?

पार्वती : पर तब तुम्हें अपने से नफरत नहीं होती, जब दो दूध पीते तोहफे पूरे दिन नौकरानी के घर पड़े रहते हैं, जिन्हें छुट्टी के दिन भी तुम अपनी आँखों के सामने नही रख सकते।

कैलाश : उन्हें देखूँ या लिखूँ ?

पार्वती : सुनो ! सुनो ! इनके अतिरिक्त दो मेरे पिता के घर जैसे-तैसे पल रहे हैं।

कैलाश : किसी दुश्मन के घर तो नहीं पल रहे हैं ?

पार्वती : फिर बोले तुम बीच में !....और तुम जानते ही हो कि शेष चार रोते-चीखते स्कूल को धकेलने पड़ते हैं।

कैलाश : तो क्या हुआ ? क्यों बच्चों की संख्या देखती हो ? क्यों उनकी उपस्थिति या अनुपस्थिति को देखती हो ? क्यों नहीं उनके महत्त्व को देखती हो ?

पार्वती : क्या खाक महत्व है उनका ? जब उन्हें पैदा करने वाले का ही महत्त्व नहीं है।

कैलाश : एक बात बताओ।

पार्वती : बोलो।

कैलाश : जब अक्ल बँट रही थी तो तुम कहाँ थीं ?

पार्वती : तुम्हारे आगे।

कैलाश : तब भी तुम्हें पता नहीं कि सदा से ही बच्चों के पीछे, माता-पिता की, घर के अन्दर और बाहर शोभा रही है।

पार्वती : पहले जमाने के लोगों की बात छोड़ो।

कैलाश : क्यों ?

पार्वती : क्योंकि वे सादे युग के थे। हम फैशन युग के हैं। वे काम करके जीवन बिताने पर विश्वास करते थे। हम आलस्य में डूब कर जीवन बिताने पर विश्वास करते हैं। वे जीवन की सच्चाई पर विश्वास करते थे। हम जीवन के दिखावेपन पर विश्वास करते हैं।

कैलाश : अब मान गया कि वास्तव में जब अक्ल बँट रही थी, तब तुम मेरे आगे नहीं तो मेरे पीछे अवश्य थी।

पार्वती : हाँ ! हाँ ! क्यों नहीं, कहाँ तो मेरी उपस्थिति ही नहीं मान रहे थे, अब अपने पीछे तो मानने लग गए। देखना वह समय भी दूर नहीं, जब तुम मुझे अपने से आगे मानने लगोगे। हर पुरुष, हर स्त्री को, अपने से आगे मानने लगेगा।

कैलाश : ख्वाबों की बातें मत करो। औरत कभी मर्द से आगे नहीं बढ़ सकती।

पार्वती : कैसे नहीं बढ़ सकती ? बढ़ी है और बढ़ेगी। अब लकीर के फकीरों के विचारों का जनाज़ा निकल चुका है।

कैलाश : (गरज कर) बड़ी बेशर्म हो तुम ! अपने देवता के विचारों का जनाजा ही निकलवा दिया तुमने तो।

पार्वती : बहुत जल्दी पहचाना तुमने अपने को। चलो पहचान तो लिया। रहा, देवता का प्रश्न। देवता है मन्दिरों में, कण-कण में। तुम हो जीवन-साथी। साथी का कर्त्तव्य है भटके साथी को समझाना।

कैलाश : और तुम मुझे समझा रही हो। क्यों ?

पार्वती : इसमें शक क्या है ?

कैलाश : मेरी माँ ने कभी मेरे पिताजी को समझाने का साहस नहीं किया था। भला तुम मुझे कैसे समझा सकती हो ?

पार्वती : मालूम है उनके गलत विचार अब आउट ऑफ डेट हो गए हैं।

कैलाश : अच्छा ! वे आउट ऑफ डेट हो गए हैं तो उनके विचार भी आउट ऑफ डेट हो गए हैं।

पार्वती : वे क्या, तुम स्वयं पूरी तरह आउट ऑफ डेट न होकर, विचारों से आउट ऑफ डेट हो ही गए हो।

कैलाश : ओफ ! वास्तव में तुम सचमुच पत्थर हो । तुमसे तो टकराते ही माथा फूटता है ।

पार्वती : तो टकराते क्यों हो ? मैंने प्रकट कर दिया है कि सड़े-गले विचारों की बदबू के बीच न जी कर आज के स्वस्थ विचारों की खुशबू के बीच जीओ ।

कैलाश : अच्छा तो मेरे पढ़ाने-लिखाने का फल यह निकला कि तुम मुझे ही उपदेश देने लगी हो ।

पार्वती : अपने को खुशकिस्मत समझो कि मैं तुम्हारी दृष्टि में उपदेश देने योग्य तो हो गई हूँ ।

कैलाश : वास्तव में तर रोटी ने तुम्हारे मस्तिष्क में फितूर पैदा कर दिये ! तुम तो अपने आप के घर में रूखी रोटी खाती रहतीं तो अच्छा था ।

पार्वती : (चीख कर) हाँ, हाँ, मैं तो वहाँ भूखी ही रहती थी । यहाँ मौज कर रही हूँ । दिन भर गहनों से लदी बैठी रहती हूँ । मेवे-मिष्ठान्न खाती रहती हूँ ।..................

कैलाश : (धीरे से) भगवान के लिये अब चुप भी हो जाओ । अड़ौसी-पड़ौसी खिड़कियों में से झाँकने लग गये हैं ।
(खिड़कियों पर खड़े लोग हँसने लगते हैं ।)

पार्वती : (धीरे से) झाँकने दो ।....तुम ड्रामा भी तो लिखते हो ?

कैलाश : हाँ, हाँ, क्यों नहीं !

पार्वती : तो कह दो कि मैं अपने लिखे ड्रामे का रिहर्सल कर रहा हूँ ।
(खिड़कियों पर खड़े लोग और जोर से हँसते हैं)

[पर्दा गिरता है]

लेखक

अमोलक चन्द जांगीड़,	रा. उ. मा. वि., बिसाऊ, झुंझुनू;
कुन्दनसिंह सजल,	रा. मा. वि. गुरारा, वाया खण्डेला, सीकर;
कुमारी रमा जैन,	
गणपतलाल शर्मा,	रा. उ. मा. वि. नावां, नागौर;
गोवर्धनलाल पुरोहित,	रा. उ. मा. वि. मांडल, भीलवाड़ा;
चन्द्रमोहन 'हिमकर',	रा. मा. वि., हरसौर, नागौर;
त्रिलोक गोयल,	अग्रवाल उ. मा. वि., अजमेर;
दीनदयाल गोयल	केन्द्रीय विद्यालय, अलवर;
देव प्रकाश कौशिक	रा. मा. वि., कोठियां, भीलवाड़ा;
नरेन्द्र चतुर्वेदी,	सोम भवन, मंगलपुरा, झालावाड़;
नाथूलाल चोरडिया,	रा. उ. मा. वि., वल्लभ नगर, उदयपुर
मण्डलदत्त व्यास,	रा. प्रा. वि., ब्रह्मपुरी वेदों का चौक, जोधपुर;
मोहन पुरोहित 'त्यागी',	रा. उ. प्रा. वि., उम्मेदपुरा, फलोदी, जोधपुर;
रमेश भारद्वाज	रा. उ. मा. वि., श्रीनगर, अजमेर;
राधामोहन जोशी,	रा. उ. मा. वि., सोजत सिटी, पाली;
रामस्वरूप शर्मा,	रा. उ. मा. वि., पचेरीबड़ी
श्रीमती कमला भार्गव	रा. मा. वि., शाहजहांपुरा, अलवर;
श्रीमती [illegible] गुप्ता,	श्रीराम विद्यालय, श्रीराम नगर, उद्योगपुरी, कोटा;
सत्यप्रभा गोस्वामी,	बीकानेर महिला मण्डल, मालानियों का चौक, बीकानेर;
सुरेन्द्र अंचल,	रा. उ. मा. वि., भीम, उदयपुर;
हेमप्रभा जोशी,	रा. प्रा. वि., जेल-वेल, बीकानेर।